समद मीर

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप मे राजा शुद्धोदन के दरबार का वह दृश्य जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ—रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, जिसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है । भारत में लेखन-कला का संभवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख ।

नागार्जुनकोण्डा : दूसरी सदी ईसवी

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्य के निर्माता

समद मीर

लेखक

मोतीलाल साक़ी

अनुवादक

शशि शेखर तोषखानी

साहित्य अकादेमी

Samad Mir : Hindi translation by Shashi Shekhar Toshkhani of Moti Lal Saqi's monograph in Kashmiri. Sahitya Akademi, New Delhi (1992), Rs. 15.

प्रथम संस्करण १९९२

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५ फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

विक्रय विभाग: 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा बिल्डिंग, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
१७२, मुम्बई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेठ, मद्रास ६०० ०१८
१०९, जे. सी. मार्ग, बंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पन्द्रह रुपये

ISBN 81-7201-297-7

लेज़रसैटिंग : मैरिट आर्ट्स, नयी दिल्ली ११० ०२८
मुद्रक : सुपर प्रिन्टर्स, दिल्ली - 51

क्रम

दो शब्द	७
जीवन-वृत्त	९
काव्य	२९
चयन	५९
संदर्भ-ग्रंथ सूची	८०

दो शब्द

समद मीर मेरे प्रिय कवि हैं। उनकी कविता की ओसभीगी छांह में मैं जवान हुआ हूँ। मीर के अमर गीतों में आत्मा का नृत्योल्लास और प्राप्ति का आनंद है। मेरा अपना विचार है कि सूफ़ी काव्य (जिसके अंतर्गत मैं लल्लेश्वरी के 'वाखों' और शेख़ नूरूद्दीन के 'श्लोकों' को भी रखता हूँ) हमारे साहित्य की सब से मूल्यवान और चिरस्थायी पूंजी है। इस पूंजी में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो बहुत श्रेष्ठ हैं। इसी पूंजी में से चुनने पर ऐसा बहुत कुछ मिलेगा जिसे हम विश्व साहित्य के समकक्ष रख सकते हैं।

यह विनिबंध साधारण पाठकों के लिये है। दार्शनिक सूक्ष्मताओं के विवेचन से मैं जहाँ तक हो सका है पीछे रहा हूँ। किंतु इस विनिबंध को पढ़कर साहित्यिक इतिहासकार अथवा आलोचक निराश न हों, इसलिये मैंने उनके लिये भी सोचने की सामग्री प्रस्तुत की है। अंत में मैं साहित्य अकादेमी के सचिव श्री इंद्रनाथ चौधरी और कश्मीरी परामर्श समिति के संयोजक जनाब गुलाम नबी गौहर को धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने मुझे यह विनिबंध लिखने का उत्तरदायित्व सौंपा और मेरे उस सपने को साकार किया जो मैंने बहुत समय पूर्व देखा था। मैं उन मित्रों का भी आभारी हूँ जिनकी पुस्तकों से मुझे यह विनिबंध लिखने में सहायता मिली। इस विनिबंध की विशिष्टता यह है कि इसमें मीर के जीवन के अपरिचित प्रसंगों के अतिरिक्त उनके काव्य के कुछ अप्रकाशित अंशों को भी पहली बार प्रकाश में लाया गया है। ये कविताएँ 'कुलयात-ए-समद मीर' (समद मीर रचनावली) के दो संस्करण प्रकाशित होने तक उपलब्ध नहीं थीं। इस विनिबंध को कश्मीरी में किसी भी कवि पर लिखा जाने वाला पहला विनिबंध होने के नाते एक मील का पत्थर माना जा सकता है।

माहनूर (कश्मीर),
१७ अप्रैल १९८६

मोतीलाल साक़ी

जीवन-वृत्त

कश्मीरोत्सव १९५६। चारों ओर चहल-पहल। कश्मीर का कश्मीर जैसे हर्ष और उल्लास से भर उठा था। हर कहीं गाने-बजाने, हँसने-खेलने का वातावरण था। 'भांड जश्न'[1] चल रहे थे, 'रोव'[2] गीतों की गूँज थी। जम्मू से भांगड़ा नर्तक बुलाये गये थे और लोग जगह-जगह पर इस पंजाबी लोक-नृत्य का आनंद ले रहे थे। उर्दू के बड़े-बड़े शायर भी आमंत्रित किये गये थे और नामी क़व्वाल भी।

इसी उत्सव के अंतर्गत 'शबे-शालीमार' का आयोजन हो रहा था। एक स्मरणीय संध्या थी यह। शालीमार उद्यान लोगों से भर आया था। चारों ओर जैसे रोशनी की चादर झलमला रही थी, ऐसा लगता था जैसे धरती पर स्वर्ग उतर आया हो। उद्यान की ऊपर वाली बारादरी पर मुशायरा होने जा रहा था। आमंत्रित शायरों के साथ-साथ बख़्शी साहब[3] भी वहाँ आ पहुँचे थे और बारादरी पर जाकर बैठ गये थे। आम तौर पर मुशायरों में बख़्शी साहब के आ जाने पर कार्रवाई शुरू कर दी जाती थी ताकि आयोजकों को उनके सामने अपनी हाज़िरी देने का अवसर मिले। लेकिन इस मुशायरे में बख़्शी साहब के आने के बाद भी कार्रवाई शुरू होने में अभी देर थी। शायद कोई विशेष अतिथि आने वाला था जिसके बारे में हम नौजवान कवियों को कोई जानकारी न थी। कोई पांच-दस मिनट बीते होंगे कि बुज़ुर्ग शायरों में फुसफुसाहट शुरू हुई, "आ गये !" वे एक-दूसरे से कह रहे थे, "लो, सीढ़ियों के पास पहुँच गये।" बख़्शी साहब आगंतुक व्यक्ति के स्वागत को उठे और उसे बाँह पकड़ कर सम्मानपूर्वक बारादरी पर बैठाया; फिर स्वयं भी उसके पास ही बैठ गये। बारादरी पर तशरीफ़ लाने वाला वह व्यक्ति कश्मीरी टोपी और फिरन[4] पहने हुए था। कंधे पर उसने एक चादर डाल रखी थी। यों आगंतुक में कोई ख़ास बात नज़र नहीं आ रही थी। दूर से देखने पर

---

१. कश्मीरी लोक-नाट्य प्रकार। २. एक कश्मीरी लोक-नृत्य।

३. जम्मू-कश्मीरी के तत्कालीन प्रधान मंत्री, बख़्शी गुलाम मुहम्मद।

४. कश्मीरीयों का विशेष परिधान।

उसकी शक्ल-सूरत एक किसान की-सी लगती थी। लेकिन महफ़िल में हर व्यक्ति का ध्यान उसी पर केंद्रित था। बख़्शी साहब उससे बातें करने में व्यस्त थे। श्रोतागण उसी समय जान गये थे कि आगंतुक कोई सम्मानित व्यक्ति है, जब बारादरी पर बैठे सभी लोग उसके स्वागत-सत्कार के लिये उठ खड़े हुए थे। आस-पास के तमाशबीन भी उसे एकटक देख रहे थे। मुशायरे में बुलाये गये शायरों में एक मैं भी था। मैंने नज़र उठा कर देखा तो पहचानने में कोई मुश्किल नहीं हुई। ये तो अपने समद मीर थे, कश्मीर के एक प्रतिष्ठित बुज़ुर्ग कवि जिनके गीत वर्षों से कश्मीर के वायुमंडल में गूँज रहे थे, और जिनकी ख्याति उत्तर से लेकर दक्षिणी कश्मीर तक हर कहीं फैल चुकी थी। यह उनका पहला मुशायरा था जिसमें उन्होंने जाने क्या सोचकर भाग लेना स्वीकार किया था – और आख़िरी भी। मैं तो उन्हें बचपन के दिनों से जानता था और कितनी ही बार देख भी चुका था। क्रमशेर गांव में मेरे ननिहाल में उनकी चर्चा प्रायः किसी-न-किसी बहाने हुआ करती थी। सभी कहते कि मीर साहब एक दरवेश हैं और साथ ही एक शायर भी; बड़े भले आदमी हैं। हम बच्चों से कहा जाता कि मीर साहब जहाँ भी दिखायी दें, उन्हें सादर प्रणाम करें, उनका आशीर्वाद लें क्योंकि बुज़ुर्गों के आशीर्वाद से ही मनुष्य को सुख-शांति मिलती है। ये सभी बातें मुझे पूरी-की-पूरी याद थीं और आज उन्हें फिर से सामने देखकर ये पुरानी यादें ताज़ा हो गयीं। मेरे ननिहाल के सामने ही घर था पंडित माधवराम का, जहाँ उनका काफ़ी आना-जाना था। माधवराम और समद मीर घनिष्ठ मित्र थे। दोनों अध्यात्म-मार्ग के राही थे। एक-दूसरे के सामने वे अपना दिल खोलकर रख देते और यों जी का बोझ हलका करते थे। कमरे में बैठकर वे घंटों आपस में बतियाते, और आँगन में खेल रहे हम बच्चे चुपके-चुपके जाकर झाँकते कि वे क्या कर रहे हैं। कभी-कभी उनकी मुलाक़ातें देर रात तक चलतीं। माधवराम की पत्नी तुलसीदेवी आतिथ्य में कोई कोर-कसर न उठा रखतीं। माधवराम के सिधारने के बाद भी मैंने समद मीर को कई बार तुलसीदेवी के यहाँ आते-जाते देखा था। तुलसीदेवी एक भली महिला थीं। मीर साहब की बेटी राहती का विवाह मेरे ननिहाल के पड़ोस में ही शेख़ परिवार में हुआ था। पड़ोसी तो क्या ये दोनों परिवार एक-दूसरे के काफ़ी निकट थे। मीर

साहब को मैंने शेख़ परिवार में भी कई बार देखा था। बारादरी पर समद मीर को देखकर ये सारे दृश्य मेरी आंखों के सामने घूम गये। लगा ये कोई ग़ैर नहीं, अपने ही बुजुर्ग हैं जिनका हम सदा से आदर-सम्मान करते आये हैं। मैंने गर्व महसूस किया और इतना प्रसन्न हुआ जैसे कोई अनमोल वस्तु मेरे हाथ लगी हो।

मुशायरे में समद मीर ने एक पुराना ही गीत सुनाया। यह वही गीत था जिसे लेकर कभी बड़ा हंगामा हुआ था, यहाँ तक कि लोग उन्हें 'हुक्मे-काफ़िर' सुनाने यानी काफ़िर घोषित करने पर उतर आये थे। ऐसा इसलिये कि इस गीत में मीर ने कहा था :

न वह ऊपर आकाश में है
न कहीं नीचे
किसे बताऊँ, उस तक तो विचार भी नहीं पहुँचता।

पर १९५६ की बात ही दूसरी थी। अब तक लोग उन्हें एक साधक के रूप में जान और मान चुके थे और उनके गीतों को सिर-आंखों लगा लेते थे। उस दिन जब उन्होंने यह गीत सुनाया तो लोग खुले दिल से दाद देने लगे। बख़्शी साहब उनकी ओर यों देखने लगे मानों उन्होंने कुछ अमूल्य पा लिया हो।

मुशायरे के बाद उन्हें जैसे-तैसे राज़ी करके रेडियो वाले रेडियो स्टेशन ले गये, जहाँ उनसे एक भेंट रिकॉर्ड की गयी जो अब भी वहाँ के पुराने टेपों में सुरक्षित है। इन दो कार्यक्रमों को छोड़कर उन्होंने कभी किसी सरकारी अथवा ग़ैर-सरकारी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया। अपने जीवनकाल में ही समद मीर को जो यश प्राप्त हुआ उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि वे बड़े भाग्यशाली थे। एक कवि के रूप में ही नहीं अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों के कारण भी उन्होंने काफ़ी नाम अर्जित किया। पर इस नाम का उन्होंने कभी व्यापार किया हो, ऐसी बात नहीं। उन्होंने न कभी अपनी कविता को बेचा और न साधना को। जीवन की रोज़मर्रा की भागदौड़ में हिस्सा लेते हुए भी वे अपने रास्ते पर चलते रहे। कश्मीर में लोकतंत्र की स्थापना के बाद भी वे काफ़ी वर्षों तक जीवित रहे, किंतु कभी किसी के पास हाथ फैलाने नहीं गये, न अपने आत्म-सम्मान को कोई आँच आने दी। किसी सुविधा की

किसी सुविधा की प्राप्ति या किसी फ़ायदे के लोभ से उन्होंने कभी किसी का द्वार नहीं खटखटाया। हमेशा एक मस्त-मौला क़लंदर का जीवन बिताया। वे चाहते तो इन सब चीज़ों को पा लेना उनके लिये कोई बड़ी बात न थी। उनके पास नाम था और आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी। ढोल पीटने वालों की भी कोई कमी न थी। पर अपने आत्म-विश्वास के बल पर वे हर भंवरजाल से बच निकले। जीवन के घटाटोप अंधेरे में उन्होंने हर मोड़ पर अपने संकल्प की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा। उनकी एक अलग ही दुनिया थी जिसे वे सजाते-संवारते रहे, कभी किसी पर बोझ बनना स्वीकार नहीं किया। कश्मीर में तब प्रगतिवाद का ज़ोर था। प्रगतिशील कवि एक नये जीवन का स्वप्न दिखलाते हुए जनजागरण का ध्वज लिये निकल पड़े थे। अपने इरादों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये वे कभी इसका द्वार खटखटाते तो कभी उसका। कभी एक गुट का साथ देते तो कभी दूसरे का – स्वयं को महानता से मंडित करने के लिये। अपने आप को प्रकाश में लाने के लिये एक-दूसरे से मार-पीट भी करते थे। लेकिन इस सब हंगामें से अलग मीर आध्यात्मिक संगीत सुनते रहे, शून्य में से सृष्टि के उद्भव की परिकलपनाएँ करते हुए। समद मीर और अहद ज़रगर जैसे कवियों की महानता इस बात में थी कि इस बीसवीं शताब्दी में भी अपने ज्ञान की डुगडुगी उन्होंने नहीं पीटी। वे महानता के पीछे नहीं दौड़े, महानता ही उनके पीछे चली आयी और उनके पाँव चूमने को विवश हुई। अपने समय के सत्ताधीशों के साथ समझौता उन्होंने नहीं किया, अपने ही हाल में मग्न रहकर अपने मस्तमौलापन को, फ़क़ीरी ठाठ को बनाये रखा। उन्होंने अपनी आँखों के अंदर एक ज्योति को प्रज्ज्वलित रखा और अंतरतम की खिड़कियों को खोलकर जीवन-पथ को प्रकाश से भर दिया। कल्चरल अकादेमी[५] की स्थापना होते-होते मीर चल बसे, किंतु अहद ज़रगर ने जो कुछ किया उसे हमारे साहित्य के इतिहास में हमेशा याद रखा जायेगा; यह ज़ोर देकर कहा जायेगा कि उन्होंने सरकारी सम्मानों की कभी परवाह न की। सत्ताधीशों को भ्रम में रखने के लिये वे छिपकर बैठे ताकि उन्हें कोई किसी प्रकार का

---

५. जम्मू-कश्मीर राज्य की सांस्कृतिक अकादेमी।

(राजकीय) सम्मान या पुरस्कार स्वीकार करने के लिये बाध्य न करे। सूफी कवियों के बारे में कहा जा सकता है कि वे सुनिश्चित नैतिक सिद्धांतों का पालन करते थे। आध्यात्मिता से सरोकार रखने के कारण वे इस दुनिया और उसके पचड़ों के मोहजाल में नहीं पड़ते थे। दुनिया को सुधारने के लिये वे किसी दूसरे का सहारा लेने के बजाय स्वयं अपने हाथों-पैरों पर आश्रित रहते। सच कहा जाये तो ऋषियों[६] के बाद ये सूफ़ी ही थे जिन्होंने हमारी समन्वित संस्कृति के ध्वज को उड़ाया। जो लोग सांसारिक लाभों के पीछे भागने वाले थे उन्होंने इन लाभों के लिये अपनी मातृभाषा तक को ठोकर मारी, किंतु सूफ़ी कवि कश्मीरी भाषा की सेवा करते रहे, उसकी झोली को अनमोल रत्नों से भरते रहे। कश्मीरियों के पढ़े-लिखे वर्ग ने हमेशा उधर की ओर रुख किया जिधर की हवा बह रही हो, लेकिन सूफ़ियों-संतों-दरवेशों ने संस्कृति के चिराग़ों को जलाये रखा। भाईचारे की हमारी शताब्दियों से चली आयी परंपरा हो अथवा हमारे उठने-बैठने, खाने-पीने का ढंग—उन्होंने उसे बनाये रखा। इस चिरस्थायी और ज्योतिर्मय परंपरा के एक महान ध्वजवाहक थे समद मीर। जनसाधारण से उन्होंने अपने आपको कभी अलग नहीं रखा। वे उन्हीं के बीच उठते-बैठते रहे, कभी यह विचार मन में नहीं लाया कि वे सामान्य लोगों से कुछ ऊपर या अलग हैं। आम लोगों के बीच रहने के कारण उनकी अवलोकन शक्ति और प्रखर हुई। इस शक्ति के माध्यम से उन्होंने कश्मीरी भाषा को इतना समृद्ध किया कि कोई दूसरा उनकी समानता नहीं कर सकता।

समद मीर का जन्म नरवरा में अलक साहब नाम के स्थान पर १८९३ में हुआ था। उनके पिता, जिनका नाम ख़ालिक मीर था, मूलतः नंबलहार गांव (बडगाम) के रहने वाले थे। ज़मीन-जायदाद उनके पास कुछ ज़्यादा न थी, बस गुज़ारा भर हो जाता था। परिवार को पालने के लिये वे आरीकशी का काम भी करते थे, और मेहनत-मजदूरी भी। उनमें एक और विशेषता थी – श्रम का भार बढ़ जाने पर वे थकान मिटाने के लिये कभी-कभी गुनगुना लिया करते थे। उन्होंने बहुत से गीतों की रचना की थी, पर इन गीतों का बहुत बड़ा भाग आज लुप्त हो चुका है। ख़ालिक मीर के एक सुप्रसिद्ध गीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

---

६. शेख़ नूरुद्दीन द्वारा स्थापित कश्मीर का मुसलमान 'ऋषि' सम्प्रदाय।

अछ़ पोशो जिगर गोशो
अछ पोशो लो लो...

अर्थात्–

मेरे हृदय में समाने वाले
ओ कार्तिक पुष्प
देख तो यह ख़ालिक[७] तेरे ही पास आया है
सफ़ेद हो चुकी है उसकी दाढ़ी अब तो
उसकी तू लाज रख
दुहाई है तुझे
तेरी शरण में आया हूँ मैं
ओ कार्तिक पुष्प !

ख़ालिक मीर का कविता करने का अंदाज़ अच्छा था, मगर थे वे निपट अनपढ़। किसी से कुछ लिख-लिखाकर भी रखा नहीं, क्योंकि नाम की कोई लालसा उन्हें नहीं थी। मस्तमौला आदमी थे। दिन में मेहनत-मज़दूरी करते और रात को ख़ुदा की याद। कविता तो वे बस मन के भावों को व्यक्त करने के लिये करते थे। उनकी कितनी ही कविताएँ उनके शिष्यों को ज़बानी याद थीं। पर जब वे इस दुनिया से सिधारे तो जो बचा रह गया वह आटे में नमक के बराबर भी न था।

ख़ालिक मीर का पहला विवाह नंबलहार गाँव में हुआ था। थोड़ा-बहुत कुछ जोड़-जाड़ कर वे गुज़ारा कर लेते थे। अपने इस हाल पर वे खुश थे, पर तभी उनके सुखी जीवन में एक दरार पड़ी। उनकी पत्नी देखते-देखते इस दुनिया को छोड़ गयी। हालांकि उन्होंने गुरु भी धारण किया था, मगर यह सदमा उनके लिये काफ़ी भारी साबित हुआ। वे इसे बर्दाश्त न कर सके और घर-बार छोड़-छाड़ कर चले गये। कुछ समय तक वे निरुद्देश्य भटकते रहे। न उनका कोई पता था, न ठिकाना। एक ठौर से उठकर दूसरे ठौर के लिये चल देते और इस तरह समय के सुनसान पथ को पार करते रहे। कुछ ख़ुदा-दोस्त बुज़ुर्गों के साहचर्य में उन्होंने अपने-आपको थोड़ा-बहुत संभाला

---

७. ख़ालिक का शब्दार्थ है सृष्टिकर्ता।

ज़रूर, पर नंबलहार गांव जाने का नाम न लिया। वे श्रीनगर चले गये और वहाँ जाकर आरीकशी का काम करने लगे। वहीं पर वे दिन-दिन गुज़ारने लगे। घर में ज़मीन-जायदाद के नाम पर जो कुछ था उसे चचेरे भाइयों ने हड़प लिया। कुछ समय के लिये ख़ालिक मीर ने नरवरा में अलक साहब नामक स्थान को ठिकाना बना लिया और यहीं पर दूसरी शादी कर डाली। बहुत समय तक नंबलहार गाँव लौटने का विचार उन्होंने मन में न लाया। पहली बीवी के मरने से उन्हें शायद इतना गहरा सदमा पहुँचा था कि वहाँ जाने के नाम से उनकी टांगें काँपने लगती थीं। दूसरी बीवी से ख़ालिक मीर के तीन पुत्र हुए – समद मीर, रहीम मीर और मुहम्मद मीर। हैसियत इतनी न थी कि बच्चों को पढ़ाते-लिखाते। सो जब से बच्चों ने होश संभाला, वे काम की तलाश में चल पड़े – और वही आरीकशी का पैतृक धंधा सबने अपनाया। जिससे जितना बन पड़ता वह उतना काम करता। ज़िम्मेदारी का यह बोझ उन पर उस समय और भी बढ़ गया जब वृद्ध ख़ालिक मीर के मन में अपने पैतृक स्थान का मोह उमड़ा। ऐसा नहीं कि उन्हें पैतृक संपत्ति की तलाश थी, उन्हें तलाश थी एक ऐसे स्थान की जहाँ वे एकांत में बैठकर अपने को पहचानते। वे उठकर चल दिये और नंबलहार गाँव से कुछ फासले पर एक जलाशय के किनारे चिनारों के झुरमुट के बीच पर्णकुटी बनाकर यादे खुदा करने लगे। इस स्थान का नाम था 'अगर' जहाँ ख़ालिक मीर कई वर्षों तक रहकर खुदा की ख़िदमत करते रहे। वे यहीं रह रहे थे जब उन्हें ऊपर का बुलावा आया और अपनी उस पर्णकुटी के पास ही उन्हें दफ़नाया गया। आज भी उनकी कब्र उस स्थान पर अच्छी हालत में मौजूद है।

सयाने होने पर समद मीर काफ़ी समय तक नरवरा में ही रहे। पिता ने ग्यारह की उम्र में ही उनकी शादी चचेरी बहन से कर दी थी। कंधों पर ज़िम्मेदारी और घर-गृहस्थी का बोझ आ पड़ने के कारण उन्हें बहुत दिनों तक नंबलहार के बारे में सोचने का मौका ही न मिला। मेहनत-मज़दूरी करके वे अपने दिन बिताने लगे। कभी कोई छोटा-मोटा बोझा ढो लेते, तो कभी बढ़इयों-राजगीरों के साथ निकल कर उनके सहायक मज़दूर का काम करते। सोलह-सत्रह के होते-होते उन्होंने आरीकशी का काम भी शुरू कर दिया था, जो उनका पुश्तैनी धंधा था। पर दुनियादारी के चक्कर में पड़कर भी वे कभी

अपने कर्तव्य को न भूले। पिता गाँव लौटे तो वे भी उनकी खोज-ख़बर लेने नंबलहार आते-जाते रहे।

शहर (श्रीनगर) में उन्हें आरीकशी का काम साल के साल मिलता हो, ऐसी बात नहीं थी। कंधे पर आरी उठाये वे एक जगह से दूसरी जगह के लिये निकल पड़ते और जहाँ भी काम मिलता वहीं पर अपनी चार आने-पैसे की कमाई कर लेते। आरीकशी के काम के सिलसिले में वे हंदवाड़ा भी गये जहाँ वे कुछ वयोवृद्ध पंडितों के संपर्क में आये। उन्हीं के माध्यम से मीर पहली बार 'शास्त्र' (हिन्दू धार्मिक और दार्शनिक विचारों) से परिचित हुए। ज्ञान की इस पूंजी में उस समय और भी वृद्धि हुई जब कमशेर के पंडित माधवराम से उनकी मित्रता हुई। वह मित्रता तब तक बनी रही जब तक पंडित माधवराम जीवित रहे। उनकी मृत्यु के बाद भी समद मीर का उनके परिवार वालों से स्नेह-संबंध बना रहा।

सूफ़ी साधना की चिनगारी उनके मन में पिता के साहचर्य में पड़ी थी यह ऐसी चीज़ थी जो उनके रक्त में विद्यमान थी। चिनगारी धीरे-धीरे सुलगती रही और तेज़ होती रही और जब उन्हें नंबलहार में उस्ताद हबीब का पता चला तो इसने एक लौ का रूप धारण कर लिया। उस्ताद हबीब नंबलहार के साथ वाले गाँव वागुर के रहने वाले थे। आध्यात्म के क्षेत्र में वे बहुत-सी मंज़िलें पार कर चुके थे। समद मीर ने जाकर उनके चरणों में अपना सिर रख दिया। उनका दामन थाम कर वे उनके शिष्य बन गये। चिनगारी अब लपट का रूप धारण करने लगी थी। अब तो नंबलहार जाना उनके लिये और भी ज़रूरी हो गया। पिता और गुरु दोनों वहीं पर थे। और उन्हें दोनों का मान रखना था, दोनों की ही आज्ञाओं का पालन करना था। धीरे-धीरे अपने पैतृक स्थान के प्रति उनका मोह बढ़ने लगा और वे नंबलहार जाकर वहीं बस जाने को मजबूर हुए। इसमें पिता और अपने गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा का काफ़ी हाथ था। अपनी प्रारंभिक कविताओं में उन्होंने इसी कारण अपने लिये समद नरवरी उपनाम का प्रयोग किया है :

ओ समद नरवरी, सचेत हो जा तू !

इससे उनकी प्रारंभिक कविताओं को सुविधापूर्वक पहचाना जा सकता है। नंबलहार में आकर बस जाने के बाद उन्होंने जो काव्य रचा, उसमें भी

वे अपने स्थान का परिचय देना नहीं भूले :

समद मीर को तो देखो, कैसे रूठकर नंबलहार में जा बैठा है

ख़ैर, इस अवांतर प्रसंग को रहने दें। उस्ताद हबीब उन्हें बराबर मंज़िल तक पहुँचा नहीं पाये। उनका समय आ पहुँचा था और वे प्रस्थान कर गये। लेकिन जाने से पहले समद मीर से कह गये कि मेरे बाद दांदखाह (बटमालू) के उस्ताद ख़ालिक तुम्हारा मार्गदर्शन करेंगे।

क्रमशेर के अहमद बट समद मीर के गुरु भाई थे। उन्होंने कुछेक गीतों की भी रचना की है। अभी उन्होंने कोई दस-बारह गीत ही रचे थे कि गुरु ने और गीत रचने से मना कर दिया। उस्ताद हबीब के गुज़रने पर अहमद बट ने समद मीर से कहा कि वे उनका मार्गदर्शन करेंगे, पर मीर गुरु का कहा कैसे टालते ? अहमद बट साहब के कई गीत प्रकाशित भी हुए हैं। उनकी गद्दी, जिसकी स्थापना उन्होंने अपनी पुश्तैनी भूमि पर की थी, आज भी क्रमशेर में विद्यमान है, और वहाँ पीरी-मुरीदी का सिलसिला (गुरु-शिष्य परंपरा) यथावत् चल रहा है। इस समय गद्दी पर अहमद बट का नाती आसीन है।

समद मीर के पहले दोनों गुरु, उस्ताद हबीब और उस्ताद ख़ालिक, क़ादिर साहब 'कंहन' के शिष्य थे। क़ादिर साहब कश्मीरी भाषा के अच्छे कवि थे। वे रहमान डार के शिष्य थे जिनकी सुप्रसिद्ध कृति 'शबरंग' आदमी को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती है। कविता समद मीर को एक तरह से पैतृक और आध्यात्मिक उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। उनके बाद भी यह सिलसिला चलता रहा। समद मीर के पुत्र 'आसी' भी कवि थे और उनके बड़े बेटे गुलाम रसूल का पुत्र भी कविता करता है। मीर ने स्वयं भी यह बात कही है :

मीर कोई कच्चा नहीं निकला
पीढ़ियों मदिरा का पान कराता आया है

मज़दूरी करने के बाद समद मीर दिन भर की कमाई मुरशिद (गुरु) के आगे रख देते थे। अक्सर वे उस्ताद ख़ालिक के साथ ही काम पर निकलते और ख़ालिक उनके कमाये पैसों में से उन्हें जो कुछ भी उठाकर दे देते, उसी पर वे अपना और अपनी पत्नी का निर्वाह करते। उस्ताद के साथ ही

वे गुपकार में महाराजा के महल में जाते और बढ़ई के सहायक मज़दूर के रूप में काम करते। यहीं पर उन्होंने अपने पहले गीत की रचना की थी जो बाद में काफ़ी प्रसिद्ध हुआ। मेरे बचपन के दिनों में यह गीत बहुत ही लोकप्रिय था :

> सखि यह कठिन काम
> मेरे लिये तो भारी बोझ बन गया
> क्या करूँ, निभाना ही पड़ा
> गुले लाला जैसे मेरे तन का रंग
> काला पड़ गया
> क्या करूँ, निभाना ही पड़ा

इस गीत में आंतरिक लय का श्रुतिमधुर और मार्मिक संगीत है जो सीधे हृदय में उतर जाता है। इसमें समद मीर के प्रारंभिक जीवन की एक झलक भी साफ़ मिलती है। इसमें कुछ खो देने की तीव्र अनुभूति है। कठिन काम के बोझ के भाव को मीर ने गहराई और मार्मिकता से व्यक्त किया है। पढ़ने वाले को लगता है कि कवि की अनुभूति में वह भी भाग ले रहा है। वास्तविकता की यह कलात्मक अभिव्यक्ति मीर के काव्य को एक अलग ही पहचान प्रदान करती है। मीर की आयु उस समय यही कोई पच्चीस-छब्बीस की रही होगी जब वे शहर को छोड़कर वापस अपने पिता के गाँव में रहने के लिये चले गये थे। चचेरे भाइयों ने मीर की जिस पैतृक संपत्ति को हड़प लिया था उसे वापस करना उन्हें काफ़ी मुश्किल हो रहा था, क्योंकि वे तो उसे मन ही मन अपनी ही समझ बैठे थे। हालाँकि इस सारी संपत्ति का मूल्य उन दिनों कुछ सौ रुपये से अधिक नहीं रहा होगा, पर हाथ में आयी चीज़ को कौन जाने देता है। मीर को काफ़ी संघर्ष करना पड़ा और लिहाज़-मुलाहिज़े को एक तरफ़ रखना पड़ा, तब भी अपनी पैतृक संपत्ति का एक भाग ही वे वापस पा सके। यहीं उन्होंने अपना ठिकाना बनाया और वर्षों से उजड़े मकान को फिर से संभाला। एक-एक चीज़ के लिये उन्हें नये सिरे से जुगाड़ करना पड़ा। घर में पानी भरने को फूटा घड़ा भी न था, और चीज़ों की बात ही नहीं। लेकिन मीर ने हिम्मत नहीं हारी। सच्चे पुरुष की तरह सारा ध्यान उन्होंने अपने अस्त-व्यस्त घर को व्यवस्थित करने में

लगाया, जिसे देखकर लोग हैरान रह गये। धीरे-धीरे, बड़े धैर्य से उन्होंने एक नये ही घर का निर्माण कर डाला। सच कहा जाये तो उन्होंने उसे हंसते-हंसते संभाला, न किसी के आगे हाथ फैलाया, न किसी का एहसान लिया, न सगे-संबंधियों का सहारा ही। रातों का आराम छोड़ वे साधना पथ पर बढ़ते रहे। सुबह से शाम तक खटकर वे घर-रूपी पहिये को एक जफ़ाकश मज़दूर की तरह ठेलते रहे। आखिर उन्हें अपने परिश्रम का फल मिला और कुछ ही वर्षों में गाँव के साग-भात खाने वाले लोगों में उनकी गिनती की जाने लगी।

मीर की ज़िंदगी का एक दिलचस्प पहलू यह था कि वे एक व्यावहारिक व्यक्ति थे। लोक और परलोक दोनों को उन्होंने एक साथ सुधारने का प्रयत्न किया। न परलोक के लिये उन्होंने इस लोक को त्यागा और न इस लोक के लिये परलोक की उपेक्षा की। वे दुनिया से भागे नहीं, न उन्होंने इस दुनिया को पा लेने और भोगने को ही जीवन का उद्देश्य माना। अतिवाद छोड़ वे बीच के रास्ते पर चलते रहे, हालांकि जिस हालत में वे नंबलहार गाँव लौटे थे उसे देखते हुए उनके लिये संसार को त्याग कर एकांतवास करना ही ज़्यादा आसान और सुविधाजनक होता। मीर के जीवन के ये कुछ पहलू ऐसे हैं जो जानने योग्य और ध्यान देने योग्य हैं। इनसे यह बात भी साफ़ होती है कि वृद्धावस्था में पैर रखने पर भी, जब उनका नाम चारों ओर फैल चुका था, मीर ने व्यावहारिक जीवन से मुँह नहीं मोड़ा, बल्कि अभ्यास के अनुसार अपने दैनिक कर्तव्यों को निभाते रहे। उनके आध्यात्मिक जीवन और गार्हस्थिक जीवन के बीच ज़रा भी विरोध नहीं था। पलायन की बात कभी मन में न लाकर वे व्यावहारिक जीवन के क्षेत्र में डटे रहे। इससे उनके जीवन में एक सामंजस्य, एक खरापन और एक संतुलन आ गया। अपने अंतिम दिनों तक वे घर में सब लोगों के सो जाने के बाद चौकसी करने को निकलते कि सब ठीक-ठाक है या नहीं। उठते वे आधी रात को थे। पर इस तरह से कि किसी को कानोंकान ख़बर न होती, और फिर घर के बाहर चले जाते और घंटों बाहर ही रहते। यह बात उनकी पत्नी को मालूम तो थी, पर इस रहस्य पर उन्होंने अपने जीते-जी कभी प्रकाश न डाला। वे कहाँ जाते, क्या करते थे, इसका उनके घर के लोगों को पता ही

न चलता, बाहर के लोगों की फिर बात ही क्या थी। पौ फटने के समय जब वे लौटते तो थोड़ा खाँसते-खखारते ताकि बाकी लोग समझ जायें कि अब जागने का समय हो गया है। घर लौटने के बाद वे फिर से जाकर लेट जाते। देखने वाले यही सोचते कि अरे मीर साहब तो देर तक सोते हैं। मीर को इस बात का अहसास था कि अपने लिये दूसरों को कष्ट देना ठीक नहीं, और इस बात का भी कि साधना का अर्थ दिखावा करना नहीं। साधना का अर्थ तो बिना किसी को कष्ट दिये एकांत में ईश्वर के नाम का स्मरण है। इसी सिद्धांत को उन्होंने जीवन भर अपनाये रखा।

खाने-पीने के मामले में वे बहुत ही नियम-कायदे से चलते थे। नज़ाकत और नखरा उन्हें छू भी नहीं गया था। वे जीने के लिये खाना खाते थे, खाना खाने के लिये जीते नहीं थे। नींद से उठने पर वे दो प्याले कहवा पी लेते और इसके कुछ देर बाद कोई आधा प्याला कश्मीरी नमकीन चाय। चाय के साथ आम तौर पर वे चावल या मक्की का सत्तू लेते थे, चाय के साथ रोटी लेने की उन्हें कोई ख़ास आदत न थी। दोपहर के समय वे चावल लेते, मगर इतने थोड़े से कि कोई बच्चा भी उससे ज़्यादा खा ले। माँस के वे कोई ज़्यादा शौकीन न थे, यही बोटी-दो बोटी खा लेते और फिर घिन हो जाती। हाँ, साग-सब्ज़ी उन्हें बड़ी पसंद थी। करेले और तोरई की तरकारी तो उन्हें विशेष रूप से प्रिय थी। इन तरकारियों के साथ खाना खाने में उन्हें बड़ा स्वाद आता। असल में नफ़्स यानी पेट को उन्होंने नियम में रखा था। पेट के वश में होने के बजाय पेट को ही वश में कर लिया था। नफ़्स रूपी मस्त हाथी को बाँध कर रखने के कारण वे हमेशा अपने जामे में रहे, किसी से कुछ माँगने को मजबूर न हुए। यही वजह थी कि वे अक्सर दावतों वगैरह में नहीं जाया करते थे। एक ऋषि की तरह उन्होंने अपने आपको रूखा-सूखा खाने का अभ्यस्त कर लिया था। अगर कभी वे किसी दावत पर जाते भी तो उसी सूरत में जब वे किसी जल्दी में होते या कोई बहुत मजबूर करता। दिखावे में रुचि न होने के कारण वे कभी दल-बल सहित किसी के घर नहीं जाते, न खाते समय किसी खास चीज़ की माँग करते। जो मिलता उसे ही सहर्ष-स्वीकार कर लेते। दावत पर कहीं जाने के बाद वे प्रायः घर ही लौटते, या फिर मौसम ठीक हुआ तो रात घर से

बाहर किसी मैदान में या बेद वृक्षों के किसी कुँज में बिताते। किसी के घर पर रात बिताना या न बिताना उनके लिये एक जैसी बात थी। जो व्यक्ति रात के दो पहरों में से डेढ़ पहर घर से बाहर जाग कर बिताता हो, उसके लिये इस बात का कोई महत्त्व न था। खाने-पीने की बात चल रही है तो यह बताना भी प्रासंगिक ही होगा कि वे अलग ही खाते-पीते और अलग ही सोया करते थे। शोर-शराबे में उनकी कोई दिलचस्पी न थी, न फिज़ूल की बातों के लिये समय। वे जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग करने के पक्ष में थे। वे स्वयं तो नियमनिष्ठ थे ही, दूसरों से भी नियमनिष्ठ होने की अपेक्षा करते। सभा में सैकड़ों लोग क्यों न बैठे हों, क्या मजाल कोई आवाज़ भी निकालता ! अगर वे आराम कर रहे होते तो किस में साहस था कि उन्हें जगाता – चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो। कोई यदि दिनों तक उन्हें लगातार अपना दुखड़ा सुनाता रहता तो वे बड़ी विनम्रता से उससे कहते, " 'भाई' जाओ और अपना काम करो। ख़ुदा ख़ैर करेगा।" सुनने वाले को इस बात से ही इतना ढाढस मिलता कि वह उनसे विदा लेकर हँसते हुए अपने घर चला जाता। मीर की बात में बला का असर था। बोलते तो ऐसा लगता जैसे सुगंध बिखेर रहे हों। श्रोता उनकी गहन-गंभीर बातों से इतना प्रभावित होता कि सोचने लग पड़ता। ऊंची-ऊंची बातें होने के बावजूद सुनने वाला और अधिक सुनने की इच्छा से कान खोले खड़ा रहता ताकि उसके मन का बोझ कुछ हल्का हो। ईर्ष्या और द्वेष उनके पास फटक भी न पाये थे। अगर वे रास्ते से गुज़र रहे होते तो कोई नहीं जान पाता कि यह सुप्रसिद्ध सूफ़ी और शायर समद मीर जा रहे हैं। आत्म-प्रदर्शन के उद्देश्य से उन्होंने अपनी चाल-ढाल में कभी कोई अंतर नहीं आने दिया। हाँ, नज़र रखने वालों की बात और है, वे तो लाखों में भी उन्हें पहचान लेते। समद मीर की आँखों में एक निराली गंभीरता थी और मुख पर एक अद्‌भुत कांति। और ये चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें पहचानने के लिए आँखें चाहिए।

मीर सड़क पर चल रहे होते तो दायें-बायें देखे बिना तीतर की तरह नपे-तुले पग रखते हुए सीधे निकल जाते, मानों किसी अभियान पर जा रहे हों। वास्तव में वे समय का मूल्य पहचानते थे और उसे नष्ट करना नहीं

चाहते थे। फिज़ूलखर्ची को उन्होंने कभी जाना ही नहीं। अपनी जीवन-यात्रा में उन्होंने जिन कठिनाइयों और कष्टों का सामना किया उनकी वजह से उन्होंने हर चीज़ की कद्र करना सीख लिया था। उन्होंने यह जान लिया था कि जीवन-संघर्ष में सफलता पाने और आगे बढ़ने का अगर कोई रास्ता है तो वह है परिश्रम और समय के सदुपयोग का रास्ता। दूसरों के आगे हाथ फैलाकर या छल-कपट करके जीवन के दिन बिताने से उन्हें नफ़रत थी। तभी तो उन्होंने कहा है :

पराश्रित मत रह
स्वयं उपजा, स्वयं पैदा कर
विश्वास को दृढ़ रख
और इसके लिए कुछ देना पड़े तो दे
यह मत भूल
मिताई तब है कि जब पलड़े बराबर हों
देख, मेरा दिल दिव्य बुलावा सुन चला आया।

अथवा

सुनो, बात इतनी-सी है
कि दुख को विदा किया हर्ष ने
बड़े परिश्रम के बाद ही पहुँच पाया मैं वहाँ—
सुनो, बात इतनी-सी है।

शिष्यों अथवा बच्चों को वे हमेशा यही समझाया करते कि बेकार मत बैठो, कुछ न कुछ करते रहो। बेकार बैठने वाले से ख़ुदा कभी खुश नहीं रहता और काम करते रहने से अवश्य लाभ होता है। परिश्रम का फल देने वाला स्वयं परमेश्वर है। साधना की विभिन्न अवस्थाओं को पार कर ज्ञान को प्राप्त करने वाले मीर व्यावहारिक जीवन में भी वैसे ही सावधान सतर्क रहते जैसे सीमा पर चौकसी करता हुआ कोई सिपाही। अकर्मण्यता को उन्होंने पूरी तरह से त्याग दिया था। गाय-बैल पालने में उनकी बड़ी रुचि थी। इसीलिये शायद उनका स्वभाव भी इतना स्नेहपूर्ण था। जीवन के अंतिम दिनों तक वे बीस-तीस गायों और जोड़ी-भर बैलों को बराबर पालते रहे। यह जहाँ उनकी व्यस्तता का एक हेतु था वहाँ आय का एक साधन भी। हालांकि उनके

बच्चे समझदार और जवान हो गये थे, मगर वे उन पर सारा बोझ नहीं डालना चाहते थे। वे पशुओं की स्वयं ही देखभाल करने के अभ्यस्त हो गये थे। रात को जब वे ईश्वर का स्मरण करने के लिये उठते, तभी गोशाला में भी जाकर मवेशियों को थपथपाते-सहलाते और देख आते कि कहीं कोई ऐसी गाय तो नहीं जिसने घास न खायी हो या किसी गाय को कोई कष्ट तो नहीं, और तदनुसार उपाय भी करते। जाड़ों की रातों में, जब लोग घरों के भीतर ही रहते है, मीर कहीं बाहर जाकर घूम आते। हर साल वे दो-चार कंबल भी बुन लेते। वृद्धावस्था में भी, जब वे अधिक परिश्रम करने के योग्य नहीं रह गये थे, वे मुट्ठी में गाचिनी मिट्टी भर कर उंगलियों से उसे मसलते रहते, और अगर गाचिनी उपलब्ध न हो तो मिट्टी या फिर राख को ही मलते। इस अभ्यास को उन्होंने लगातार बीस वर्षों तक जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप उनके अंगूठे और बीच की उंगली का मांस घिस गया था। गाचिनी या मिट्टी को मसलने के पीछे क्या रहस्य था, यह ज्ञात नहीं, किंतु इतना स्पष्ट है कि यह भी उनकी साधना का ही एक अंग था। उन्हें किसी विशेष नशीली वस्तु की लत नहीं थी जैसी कि आम तौर पर ढोंगी फ़क़ीरों को हुआ करती है। चरस को तो उन्होंने कभी हाथ भी न लगाया। हाँ, तंबाकू वे ज़रूर पीते थे। पर ऐसा भी नहीं कि हुक्का हरदम हाथ में लिये बैठे रहें। बस दो-चार कश लगाते और हुक्के को एक तरफ़ रख देते।

समद मीर के पास बैठने पर अफ़लातून की यह उक्ति याद आ जाती कि बिना मतलब शब्दों का प्रयोग करना रुग्ण आत्मा का लक्षण है। इस बात को उन्होंने व्यावहारिक रूप से देखा-परखा था। इसीलिये वे धीरे-धीरे, सोच-समझ कर और ज़रूरत के वक़्त ही बोलते। फ़िज़ूल की बातों पर वे न तो कोई ध्यान देते न स्वयं ऐसी कोई बात करते।

जवानी के दिनों में वे खूब जमकर खेती-बाड़ी करते थे; किसी को अपने से आगे निकलने न देते। उनके लिये काम ही पूजा था, इसलिये वे परिश्रम से कभी पीछे न हटे। बढ़ई की सहायता करने वाले मज़दूर का काम करने तक से वे कभी हिचकिचाये नहीं। और जब इस तरह की मज़दूरी से पूरा नहीं पड़ा तो उन्होंने आरीकशी का काम शुरू किया। कमरतोड़ मेहनत करते हुए उन्होंने ज़िंदगी गुज़ारी, कभी आराम से नहीं बैठे।

किताबी शिक्षा उन्होंने प्राप्त नहीं की थी, 'अलफ़-बे'[८] तक से वे अनजान थे। किंतु दिन-प्रतिदिन के जीवन ने उन्हें इतना कुछ सिखा दिया था कि लोग आश्चर्य में पड़ जाते। उनके सामने अगर कोई व्यक्ति कोई मसनवी, मौलाना रूमी की कोई कृति, पंदनामा अत्तार, गुलिस्तान अथवा बोस्तान पढ़ता तो वे तुरंत उनमें आये पद्यों की ऐसी व्याख्या करते कि सभी बारीकियाँ उभरकर सामने आ जातीं और पढ़ने वाला अपने अज्ञान के बोध से गर्दन झुका लेता। अगर कोई क़ुरान शरीफ़ का पाठ कर रहा होता और उससे क़िरआत (उच्चारण) में कोई भूल हो जाती तो वे उसे तत्काल टोकते और कहते: "अरे भाई, ठीक से तो पढ़ो। क़िरआत में तुमने ग़लती की है। इल्हामी किताब पढ़ते वक्त एहतियात से काम लेना चाहिये। कलामे अल्लाह पढ़ने में किसी जानकार से हिदायत लेना ज़रूरी है।"

किसी की बात को काटना या किसी से डांट-डपट करना उन्हें भाता न था। वे स्वयं शिष्ट थे और हरेक से शिष्टतापूर्वक व्यवहार करने का आग्रह करते थे। "किसी से भी ऊँचे स्वर में बोलना उचित नहीं। नम्रता से पत्थर भी मोम बन जाता है।" किसी से अगर उन्हें कुछ कहना होता तो बड़ी विनम्रता और शिष्टता से उसे समझाते। बुरा कहना और बुरा चाहना, यह उनके स्वभाव में न था। किसी की बढ़ती देखकर उनका दिल खिल उठता। उनका कहना था कि ईर्ष्या करने वाले की खुद ही दृष्टि संकुचित हो जाती है। ईर्ष्या, घृणा, मात्सर्य सबको उन्होंने परे कर दिया था। यही कारण है कि उन्हें मानने वालों में हर धर्म और मत के लोग थे। हिंदू हों या मुसलमान, सभी उनसे प्यार करते थे, उनके प्रति श्रद्धा रखते थे। कितने ही हिंदुओं के उनके और उनके घर के लोगों के साथ पारिवारिक संबंध थे, आना-जाना था। क्मशेर में रहने वाले हिंदू तो उनके घर को अपना ही घर समझते थे। किसी भी चीज़ की ज़रूरत आ पड़ने पर वे दौड़कर उनके पास चले जाते– और कभी निराश नहीं लौटते। सच तो यह है कि सूफ़ी-संतों की महफ़िलें भाईचारे की महफ़िलें हुआ करती थीं। 'ऋषियों'[९] के बाद सूफ़ी ही ऐसे थे जिन्होंने हमारी संस्कृति को समृद्ध किया है। आजकल मंच पर चढ़कर जिन बातों का खूब ढिंढोरा पीटा जाता है उन्हें हमारे बुज़ुर्ग व्यावहारिक रूप दे

८. अक्षरज्ञान। ९. कश्मीर के मुसलमान 'ऋषि' सम्प्रदाय से तात्पर्य है।

चुके थे। सत्ताधीशों और राजनीतिज्ञों ने तो हमारी समन्वित संस्कृति को भारी क्षति पहुँचायी है। अपना स्वार्थ साधने के लिये ये लोग बातों को उलट-पुलट और लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करते आये है। 'ऋषियों' और सूफ़ियों का आंदोलन मूल रूप से मानव-मैत्री के सार्वभौम मूल्यों से संबंधित आंदोलन रहा है, जबकि राजनीति कभी एक धुरी पर स्थिर नहीं रही है। समद मीर एक व्यक्ति ही नहीं, एक संस्था थे जिन्होंने अपने व्यवहार और अपने काव्य द्वारा मानववादी मूल्यों को बढ़ावा दिया है। ये मूल्य उन्हें दाय में प्राप्त हुए थे। अतः उनके काव्य को एक ऐसा संगम कहा जा सकता है जिसमें अनेक नदियों का जल मिलकर एकाकार हो जाता है और एक लहराते-गरजते समुद्र का रूप ग्रहण कर लेता है।

मीर अच्छा गाना सुनने के शौक़ीन थे, लेकिन उन्हें सूफ़ियाना कलाम ही ज़्यादा पसंद था। अगर गाना उन्हें पसंद आ जाता तो वे महफ़िल में रुक जाते और तन्मय होकर सुनने लगते, अन्यथा वे चुपचाप महफ़िल से उठ जाते और अपने काम पर चल देते। शम्स फ़क़ीर[10] का काव्य उन्हें बहुत अच्छा लगता था। शायद इसलिये कि उसमें प्राप्ति की कामना ही नहीं, तृप्ति का आनंद भी छलकता नज़र आता है। "वे तो पहुंचे हुए थे," मीर कहा करते "पर मुझे अभी कई मंज़िलें तय करनी है।" स्वरचित गीतों का गायन भी वे सुना करते, पर अगर गायक से ज़रा भी भूल हुई तो उनकी भवें तन जातीं। समझने वाले समझ जाते कि गाने वाले से ज़रूर कहीं कोई त्रुटि हुई है।

नफ़ासत और सफ़ाई को वे बहुत पसंद करते थे। जहाँ बैठते वहाँ घास के एक तिनके का होना भी उन्हें अखरता था। मैल की बात क्या, कपड़े में अगर एक सिलवट भी हो तो उन्हें बुरा लगता। कपड़े वे सीधे-साधे ही पहनते; अलबत्ता कुछ मंहगे किस्म के – ख़ासकर वृद्धावस्था में। फिरन उनकी वेशभूषा का एक अभिन्न अंग था जिसे पहनना उन्होंने कभी छोड़ा नहीं। वे कोट और वास्कट भी पहना करते, ओर जाड़ों में कश्मीरी ऊनी लबादा। सलवार भी उन्हें पसंद थी। सफ़ेद कपड़े पहनना उन्हें अच्छा लगता था।

---

१०. १९वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध कश्मीरी सूफ़ी कवि।

जवानी के दिनों में वे पैरों में कश्मीरी जूती पहन लेते, बुढ़ापे में गुरगाबी।[११] युवावस्था में फिरन के ऊपर एक सफ़ेद चादर ओढ़ लेते, और हैसियत के कुछ ठीक होने पर कंधों पर रफ़ल[१२] का एक शाल भी रखते।

मीर मझोले क़द के थे। दाढ़ी में ख़त लगाते और गुच्छे जैसी थोड़ी-सी मूंछे रखते थे। सूत, दो-सूत बाल रखते, पर अक्सर सिर घुटा लेते। चेहरा उनका लंबा था और आंखों में जैसे कोई चुंबक था।

उनकी दृष्टि मनुष्य को जैसे बांध लेती थी। माथा चौड़ा था और ठुड्डी लंबी। जीवन के अंतिम वर्षों में उनके माथे पर बल पड़ गये थे और चेहरे की झुर्रियों ने उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बना दिया था। देखने में वे साधारण आदमियों से अलग एक दार्शनिक जैसे लगते थे। उनकी खुमार से भरी लाल आँखों को देखकर लगता था कि उनकी गहराइयों में अनेक रहस्य छिपे हैं। उनकी ओर देखते ही प्रतीत होता था कि वे पहुँचे हुए हैं।

आख़िरी उम्र में जाने किस कारण से समद मीर को एक और गुरु धारण करना पड़ा और इसके लिये उन्होंने रमज़ान बट का दामन थामा। रमज़ान बट अन्यूडरा गाँव के रहने वाले थे और उस्ताद हबीब और उस्ताद ख़ालिक की ही तरह सूफ़ियों के कुब्रवी संप्रदाय से संबंध रखते थे। समद मीर अंतिम दिनों तक रमज़ान बट के शिष्यत्व में रहे।

उनके मित्रों में माधवराम के अलावा मुहीउद्दीन बट भी शामिल थे। मुहीउद्दीन बट नंबलहार गाँव के मुकदम थे, लेकिन मीर के मित्र और मानने वाले थे माधवराम की मृत्यु के बाद मीर सलाह-मशविरे के लिये अक्सर मुहीउद्दीन बट के पास ही जाते। कहने का आशय यह है कि ये दोनों जीवन भर एक-दूसरे को अपने राज़ बताते रहे। दोनों अशिक्षित थे लेकिन समझदारी उनमें ऐसी थी कि बड़े-बड़े उनसे सम्मति लेने आते। अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले मीर ने मुहीउद्दीन को बताया कि वे उनके मरने के बाद आठ वर्षों तक जीवित रहेंगे। और हुआ भी ऐसा ही, मीर की मृत्यु के आठ वर्ष बाद ही मुहीउद्दीन पर ख़ुदा की रहमत हुई। आजकल के लोग शायद इस पर यक़ीन नहीं करेंगे, लेकिन यह बात बिल्कुल सच है और इसके अनेक प्रत्यक्षदर्शी आज भी मौजूद है।

---

११. तस्मों के बग़ैर एक प्रकार का खुला जूता।

१२. एक विशेष प्रकार का ऊनी कपड़ा जो शाल बनाने के काम आता है।

मीर शहर (श्रीनगर) कम ही जाया करते, पर जब जाते तो सफ़ाकदल के रहीम ऋषि या अमीराकदल के अहद (अहमद) सूफ़ी के यहाँ ही ठहरते। इन दोनों व्यक्तियों से उनके बड़े प्रगाढ़ संबंध थे। पर इसका मतलब यह नहीं कि इन दो के अलावा श्रीनगर में उनका और कोई मानने वाला ही न था। सच तो यह है कि उनको मानने वालों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनकी गिनती करना मुश्किल था। श्रीनगर ही नहीं उसके सब उपनगरों में भी उनको चाहने वाले बहुतेरे थे जो उनके श्रीनगर आते ही उनके पास हाज़िर हो जाते थे। अनुयायियों का मंडल इतना विस्तृत होने के बावजूद मीर को कभी ज़रा भी अहंकार नहीं हुआ। जो भी अनुयायी उनके पास आता, पात्रता के अनुसार अपनी झोली भर लेता।

समद मीर के बहुत सारे शिष्य थे जिनमें कई आज भी जीवित हैं। इनमें से अहमद बेग, ग़ुलाम नबी कावडारी, ग़ुल जान, रमज़ान जू, अहमद बंगरू, हाजी अहमद सूफ़ी, अली मुहम्मद सूफ़ी और अब्दुल रहीम वानी उनके काफ़ी निकट थे। अहमद बेग उनके दामाद थे, जो कविता भी करते थे। शिष्यों में उनके अपने पुत्र 'आसी' इब्न समद मीर भी शामिल थे। 'आसी' एक अच्छे कवि थे किंतु उनकी असमय में ही मृत्यु हो गयी। समद मीर के दो बेटे थे और एक बेटी। बेटी की शादी उन्होंने कमशेर में की थी। उनके बड़े बेटे ग़ुलाम रसूल एक पटवारी हैं और उनके पुत्र शकील अहमद भी कविता करते हैं।

स्वयं अशिक्षित होने पर भी मीर शिक्षा के महत्त्व को जानते थे। अपने बच्चों को उन्होंने अपने-अपने भाग्य के अनुसार शिक्षा दिलाने की व्यवस्था भी की थी – उतनी शिक्षा जिससे वे अपना निर्वाह करने के योग्य बन सकें। छोटे बेटे ग़ुलाम मीर 'आसी' परिवहन विभाग में एक क्लर्क थे। पर चूंकि मीर की ज़्यादा खर्चा बर्दाश्त करने की हैसियत न थी, अतः अपने किसी पुत्र को वे कॉलेज न भेज सके। उन दिनों बच्चों को मैट्रिक तक पढ़ाना भी बड़ी बात समझी जाती थी।

९ जनवरी १९५६ को सुबह के चार बजे समद मीर हाथ का सिरहाना बनाये ख़ुदा को प्यारे हो गये। मन से तो वे मृत्यु के लिये पहले ही तैयार थे। उन्होंने कहा भी तो है :

सन् चौदह में भाग्य से मेरे जन्म की घड़ी थी
और मैं अकेला ही दुनिया में चला आया

अब तो मैंने जाने की तैयारी शुरू कर दी है
वहाँ जहाँ मेरा मायका है।

समद मीर ने स्वयं ही यह वसीयत कर ली थी कि उन्हें 'अगर' नाम के गाँव में पिता के पास ही दफ़नाया जाए। 'अगर' श्रीनगर-रायथन मार्ग के पंद्रहवें मील पर चिनारों का एक झुरमुट है। यह स्थान बड़ा ही रम्य है। चिनारों के इस झुरमुट के बीच एक जलाशय के किनारे उनकी कब्र है जिसके समीप ही एक झोपड़ी खड़ी है। कब्र पर जो पत्थर लगा है उस पर मीर की मृत्यु की तिथि अंकित है। मज़ार के अहाते के चारों ओर कंटीले तार का बाड़ा लगा है।

मीर के मज़ार को अब एक बाग़ की तरह सजाया गया है। उन्होंने स्वयं ही तो कहा था :

तुम्हारे नयन अगर श्रवणमय हो जायें
तो हर रात तुम्हारे लिये मुक्ति की रात होगी
मगर ऐ साहिब होश (सचेत साधक)
तुम्हें होंठों को सी लेना पड़ेगा

मज़ार पर हर वर्ष शरद ऋतु में गंडार होता है, गरमियों में मेला लगता है। मेले के अवसर पर मुशायरा होता है और गाने-बजाने की महफ़िलें भी लगती हैं। इनमें शामिल होने के लिये आस-पास के गाँवों के लोगों के अलावा समद मीर के अनुयायी और उनके शिष्य भी उमड़ पड़ते हैं। वे सब के सब जिन्हें उनका बुलावा आया हो वहाँ एकत्रित हो जाते हैं :

अरे ओ खुशक़िस्मत सुन, मेरा आह्वान सुन
मैं कहता रहा, पर तूने कभी ध्यान नहीं दिया

और जिन लोगों ने उनका आह्वान सुना, उनके बारे में स्वयं मीर का कहना है :

कान से सुनने वाले हाथ मलने लग जाते हैं
मैं कहता रहा, पर तूने भी कभी ध्यान नहीं दिया

समद मीर की मृत्यु से कश्मीरी भाषा को भारी क्षति पहुंची और कश्मीर की समन्वित संस्कृति का एक प्रकाशस्तंभ बुझ गया। उन जैसा कवि किसी भी भाषा में बार-बार जन्म नहीं लेता।

काव्य

जिये कैसे वह जिसका तुमने होश छीन लिया हो
मुझसे तो तुम दूर चले गये हो
अब कौन है जो समद मीर को यहाँ पहचाने
जलाकर राख कर दिया है मुझे तो
क्या करूँ इसमें मेरा ही दोष है

समद मीर के इस गीतांश में खाली दावा नहीं, एक सच्चाई है। ऐसी सच्चाई जो काव्य-सत्य को तो अपने अंक में भरती ही है, साथ ही उन लोगों की बेमुरव्वती की ओर भी इशारा करती है जो कश्मीरी भाषा के दर्दमंद होने का दम भरते हैं। छब्बीस वर्ष हो गये हैं अब उनकी मृत्यु को, पर इन छब्बीस वर्षों में क्या उन पर छः लेख भी छपे हैं ? ले-देकर एक कलचरल अकादेमी[१३] ने उनका संपूर्ण कृतित्व प्रकाशित किया है, अन्यथा आज उनका काव्य भी हमें उपलब्ध न होता। समद मीर ही क्या कशमीरी के सभी सूफ़ी कवियों के साथ जिन्होंने तूफ़ानी हवाओं में कश्मीरी भाषा का चिराग़ जलाये रखा और हमारे मनोमस्तिष्क में अपने सतरंगे अनुभवों के फूल बिखेर दिये, ऐसा ही हुआ है। किसी ने अगर कुछ लिखा भी तो दो-चार शब्दों में उसे निबटा दिया, जिससे गुणों और अवगुणों के विवेचन में कोई सहायता न मिल सकी।

समद मीर सूफ़ी भी थे और कवि भी – कोई ऐसे-वैसे कवि नहीं एक परिपूर्ण और परिपक्व कवि जिनकी कल्पना चेतना की सीमाओं को पार करती हुई अरूप को शब्दों में रूपायित कर लेती थी। यह तय करना कठिन है कि वे अधिक महान कवि थे या अधिक महान सूफ़ी। अक्सर ये दोनों पक्ष उनके व्यक्तित्व में संतुलित नज़र आते हैं। पर हाँ, कभी-कभी कवि समद मीर का पलड़ा भारी हो जाता है और तब पायल की तरह रुनझुन करते गीत जन्म लेते हैं जिनके सामने परियों का संगीत भी फीका पड़ जाता है :

---

१३. जम्मू-कश्मीर राज्य कल्चरल अकादेमी।

मेरे प्यार के चोर ने रिस के मारे
मुझे भुला दिया
अभी तो वह पास था मेरे
एक हौल-सा उठकर मेरे दिल को चूर-चूर कर गया
अभी तो वह पास था मेरे
यौवनमाते उस प्रिय को मैंने अपनी बाँहों में दुलराया-झुलाया
पूछूँगी उससे अब कहाँ गया वह मुझे छोड़ कर
अभी तो पास था मेरे

कैसे जिये वह आग ने जिसकी वसा तक जला डाली हो ?
उसने कभी मेरी ख़बर भी न ली
औरों के पास गया दीवाना, मुझे दाँव पर लगाकर
उसने कभी मेरी ख़बर भी न ली
तुमने जो टेढ़ी नज़र से देखा तो मैं दर्द से तड़प उठी
टपका रही हूँ मैं दिल का खून प्यार में डूबी आँखों से
उसने कभी मेरी ख़बर भी न ली

मीर की कविता की एक विशेषता यह है कि हालांकि उसमें आध्यात्मिक अनुभव की अभिव्यक्ति हुई है, लेकिन प्रेम-गीतों के जो रसिक हैं वे भी उनका आनंद लेते हैं। कवि का स्वर उन्हें अपने ही हृदय का स्वर लगता है। उनकी कविता कभी एकरसता से ग्रस्त नहीं हुई। पहली दृष्टि में जो गीत एक प्रेम-गीत लगता है थोड़ा आगे चलकर वही ऐसा मोड़ लेता है कि पूरा गीत किसी विशिष्ट अनुभूति की अभिव्यक्ति प्रतीत होने लग पड़ता है। एक ऐसी सतरंगी अनुभूति की जो पाठक अथवा श्रोता को मदहोशी के आलम में पहुँचा देती है :

फ़ना[१४] की शंका छोड़ तू देख बक़ा[१५] क्या होती है
उससे भी आगे तुझे दिखायी देगा वह शहंशाह
मैंने और उसने कुछ एक-जैसी बातें कीं
अभी तो वह पास था मेरे !

---

१४. मृत्यु   १५. अमरता

इस गीत की प्रथम पंक्ति एक लौकिक प्रेमी के दूर चले जाने का आभास देती है, पर मीर ने गीत को अंत मे ऐसा मोड़ दिया है कि वह जो एक लौकिक अनुभव है एक रहस्यानुभव में बदल गया है। यह अनुभव लौकिक धरातल से ऊपर उठकर आकाश में उड़ान भरता है। हम जिस पद्यांश की चर्चा कर रहे हैं उसमें तृप्ति का आनंद छलकता है। कवि तलाश की मंज़िल को पार कर तृप्ति की अवस्था में पहुँच गया है। द्वैत के सारे परदे छिन्न-विच्छिन्न हो गये हैं और अब दोनों एक हो गये हैं। सूफ़ी समद मीर वही दर्शाते हैं जो वह चरम सत्ता विभिन्न रूप धारण करके दर्शाती है। उनकी विशेषता इस बात में है कि रहस्यानुभव को उन्होंने काव्य के साँचे में इस तरह से ढाला है कि थोड़े-से शब्दों में एक लंबी यात्रा का वर्णन हो गया है और काव्यात्मकता को ज़रा भी क्षति नहीं पहुँची है। आदि से अंत तक सारा गीत कण-कण में सुगंध बिखेरता फूलों के एक गुच्छ जैसा है।

चीनी कवि ची काङ् ने लिखा है :

आकाश में उड़ते हँसों को
घर की ओर जाते देख
मेरी भी दृष्टि
उनके पीछे-पीछे जाने लगती है

अगर हम समद मीर की कविता का अच्छी तरह से अवलोकन करें तो पायेंगे कि उनकी भी दृष्टि सारी उम्र एक अकेले सत्य की तलाश करती रही है और अंततः उस तक पहुँच भी गयी है। यह अकेला सत्य समद मीर के सामने रूप बदल-बदल कर आता रहा है। अंत में उन्हें यह बोध हुआ कि इस परम सत्य को देखने से अधिक चीन्हना, घेरना, गरेबाँ से पकड़ लेना होता है। तभी तो उन्हें कहना पड़ा :

अंदर की दुनिया को पाने के लिये
अपने आपको मिटा दे
अपने आपको जान—
मर कर फिर कौन तुझे मारेगा ?
यदि जानता है तू रहस्य की बातों को तो ध्यान रख
अपने आपको जान—
मर कर फिर कौन तुझे मारेगा ?

जिसने अपने आपको पहचान लिया, जिसने अपने आपकी वास्तविकता को जान लिया, उसे फिर मरने का डर कहाँ रहता है। जन्म और मरण का उसके लिये कोई अर्थ नहीं रह जाता। यह वह अवस्था है जिसके बारे में लल्लेश्वरी कहती हैं :

एक तपस्विनी के रूप में मैं संसार में आयी
बोध के प्रकाश में मैंने सहज को पा लिया
अब मेरे लिये समान है जीवन भी और मरण भी
न मुझे किसी का शोक होगा, न किसी को मेरा शोक
मैं मरूँ तो अच्छा, जियूँ तो वह भी अच्छा !

सच तो यह है कि आत्मज्ञान हो जाने पर मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। मृत्यु के भय का अंत कैसे होता है इसकी ओर संकेत करते हुए समद मीर प्रश्न करते हैं :

जो अपने आपको भूल गया हो
जान ले वही मर गया है
उससे फिर हमारा क्या लेना-देना ?
किसी ने तुझे बताया नहीं ?

काव्यात्मक उत्कृष्टता और बारीकियों को बरकरार रखते हुए इस पद्यांश में थोड़े-से शब्दों में एक बड़ी-सी बात कही गयी है, जिसकी व्याख्या में बहुत समय लग सकता है। "किसी ने तुझे बताया नहीं ?" – गीत की यह टेक विशेष रूप से ध्यातव्य है जिसने वास्तविकता के बोध और पहचान की अनुभूति को और भी तीव्र बना दिया है। साथ ही यह सवाल भी उठाया गया है कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो जिज्ञासुओं को इस सत्य का बोध करा सकता हो। बात कहने के बाद इस तरह सवाल पूछने के अंदाज़ ने इस पद्यांश को एक नया मोड़, एक नया आयाम प्रदान किया है। समद मीर की कला की यही तो विशेषता है कि वह पाठक अथवा श्रोता के मन में एक तड़प जगा देती है जिससे उसके रोम-रोम में उथल-पुथल और बेचैनी पैदा होती है, और वह चिंतन की सीमा को लाँघ कर बोध के लक्ष्य की ओर बढ़ता है। शर्त यही है कि उसमें इसकी पात्रता हो। इस प्रकार के प्रश्न और भी कई स्थानों पर किये गये हैं। गहराई में पैठने वाले के लिये

तो प्रश्न ही उत्तर बन जाता है :

वाणी जहाँ से आयी है
वहाँ का रास्ता कौन जानता है ?
बताओ तो इसके माने क्या हैं ?
वहाँ पहुँचने पर मैं भी संशय में पड़ गया
बताओ तो इसके माने क्या हैं ?

यहाँ एक ऐसी सच्चाई की ओर संकेत किया गया है जिसका उल्लेख पवित्र ग्रंथों में भी मिलता है। उदाहरण के लिये, बाइबल का कथन है :

"सब से पहले था शब्द, और शब्द ईश्वर के पास था, और शब्द ही ईश्वर था।"

उपनिषदों में भी कहा गया है :

"वाग्वै परम ब्रह्म !"

वास्तव में वाणी ज्ञान की पहली सीढ़ी है। वाणी न होती तो हम एक-दूसरे के अनुभवों का लाभ नहीं उठा सकते, न हममें उसे जानने की पात्रता अथवा क्षमता आती। वाणी न होती तो मनुष्य को पशु जाति में ही गिना जाता।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र के अनुसार कला में रस का होना आवश्यक है— वह चाहे काव्यकला हो अथवा संगीत, मूर्ति शिल्प हो अथवा चित्रकला। सब में जो पहला रस है वह है आध्यात्मिक उन्मेष, एक आंतरिक भाव अथवा अनुभव जो संपूर्ण कृति में व्याप्त होता है, जिसे हम अनुभव तो कर सकते हैं, पर देख नहीं सकते। कृति के बाह्य रूपाकार से रस का कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं। वह तो कलाकृति में पैठने से निष्पन्न होता है। वह एक मानसिक आनंद की अनुभूति भी है और उसकी अभिव्यंजना भी। इस आनंद को तभी जाना जा सकता है जब मनुष्य का मानसिक स्तर उसके अनुरूप हो।

इस आंतरिक आनंद अथवा रस को किसी कलाकृति में बाहर से नहीं भरा जा सकता। यह तो गहरे अध्ययन अथवा गहन अनुभव से उत्पन्न होता है। रस की यह संपदा हरेक के भाग में आती हो, ऐसी बात नहीं। लल द्यद की ही भाँति समद मीर की कविता भी इस आंतरिक अथवा आत्मिक रस से परिपूर्ण है और यह रस काव्य-बोध की प्रक्रिया में निहित है :

उस अदृश्य की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी
वह क्या था जो उसने मुझसे कहा ?
उसका अर्थ मैं कभी समझा और कभी
समझ ही न पाया
वह क्या था जो उसने मुझसे कहा ?
ऐसा लगा जैसे हरे पत्तों पर दर्द की चिनगारी पड़ी हो
पर करनी का फल क्या चुक जायेगा ?
जीवन और मरण ने मुझसे चौसर की बाज़ी जीत ली
वह क्या था जो उसने मुझसे कहा ?

सात-सात स्थानों पर निशान लगा कर भी
मैं अपने जन्मस्थल को फिर-फिर भूल गया
जिस रहस्य को समद मीर ने अपनी आँखों से देखा
उसे बतलाना बहुत ही मुश्किल है।

चिंता मत कर
वह न कहीं ऊपर है न नीचे
उसने तो पूरी शान से
मन के अंदर डेरा डाल रखा है
और रहस्य की बात सुन :
वह और मैं उसी तरह एक है
जैसे माँस और नाखून
अहं को मिटा कर ही तू
मनुष्य की प्रकृति को प्राप्त कर सकेगा

कान से मैंने बात सुनी
और प्राण में उसे उतार कर रखा
किससे कहूँ मैंने अपना दिन और रात गंवा दिया
सात दरवाज़े बंद कर मैंने उसे भीतर ही भीतर छिपा लिया

किससे कहूँ मैंने अपना दिन और रात गंवा दिया
उस अरूप ने मुझे कैसे-कैसे रूप दिखाये
ऐ समद मीर, इन जलवों की थाह ले
वहाँ तो बुद्धि की पहुँच ही नहीं है

अनेकरूपता में एकता को पाने के इस आह्वान का वहदत-उल-वजूद अथवा अद्वैत-वेदांत नाम पड़ा। ये दोनों दार्शनिक निकाय विश्व के बारे में एक ही दृष्टिकोण के दो रूप हैं। सृष्टि और जीव संबंधी अंतर्ज्ञानवादी परिकल्पना का ये आधार हैं। दोनों चिंतन-धाराओं के अनुसार सृष्टि का मूल उद्‌गम है सत्य। यही सत्य विश्व के रूप में प्रकट हुआ है। जो अनेकरूपता हमारी आँखों के सामने क्रीड़ायमान है, वह इसी सत्य का विभिन्न रूपों में प्रकाशन है। इन रूपों को देखकर समद मीर का हृदय आनंद विभोर हो उठता है और वे कह उठते हैं :

शून्य ही धरती और आकाश है
शून्य ही भाग्य-फलक है, (और भाग्य लिपि लिखने वाली)
कलम-दवात है
वह शून्य है तो मैं किसको नमन करूँ ?
जब से मैंने शून्य की वास्तविकता को जान लिया
तभी से मैं यह कहता आ रहा हूँ

इससे पूर्व लल्लेश्वरी ने अव्यक्त को शून्य का परिधान पहनाते हुए कहा था :

हम अविराम आते रहे हैं और अविराम ही जाते भी रहे हैं
रात हो या दिन हमें बस चलते ही रहना है
जहाँ से आये थे हमें वहीं चले जाना है
(शून्य से शून्य तक हमारी यह यात्रा है)
पर सब अगर कुछ नहीं है, कुछ नहीं है, कुछ नहीं है
तो यह "कुछ" कहाँ से आया ?

अथवा

गुरु से मैंने हज़ार बार पूछा
वह जो अनाम है उसका क्या नाम है ?

पूछते-पूछते मैं थक-हार गयी
"कुछ नहीं" में से "कुछ" उत्पन्न हुआ तो कैसे ?

लल द्यद ने बात को सांकेतिक रूप से कहा है, पर समद मीर ने तो उसे विस्तार से कह डाला है और शून्य में से सृष्टि की, "कुछ नहीं" में से "कुछ" के उत्पन्न होने की बात कहकर 'अनलहक' की प्रकार लगायी है जिसके लिये मंसूर को सूली पर चढ़ाया गया थाः "मैं शून्य में हूँ और शून्य मुझ में !" 'अनलहक' की व्याख्या करते हुए प्रो० निकलसन मौलाना रूमी के अपने अंग्रेज़ी अनुवाद के छठे भाग में लिखते हैं :

"मौलाना जलालुद्दीन रूमी के अनुसार 'अनलहक' अहं की चरमावस्था है। जिस तरह से मधुमक्खी शहद में अपने पंख हिला-डुला नहीं सकती, उसी तरह से भाव की दशा में कोई सूफ़ी साधक यह नहीं कह सकता कि "मैं बंदा हूँ" क्योंकि उसमें द्वैत की भावना निहित है– खुदा अलग है और बंदा अलग। यह अहंकार की अवस्था है – ईश्वर के अस्तित्व के आगे अपने अलग अस्तित्व की घोषणा।"

समद मीर की भाँति भक्त कबीर ने 'अनहलक' नहीं कहा, किंतु उनके इस पद में इसी तथ्य को कहा गया है :

निरगुण आगे सरगुण नाचे
बाजे सोहंग तूरा

छांदोग्य उपनिषद् के एक सूत्र में इसी बात को यों प्रकट किया गया हैः "यह सारी अनेकरूपता नामों और शब्दों की माया है।"

हज़रत मुहीउद्दीन-इब्न-अरबी का दृष्टिकोण, जो 'हमअ-ओस्त' के दर्शन के नाम से सूफ़ी जगत में लोकप्रिय हुआ, इस धारणा से बहुत अधिक भिन्न नहीं है। ये एक ही तस्वीर के दो रूप हैं, एक ही सत्य की दो व्याख्याएँ। अरूप के विभिन्न रूपों को देखकर समद मीर आनंदित हो उठते थे और अपनी सुध-बुध भूल जाते थे। वे सोचते थे कि रूपों की इस अनेकता में मैं उसे किस रूप में पुकारूँ, किस रूप में उसका स्मरण करूँ, वर्णन करूँ, पहचानूँ ! स्वच्छ काल के शब्दों में "ये सब एक ही शृंखला की कड़ियाँ हैं।" किसी एक रूप को पकड़ने का अर्थ था भटकना – और इस बारे में समद मीर काफ़ी सतर्क थे। उनकी अवलोकन शक्ति प्रखर थी, हर चीज़ को वे अपने दिल में अंकित कर लेते थे। अवलोकन के निचोड़ का जब रचनात्मक

आवेग से मेल होता था तो कुछ इस प्रकार के गीत जन्म लेते थे :

शुद्ध चंदन का भी अगर 'अरखल'[१६] का-सा हाल कर दिया जाये तो
ये गुत्थियाँ कभी नहीं सुलझेंगी
वह कौन-सा बुद्धिमान होगा
जो खेलने के लिये माणिक-मोतियों का इस्तेमाल करेगा ?
गीदड़ शिकार करने निकलेगा
तो सभी ताक में रहेंगे
लेकिन शेर के सामने सब चुप ही रहते हैं
बाज़ अगर छोटी-सी चिड़िया को समझाये
तो इसमें कौन-सी शर्म की बात है ?
ये गुत्थियाँ कभी सुलझेंगी नहीं

रंगमहल के छज्जे पर मेरी जगह है
शून्य जिसका आँगन है
न उसकी कोई नींव है न छत
जहाँ से मुझे बुलावा आ रहा है

ओ री आकाश में उड़ने वाली टिटहरी !
तेरी तो कहीं छाया भी नहीं दिखायी देती
अब तो नीचे की ओर उतर आ
तेरी तो वहाँ जगह नहीं है ओ हारवातिज ![१७]
रंगचिरैया सिर्फ़ उड़ने की लालसा को ही जानती है
अंधा क्या जाने क्या प्रकाश है, क्या छाया ?
कौए के गले में बहुमूल्य माला पहनाना क्या उचित है ?
ओरी तेरे झुमके झूम रहे हैं !

समद मीर के संवेदनशील मन को कोई-कोई दृश्य इतना आकर्षित करता था कि वे उसे अपने हृदय में संजो कर रचना में रूपायित करते थे — वह मिट्टी के बर्तन

---

१६. एक पेड़ जिसे छूने से फफोले पड़ जाते हैं।
१७. मैना के आकार-प्रकार का एक पक्षी विशेष।

बनाता कुम्हार हो या चिड़ियों की चहचहाहट। देखे हुए दृश्य को काव्य का रूप देते हुए वे उसे ऐसे शब्दों में सज्जित करते जो उसके लिये विशेष रूप से उपयुक्त हों। एक कलाकार के कौशल का इसी से पता चलता है कि वह अपने अवलोकन को कहाँ तक अपनी रचना-प्रक्रिया का अंग बनाता है। समद मीर जब पक्षियों का वर्णन करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे उन्होंने सारा जीवन पक्षियों के बीच बिताया हो। उनकी कविता में अनेक प्रकार के पक्षियों का वर्णन आया है, जिससे पता चलता है कि प्रकृति के साहचर्य में रहकर उसके रूप कैसे उनके मन में समा गये थे। पक्षियों से उन्हें कुछ ज़्यादा ही प्रेम रहा है। उनका कलरव सुनने में उन्हें बड़ा सुख मिलता था। समद मीर के पक्षी-प्रेम पर मुझे एक बात याद आती है। एक बार जापान में ज़ेन मत को मानने वालों की एक सभा हुई जिसमें इस मत के बहुत से अनुयायियों ने भाग लिया। एक वक्ता महोदय अपना व्याख्यान देने के लिये उठे ही थे कि कहीं से एक मैना उड़ती हुई आयी और आकर खिड़की पर बैठ गयी और चहचहाने लगी। वक्ता महोदय व्याख्यान न देकर मैना की चहचहाहट को सुनने में लग गये। चहचहाने के बाद जब मैना उड़कर चली गयी तो वक्ता महोदय ने कार्यक्रम के ख़त्म होने की घोषणा की। चहचहाहट सुनकर वे स्तब्ध रह गये थे। समद मीर ने भी पक्षियों का गायन सुना है और उनका आनंद लिया है। किंतु समद मीर की विशेषता इस बात में है कि उन्होंने पक्षियों के पंख फड़फड़ाने, उड़ने, गाने-चहचहाने की आवाज़ को अपनी कविता की लड़ी में पिरो दिया है ताकि वे लोग जिन्होंने उन पक्षियों का गाना न सुना हो, उसी तरह से आनंदित हो सकें जिस तरह से स्वयं कवि :

चिमगादड़ ने अपनी दोनों आँखें बंद कर लीं
और छिपा लिया अपने आपको
उलटा लटक गया वह तो
किसी ने तुझे बताया नहीं ?
कस्तूरों, फ़ाख़्ताओं, कबूतरों ने
तोते की जैसी (मीठी) बोली बोली
नन्ही चिरैया ने तब भी उन्हें नसीहत दी
किसी ने तुझे बताया नहीं ?

मक्खी आकर मधुमक्खी से बोली
मुझसे अधिक कौन व्यस्त है ?
मेरे पंख भी तेरे जैसे ही नहीं हैं क्या ?
तुझे मैं अपना हाल क्या बताऊँ ?

धन्य है राजहंस
जिसके सिर से हर बुरी छाया दूर हो गयी है
सभी उसकी सम्मति पूछने आते हैं
ओरी तेरे झुमके झूम रहे हैं।

मीर के इस प्रकार के गीत पढ़ने पर जहाँ उनके सूक्ष्म अवलोकन का पता चलता है, वहाँ कश्मीर का हँसता-खिलखिलाता रूप भी आँखों के सम्मुख आ जाता है और हृदय को जैसे ठंडक पहुँचती है। आत्मिक अनुभवों को व्यक्त करने के साथ-साथ उनकी कविता कश्मीर के सौंदर्य और संस्कृति को भी दर्शाती है। उसमें कश्मीर के सांस्कृतिक जीवन के अनेक ऐसे रूप सुरक्षित हैं जो अब विलुप्त हो रहे हैं।

अच्छी कविता वह है जो देश और काल के बंधनों और सीमाओं से मुक्त हो। ऐसी कविता एक तिलिस्म की तरह है जो हर युग में पाठकों और श्रोताओं पर जादू करता आया है। जादू कर देने की यह क्षमता मीर की कविता में भी है किंतु उनका संपूर्ण काव्य समग्र रूप से इस दायरे में नहीं आता। गोताख़ोर भी जब समुद्र में गोता लगाता है तो हर बार मोती लेकर नहीं आता, मोती के साथ-साथ कभी-कभी मूंगा भी होता है। यह बात हर रचनाकार पर लागू होती है।

अपने एक गीत में मीर ने कहा है :

जब उसने आदम को दुनिया में भेजने की सोची तब मैं बूढ़ा हो चला था
वह रात को आया और
घड़ी भर के लिये हमारे यहाँ रुका
बताओ तो इसके माने क्या है ?

यही बात शम्स तबरीज़ी में इस ढंग से कही गयी है :

जब आलम नहीं था तब मैं था
जब आदम नहीं था तब मैं था
जब समय नहीं था तब मैं था
मैं तो चिर-पुरातन प्रेमी हूँ

और लल्लेश्वरी ने इसी सच्चाई को यों व्यक्त किया है :

हम थे और हम ही रहेंगे
हम ही विगत युगों से चले आ रहे हैं
शिव सदा ही जन्म-मरण का चक्र चलाते रहेंगे
सूर्य सदा ही उदय और अस्त होता रहेगा

इसी भाव को अहद ज़रगर ने भी अपने प्रसिद्ध गीत "काफ़िर बनकर भी मैंने इकरार किया" में गूंथा है।

इस प्रकार की कविताएँ किसी के कहे की अनुगूंज नहीं। ये उस बोध की अभिव्यक्ति हैं जो सहृदयों को काफी मंज़िलें तय करने के बाद प्राप्त होता है। समद मीर पर बहुत पहले चोरी का इल्ज़ाम लग गया होता यदि वे अक्खड़ किस्म के आदमी नहीं होते। अक्खड़ होने के कारण ही उन्हें किसी ने छुआ तक नहीं। पता नहीं अक्खड़ होने से उन्हें कोई नुक्सान हुआ या नहीं, पर मेरी दृष्टि से उन्हें इसका एक बड़ा लाभ यह हुआ कि उनके अनुभवों की प्रामाणिकता बनी रही। इस प्रामाणिकता ने उनके काव्य को अपना एक अलग रूप प्रदान किया। हालांकि सभी सूफ़ी कवियों ने प्रायः वच़न (गीत) विधा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है, किंतु सभी सूफ़ी कवियों के काव्य की अपनी-अपनी विशिष्ट भंगिमा है, अपनी विशिष्ट भाषा और अपने विशिष्ट प्रयोग हैं। इस प्रकार के सूफ़ी कवियों में समद मीर भी शामिल हैं। उनकी काव्य भाषा अन्य सूफ़ी कवियों से विशेष रूप से भिन्न है। समद मीर ऐसे पहले कवि हैं जिन्होंने मेहनतकश और कामगार की भाषा को साहित्यिक और रचनात्मक रूप प्रदान किया। भूली-बिसरी शब्दावली, जिसे शब्दकोश में स्थान नहीं दिया गया है, उनके काव्य में सृजनात्मक चेतना के अनेक स्तरों सहित दृष्टिगोचर होती है। कश्मीरी किसान और कामगार की भाषा को सृजन की भाषा बनाकर उन्होंने एक ओर तो कश्मीरी भाषा का विस्तार किया तो दूसरी ओर से कश्मीरी कविता में एक नयी

प्रवृत्ति का विकास किया जिसके अंतर्गत घिसे-पिटे शब्दों के स्थान पर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया जो इससे पहले गद्य या पद्य में कहीं नज़र नहीं आते। समद मीर ने जिस शब्दावली को रचनात्मक भाषा का रूप दिया उसके बारे में पढ़े-लिखे वर्ग के लोग बाद में सचेत हुए; पर समद मीर जैसे संवेदनशील कवि ने उसकी क्षमता को पहले ही पहचान लिया था :

प्रेम के पादाघात ने मुझ बाला को
रास्ते पर लाया
उससे मुझमें लचक आ गयी
आराम से उसने मुझे अपनी बर्तन बनाने की जगह पहुँचाया
और मेरी मिट्टी के ढेर बनाकर रख दिये
मेरे अंदर थोड़ी सी नमी थी
कुम्हार ने सुखाकर उस नमी को दूर कर दिया
पकायी जाने वाली मिट्टी को अलग रखते हुए
लाते ही साफ़ कर लिया गया
दो किस्म की रेत को एक ही बर्तन में
ज़र्रा-ज़र्रा मिलाकर रख दिया गया
पूरी तरह से छानकर कुम्हार ने मुझे फिर
चाक पर चढ़ाया
डंडे की मदद से उसने चाक को घुमाया फिर अपने हाथ से उसने
मुझे आकार दिया
और बादशाह के बरतने योग्य बर्तन बनाये
फिर, जैसी कि प्रथा है,
धागे से उसने मुझे चाक से अलग किया
मेरा निर्माण कर लेने के बाद मुझे चाक से उतारा गया
तभी तो मेरी शान ऐसी निराली है

सीधा-सादा जानकर
तुम मुझे हमेशा टालते रहे

बेकार ही मेरे पाँव थके
तुम्हें तो कभी मेरी याद न आयी
(वहीं है मेरा नैहर, वहीं है)
तराज़ू में तोलकर उसने क्या कुछ दिया
किसने उसका मतलब जाना ?
लकड़ी के ढेर में चूहा घुसा
तो वहाँ उसे खाने को क्या मिला ?
(वहीं है मेरा नैहर, वहीं है)
एक के बाद एक रेतीले किनारों को गिनना है—
मेरी इस मूल समस्या को तो समझो
हर क्षण के बाद अहं में आग लगाना है
(वहीं है मेरा नैहर, वहीं है)

वसंत आया और बढ़इयों को मैंने आश्वासन दिया
लुहारों से समस्या की चर्चा की
संशय त्यागो
तुम्हारे लिये मैं कुल्हाड़ी-दरान्ती-गैंती बनाऊँगा
बताओ तो इसके माने क्या हैं ?
बीज बो लो ओ किसान, हर दिशा में निकल पड़ो !
खेत में केवल पानी और कीचड़ है
मिट्टी को टटोलो, गोड़ी करो
बीज खुद ही ज़मीन में चला जायेगा
बताओ तो इसके माने क्या हैं ?
गोड़ी करना छोड़ दो;
अब तो फ़सल पकने का मौसम है
कच्चा-पक्का कुछ भी छिपा नहीं रहेगा
नुक़्ता (रहस्य की बात) अब ख़त्म होने को है
पर यह बात तो किसी-किसी को ही पता चल सकती है
बताओ तो इसके माने क्या हैं ?

तुम चाहे कितना भी धन खर्च करो
पर गीदड़ का सींग, मच्छर की हड्डी
श्वान का बाल, और वह भी नीले रंग का[१८] –
इस तरह की चीज़ें, कहीं मिल सकती हैं ?
यह तो कर्म ही है जो दो को मिलाता है

ऐसी निर्बाध और उन्मुक्त अभिव्यक्ति, ऐसी शुद्ध और कुआंरी भाषा कश्मीरी में अन्यत्र कहीं दिखायी नहीं देती। इसमें कोई दूसरा कवि समद मीर से स्पर्द्धा तो क्या उनकी समकक्षता भी नहीं कर सकता। इसे पढ़कर ऐसे ही उल्लास और आनंद का अनुभव होता है जैसे किसी बच्चे को कोई प्यारा-सा खिलौना देख लेने पर। मीर की कविता का अध्ययन करने पर इस बात का पता चलता है कि कश्मीरी भाषा कितनी सक्षम और संभावनाओं से युक्त है। यह एक ऐसी बात है जिसकी ओर अभी तक बहुत कम ध्यान दिया गया है।

मीर की कविता अंतर की भाषा है, मन के रहस्यों अथवा आध्यात्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति – जिसे तस्सवुफ़ कहते हैं। तस्सवुफ पहले से ही एक शक्तिशाली विचार-दर्शन रहा है। अपनी पृष्ठभूमि के कारण इसे कश्मीर में पूरी तरह से पनपने और फलने-फूलने का अवसर मिला। कश्मीर में तस्सवुफ़ के प्रसार के लिये महायान बौद्ध मत और शैव दर्शन ने पहले ही ज़मीन तैयार रखी थी। इसके बाद कश्मीर के ऋषि आंदोलन ने इसकी नींव को सुदृढ़ किया। तस्सवुफ़ ने काफ़ी समय पूर्व एक विश्वव्यापी आंदोलन का रूप ले लिया था और इसका उद्देश्य सदा मानवता का पथ प्रशस्त करना, उसकी सेवा करना रहा है। इसके महान आचार्य, रूमी, हाफ़िज़ अत्तार, जामी आदि अपने समय के पहुँचे हुए बुज़ुर्ग थे जिनकी भीतर की आँखें खुल चुकी थीं, जिस नैतिक जीवन दर्शन का प्रचार सूफ़ियों ने किया वह इतना उत्कृष्ट और ऊँचा था कि केवल विचार ही उस तक पहुँच सकता है। उनका विश्वास था कि अच्छाई अपना प्रतिफल आप है। स्वार्थी धर्मध्वजाधारियों की स्वार्थपूर्ण अच्छाई को उन्होंने अस्वीकार किया, क्योंकि वे जो कुछ करते हैं

---

१८. ऐसी चीज़ें जिनका कोई अस्तित्व नहीं

अपने फ़ायदे और मतलब के लिये करते हैं। सभी बाधाओं और बंधनों को तोड़ तस्सवुफ़ ने हर मनुष्य को इस बात का अहसास कराया कि वह भी उतनी ही आदरणीय और प्रतिष्ठित है जितना कोई दूसरा। तस्सवुफ़ की इस सेवा को सदा याद रखा जाना चाहिये कि मध्ययुग में जब उत्पीड़कों और अत्याचारियों ने मनुष्य को गुलाम बनाकर उसका मनोबल गिरा दिया था तो ये सूफ़ी ही थे जिन्होंने यह आवाज़ उठायी थी कि मनुष्य चिरंतन सत्ता का अंश है, कि मानव-मानव सब समान हैं, जिससे लोगों में फिर से आत्म-विश्वास पैदा हुआ। तस्सवुफ़ उस समय का एकमात्र सहिष्णु जीवन-दर्शन था जब सहिष्णुता को ही दुनिया से निष्कासित कर दिया गया था। मानववादी मूल्यों की प्रतिष्ठा में तस्सवुफ़ की जो भूमिका सारे विश्व में रही है, वही भूमिका कश्मीर में यहाँ के सूफ़ी कवियों, सहृदयों और संतों ने, जिनके अग्रणी लल्लेश्वरी और शेख़ नूरुद्दीन वली थे, निभायी है। कश्मीर की समन्वित संस्कृति को सूफ़ियों की एक मूल्यवान और महत्वपूर्ण देन उनके गीतों की वह महान पूंजी है जो हमें दाय में प्राप्त हुई है, जिससे हम सब को अनुराग है और जिसका शुद्ध स्वर हमारे हृदय के तारों को झंकृत करता है।

समद मीर पूरी तरह से एक रिंद (रसिक) हैं, ज़ाहिद (धर्मोत्साही व्यक्ति) का धर्मोत्साह उन्हें ज़रा भी सुहाता नहीं। यह इसलिये कि ज़ाहिद की साधना-उपासना सकाम है; उसमें स्वार्थ छिपा है जिसकी ओर संकेत करते हुए शेख़ नूरुद्दीन वली ने कहा है :

स्वर्ग के लोभ और नरक के भय से
लोग तेरी उपासना करते हैं, हे देव !

और लल द्यद कहती हैं :

यह देवता तेरा पत्थर है
और देवालय भी पत्थर ही तो है
ऊपर से नीचे तक सब पत्थर ही पत्थर है
मूर्ख पंडित, फिर तू किसकी पूजा करेगा ?
(पूजा ही करनी है तो) मन और पवन को एक कर

"मूर्ख पंडित !" कहकर लल्लेश्वरी ऐसे लोगों को संबोधित करती हैं जो बाहरी आचारों और रीतियों से चिपके हुए हैं, पर जिनके मन का मैल नहीं

धुला है, जिन्होंने प्रकृति को पवन से शुद्ध नहीं किया है। समद मीर को भी ज़ाहिद का आचरण ठीक नहीं लगता, क्योंकि वह अभी अद्वैत की अवस्था तक नहीं पहुँचा; उसे नर और नारी में अंतर दिखायी देता है, आत्मा के स्थान पर काया को प्यार करने में रत है। किंतु मीर जानते हैं वास्तविकता क्या है, उन्हें ज्ञात है यह काया साधन है साध्य नहीं।

नर और मादा एक हैं
ज़ाहिद तू अपनी निबेड़
प्रेमी का तन तो पापोश है—
कह-कह कर भी तुझे याद नहीं रहता ?

बार-बार कहने पर भी ज़ाहिद भूल जायेगा, मीर को इस बात का ज्ञान है, क्योंकि वह प्रेमी नहीं, वह तो दर्शक मात्र है, और प्रेमी और दर्शक में काफ़ी अंतर है। इसी कारण मीर को मंसूर का मार्ग अच्छा लगता है जो प्रेम में डूबकर वह नहीं बना जिसे पाने को वह आकुल था। उसका द्वैत-भाव मिट गया और सांसारिकता के ऊपर उठकर उसने एकत्व की पुकार की। यह पुकार मीर के हृदय में गहरी उतरी है। वे ज़ाहिद से कहते हैं कि प्रेम का मार्ग अहं के विसर्जन और समर्पण का मार्ग है। इस अवस्था में द्वैत को मिटाना और अहंकार को त्यागना आवश्यक हो जाता है :

मद को तू छोड़ ज़ाहिद, यह (प्रेम का) दर्द ही कुछ और है
एक नशेड़ी की तरह तू बाग़ में झूम रहा है
या तो मंसूर बन या फिर सामने आ
और दिव्य संगीत से परिचित हो ले

मंसूर की अवस्था में पहुँच कर समस्त घृणा और द्वैत-भावना नष्ट हो जाती है और मनुष्य के शरीर के विभिन्न अंग जिन क्रियाओं के लिये उत्तरदायी हैं उनमें एक प्रकार का विपर्यय आ जाता है, साधक कानों से देखने और आँखों से सुनने लगता है। ऐंद्रिक संवेदन एक-दूसरे का अतिक्रमण करने लगते हैं; उनके बीच के सारे परदे दग्ध हो जाते हैं। इस बात को व्यक्त करने से कहीं अधिक अनुभव किया जा सकता है। इस प्रकार के अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करना सरल बात नहीं। पर मीर इस अनुभव को भी अपने ढंग से शब्दों में पिरोते हैं :

अद्वैत को देखने पर कोई भेद नहीं रहा
व्यक्ति और विश्व का मेल हो गया
'अनलहक' कहा मंसूर ने और तभी से इस बात की चर्चा है
आँखों से सुन तू, फिर कोई संशय नहीं रहेगा

लेकिन ज़ाहिद मीर की बात कहाँ सुननेवाला है, उसे अपने ज्ञान का दंभ है और खोखले मज़हब का दम। प्रेम उसे छू भी गया होता तो उसकी ऐसी चाल न होती। मीर चेतावनी देते हैं :

अपने ज्ञान का कभी गर्व न कर
सीधी-सी बात कहता हूँ, उसे याद रख
बेमतलब जो ढो रहा है तू
यह बोझा तुझे बेकार में मार न डाले

भौतिक ज्ञान उस ज्ञान से भिन्न है जिससे अपने आपको पहचानने में सहायता मिलती है। भौतिक ज्ञान स्कूलों और कॉलेजों से प्राप्त किया जा सकता है, किंतु आध्यात्मिक अथवा आंतरिक ज्ञान गुरु का दामन पकड़ कर और अंदर के समुद्र में डुबकी लगाकर :

वास्तविक ज्ञान तो आत्मज्ञान है
जिससे भौतिक जगत के संशय दूर हो जाते हैं
यह ज्ञान मैंने किसी के पास नहीं पढ़ा
मुझे तो अपने महबूब ने ही यह मार्ग दिखाया है

मीर को इस बात का गर्व है कि आत्मज्ञान पाने के लिये उन्होंने गुरु की शरण ली किंतु सांसारिक ज्ञान पाने के लिये किसी का सहारा नहीं लिया। मिलन की मदिरा पी लेने के बाद पढ़ना-लिखना उनके किस काम का था :

जिसके लिये ज्ञान का अर्थ आत्मज्ञान हो
वही ईश्वर को प्रिय है
वहाँ न तो पढ़ना है, न लिखना है
न शोर करने से ही कोई मतलब है
चौदहों विद्याओं में पारंगत होने पर भी
तू वहाँ कहाँ पहुँच सकता है ?
जिस पढ़ने से साहिब मिले

वह पढ़ना है और

मीर ही क्या, प्रायः सभी सूफ़ियों की दृष्टि में जो पूजा-उपासना किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाये, उस का कोई मूल्य या महत्व नहीं। इस बात को उन्होंने इन शब्दों में प्रकट किया है :

किसी लोभ से की गयी पूजा
वहाँ जोड़ी नहीं जाती
वह तो बेकार कंधे पर एक बोझ है
लोभ एक ऐसी चीज़ है
जो किसी चीज़ को जमा होने नहीं देती
(लोभ के वश में) तू दो को चार गिनने लगता है
पर वहाँ पहुँच कर छः[१९] को ठोकर मारकर
एक से ही लगन लगानी चाहिये
जिस पढ़ने से साहब मिले
वह पढ़ना है और

आज से कोई एक सौ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध शैव कवि लछ काक ने कहा है :

वेद-आगम पढ़-पढ़ कर भी
लोग बहरे हो जाते हैं
अनपढ़ों के मुँह से ही निकलते हैं
चारों वेद और पुराण
"आ" को तू शब्द-ब्रह्म समझ—
इस पथ का ज्ञान तुझे परम पद देगा
अपने मन में सोऽहं का जाप कर
देह के गाँव में शायद ईश्वर से मिलन हो

लछ काक की चर्चा से समद मीर के "शास्त्री" काव्य की याद आना स्वाभाविक है। अन्य सूफ़ी कवियों की भांति उन्होंने भी "शास्त्र" कहा है। उनका कहना है :

कुमति से "त्राहि भगवान" कह
पाप और पुण्य को

---

१९. पांच इंद्रियाँ और मन ।

एक समान मान कर छोड़
समद मीर ने जो कहा है वह शास्त्र के ही समान है
"सोऽहम्-सोऽहम्" कह तू "सोऽहम्-सोऽहम्" कह !

"शास्त्र" शब्द का सामान्यतः संस्कृत से ग्रहीत शब्दावली और भाषिक प्रयोगों के अर्थ में प्रयोग किया गया है। शास्त्र एक बहुआयामी शब्द है जिसके आदेश, अनुसंधान, नियम, विधि, दर्शन, विज्ञान, साहित्य आदि अनेक अर्थ हैं। इस प्रकार "शास्त्री" काव्य की हदें भी काफ़ी विस्तृत हैं। हमारे सूफ़ी कवियों ने "शास्त्री" काव्य की रचना इसलिये की है कि कश्मीरी में उन्हें वैसी गहन-गंभीर शब्दावली के पर्याय नहीं मिले जैसी शब्दावली उन्हें संस्कृत से दाय के रूप में प्राप्त हुई थी और इस दाय के मीर भी सहभागी थे—ऐसे सहभागी जिन्होंने दाय के अपने भाग को गौरवान्वित किया है। जिस सफलता से उन्होंने संस्कृत शब्दावली का प्रयोग किया है उससे उनकी प्रतिभा का ही सिर्फ़ पता नहीं चलता, बल्कि इस बात के लिये उनसे ईर्ष्या होती है कि किस कलात्मकता से उन्होंने इन प्रयोगों को काव्य में गूंथा है:

तुम्हारा अधिकार है
कि अपने भाव से लौ लगाये रहो
ओ सरल-हृदय, तभी तुम्हारे वचन पूरे होंगे

आत्मज्ञान को प्राप्त कर
तो तू जीते जी ईश्वर का रूप लेगा
तेरा अनुराग, ओ प्रिय, मैंने नहीं छोड़ा
पहले अहंकार को मिटा दे
और फिर सुन रहस्य की बात
व्यर्थ में गहराई में उतरने की
आशा को मत छोड़
मोक्षधाम पहुँचने पर पाप और पुण्य
दोनों नहीं रहेंगे
तेरा अनुराग, ओ प्रिय, मैंने नहीं छोड़ा
स्वप्न, जागृति, सुषुप्ति, तुरीयावस्था

सब कुछ छूट गया, फिर क्रिया कौन करेगा ?
छः[20] को टटोल चुका हूँ—
मुझसे सारा हिसाब लिया जायेगा
तेरा अनुराग, ओ प्रिय, मैंने नहीं छोड़ा
कपट, अहंकार आदि तीन को मैंने मार दिया
अब यह चौथा पट (गुण) है
उस पट को जैसे कोई चोर
काट ले गया
और मन रूपी राजा को मैंने
आनंद सहित भेजा

समद मीर के "शास्त्री" गीतों को पढ़कर वे सब कवि आँखों के सम्मुख आ जाते हैं जिन्होंने जीवन भर भक्तिपरक गीत लिखे, फिर भी समद मीर की समता न कर सके। मेरे विचार से इसका कारण यह है कि "शास्त्री" कलाम सहित मीर का समस्त काव्य अनुभव के सत्य और सृजन की शक्ति पर टिका है, जबकि भक्ति गीत लिखने वाले अन्य कवियों के पास ऐसा कुछ नहीं था। मीर के एक सशक्त कवि होने का परिचय उनकी नातें पढ़ने से भी मिलता है। उनकी नातों में इस्लाम के पैगंबर के प्रति श्रद्धा का भाव सच्चाई के साथ उपस्थित है, उनमें एक गहरा और मर्म-मधुर संगीत है। एक-एक शब्द विनय के परिधान में लिपटा है। जो ईमानदारी मीर के काव्य में शुरू से आख़िर तक मिलती है, वही उनकी नातों में भी है, किंतु उन्हें प्रभावपूर्ण बनाने में श्रद्धा का विशेष हाथ है :

तुम्हारा ऊँचा क़द मैंने देखा
या मुहम्मद मुस्तफ़ा !
तुम ससीम-असीम से परे, उच्च और महान हो
या मुहम्मद मुस्तफ़ा !
तुम्हारा पवित्र नाम लेकर मैं कठिनाइयों से
पार पाना चाहता हूँ

२०. पांच इंद्रियां और मन।

सौ-हज़ार बार उस नाम से मैं
अपनी जिव्हा को धो लेना चाहता हूँ
या मुहम्मद मुस्तफ़ा !
उस पाक-ज़ात ने तुम्हें पैदा किया
तुम न होते क्या होता ?
सब के अग्रणी, सब के पेशवा
या मुहम्मद मुस्तफ़ा !
तुम्हारी नात,[२१] दरूद,[२२] सलवात[२३]
सब उचित है
ईश्वर ने तुम्हें दिव्य ज्ञान दिया
तुम्हें आखिरी नबी कहा गया
या रसूले अरबी !
ऐ शाह, मेरी ओर भी एक नज़र कर
ताकि मेरा जो काँसा है वह सोना बन जाये
मुरदा दिलों में जान आ जाये
या रसूले अरबी !

ऐ हवा, मदीने के सफ़र पर जा
और उसे मेरा हाल बता
तुझे अल्लाह की क़सम,
मेरा शिकवा उस तक पहुँचाना
कहना उस शाह से कि ऐ पयंबर !
मुझे भेजा है एक मुफ़लिस ने
जो राह में अकेला पड़ा है
न उसका कोई साथी है, न संगी
उसे मेरा सारा हाल सुनाकर आ, ऐ हवा !

काव्य को अलंकृत करने के लिये मीर ने जहाँ उपमा, रूपक,

---

२१. वंदना २२. स्तुति २३. प्रार्थना

विरोधाभास आदि का खुलकर प्रयोग किया है, वहां बिंबों-प्रतीकों के प्रयोग द्वारा अपने काव्य-संसार का विस्तार किया है और हमारे लिये सोचने की सामग्री प्रस्तुत की है। इस प्रकार उनकी कविता चित्रकला का एक ऐसा नमूना बन गयी है जिसे अलग-अलग कोणों से देखने पर अलग-अलग दृश्य या रूप नज़र आते हैं :

अपने प्रिय के पीछे-पीछे
अपने महबूब के लिये ऐसा बन
जैसा सात दरवेशों के लिये इंतज़ार करता कुत्ता[२४]
हो सके तो पहले अपनी बलाएँ दूर कर
आकाश में जो उड़ेगा राजहंस
वह कहीं थक न जाये
दाना-दाना तू प्रेम के मोती बिखेर
अरे, एक ही टाँग पर तो गुबरीला
सारी दुनिया का चक्कर लगा सकता है
हो सके तो पहले अपनी बलाएँ दूर कर

अपने आपको एक तरफ़ करके देख
कौन शिव है और कौन शैतान
वह वह है या वह या वह
किसने देखा है ईश्वर को आँखों से ?
औरों के बोल सहे,
क्या कुछ नहीं बीती मुझ पर
मुझ बाला को छोड़
चला गया वह मेरा नागर्जुन[२५] (प्रेमी)

---

२४. जब ये सात दरवेश एक गुफ़ा के अंदर गये तो उनका कुत्ता बाहर वर्षों तक इंतजार करता रहा।

२५. संभवतः कवि का तात्पर्य कश्मीरी की एक प्रसिद्ध लोक-कथा के नायक नागराय से है।

ओ सुकुमारी, तुझसे क्या कुछ कहा गया
कि तू बैठ गयी जाकर न जाने किस घर में !
तू कोई अबाबील है क्या ?
देख री, तेरे झुमके झूम रहे हैं
क़द तेरा सरू जैसा है, कॉंच जैसा सुंदर तन
तुझे देख पारा भी शरमा जाये
वक्ष तेरा दर्पण है, अनार जैसे सुंदर स्तन
एक नज़र मेरी ओर तो देख !

समद मीर की कविता आत्मा का संगीत और परियों का गान है। उसमें न किसी कौशल का प्रदर्शन है न कोई दिखावा। शब्दों का प्रयोग ऐसा उपयुक्त है कि एक भी शब्द को अपने स्थान से हटाया नहीं जा सकता। पढ़ने वाले को कहीं अगर कोई फेर नज़र आये तो ऐसा लिपिक की भूल के कारण हो सकता है जो समद मीर के कहे को ठीक से लिपिबद्ध नहीं कर सका होगा। अन्यथा मीर ने तो एक कुशल स्वर्णकार की तरह शब्दों को चुन-चुन कर जड़ा है और अपने गीत के महल को सजाया है। कई स्थानों पर सृजन का आवेग इतना तीव्र और प्रबल है कि पढ़ने वाले को अपने साथ बहा ले जाता है। कई स्थानों पर तो पद्यों की ऐसी रचना हुई है कि सुनने वाला पल भर ठहर कर सोचने लग पड़ता है कि कवि ने क्या कहा है और मेरी समझ में क्या आया है। मेरे विचार से किसी अच्छे शे'र अथवा पद्य की पहचान यह है कि उसे पढ़कर या सुनकर मस्तिष्क को एक झटका-सा लगना चाहिये जिससे बोध के द्वार खुल जायें। मीर की कविता में योगी की चंद्रकला की जैसी शुद्धता भी है और एक प्रबुद्ध मन का प्रकाश भी। पर इस सब के अलावा उसकी विशेषता यह है कि वह कविता है, उपदेश नहीं। उनका उद्देश्य यही है कि पाठक भी उनके अनुभव में शामिल हो जाये। हर मोड़ पर उन्होंने काव्योचित संतुलन बनाये रखा है ताकि कोई एक पलड़ा भारी न हो जाये।

मीर अध्यात्म मार्ग के पथिक थे, पर थे, आख़िर एक मनुष्य ही। वे समाज में रहते थे; जीवन के कष्टों और कठिनाइयों का उन्हें अहसास था। अरस्तू का कथन है कि कोई देवता या फिर कोई दानव ही समाज से

अलग रह सकता है।

मीर एक परिवर्तनशील समाज के संवेदनशील सदस्य थे। जो दिशाहीनता उनके सामने पनप और फैल रही थी उससे वे उदासीन कैसे रह सकते थे ? बर्बादी के इस आलम को वे बर्दाश्त न कर सके और लोगों को उन्होंने चेताया :

आज भी ऐसे लोग हैं जो हज करके आते हैं
मगर वे जब तराज़ू में कुछ तोलते हैं
तो वह वज़न में पूरा नहीं होता
पंसेरी को तीन मन बताकर तू ग्राहक को लूटता है
(तेरे स्वभाव से अभी बचपना नहीं गया)
बज़ाज़ों का तो और भी बुरा हाल है
वह अगर चौथाई गज़ कपड़ा मापेंगे तो वह गिरह भर
कम ज़रूर निकलेगा
कोरे कपड़े को किमख़ाब कहकर बेचेंगे
(तेरे स्वभाव से अभी बचपना नहीं गया)
तेरे वज़ीफ़ों (जापों) और नमाज़ों की कोई गिनती ही नहीं
रात-रात भर जागता है, दिन में रोज़ा रखता है
ज़बान से ख़ुदा का नाम लेता हुआ बेदर्दी से
लोगों का क़त्ल करता है
(तेरे स्वभाव से अभी बचपना नहीं गया)
आकाश लकड़ी जैसा हो गया है और काँसे जैसी धरती
न कोई किसी चीज़ को अमानत मानता है
न किसी को अमीन
सुना है अब बेटा माँ को सास कहने लगा है
(तेरे स्वभाव से अभी बचपना नहीं गया)

कितना सही है यह वर्णन। यह विक्षोभ नहीं, यह तो उथल-पुथल है। कोई भी चीज़ अपनी जगह पर स्थिर नहीं। मूल्य नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं, मानवीय सहानुभूति के सभी दिये बुझ गये हैं। यद्यपि इस विक्षोभ का संबंध तीस वर्ष पहले की स्थिति से है, पर आज की परिस्थिति में भी यह कितना

सार्थक है। मीर आज जीवित होते तो शायद अपने कपड़े फाड़कर निकल पड़ते। उनके समय तक पश्चिमी सभ्यता की बाढ़ ने इतना विकट रूप धारण नहीं किया था जितना आज। मीर का युग कश्मीर में प्राचीन और नवीन के बीच संघर्ष और टकराहट का युग था। १९४७ के बाद यह संघर्ष और तीव्र हो चला था। मूल्यों के रूप में जो कुछ सहेज कर रखा गया था, वह सब नष्ट हो गया। सभी कुछ अस्त-व्यस्त हो गया और इस अस्त-व्यस्तता के बीच कोई राह निकालना बड़ा कठिन हो गया। समद मीर ने अपना सारा जीवन एक ढंग से बिताया था और अब उनका एक संक्रान्ति युग से सामना था जिससे वे समझौता नहीं कर सके। समझौता करना संभव ही न था क्योंकि एक हरी टहनी तो मुड़ सकती है, पर एक कड़ी टहनी टूट जाती है। सभी कुछ को नष्ट होते देख उन्होंने पीड़ा भरे स्वर में कहा :

मच्छर निकला है हाथी से
लेने को टक्कर
पीछा करे शेर का लोमड़
यह कैसा चक्कर
और सियार कटार कमर में
रखकर पहुँचा वन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना दो क्षण !
दिल का तो रेहान[२६] से ही आराम बड़ा आये
पर बिच्छू बूटी को देखो
कैसे इतराये
सोते और समंदर में है
कैसा समीकरण ?
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना दो क्षण !

सरपट-सरपट जो दौड़ रहा था
वह गर्दभ शावक आख़िर कसाई के हाथों मारा गया

---

२६. तुलसी की जाति का एक पादप।

बिना मोल-तोल किये औने-पौने भाव में
बेच डाला गया बेचारा
लल्लेशवरी की थाली से कभी सिलबटा न गया[२७]

समद मीर कश्मीरी भाषा के एक बड़े कवि थे। उनकी कविता सामयिक नहीं; वह हर युग में प्रतिष्ठा पाती रहेगी। वे उतने ही महान सूफ़ी कवि हैं जितने शम्स फ़क़ीर[२८] या न्याम साहब[२९] थे। उनके गीत गत पच्चीस वर्षों से गूंजते आ रहे हैं। लोग इस गीतों को सिर-माथे से लगाते हैं। समद मीर की लोकप्रियता में कभी कमी नहीं आयी क्योंकि उनके गीतों में एक ऐसा रस है जो हमें मदहोश करके नित नये लोकों की यात्रा कराता है।

समद मीर का समस्त काव्य या तो "वचन" (गीत) शैली में रचा गया है या पदों में। कुछ गीत गज़ल से भी समानता रखते हैं, किंतु उन्हें ग़ज़ल नहीं कहा जा सकता। किंतु "वचन" अथवा गीत के परंपरागत रूप को भी उन्होंने ताज़गी और एक नयापन प्रदान किया जिससे उसकी संभावनाओं का सबको पता चला:

ऐ समद मीर, तेरा रहस्य तो
शब्दों से परे है
बता तेरा स्थान कहाँ है ?

रहस्य को कविता का रूप देना कुशलता की भी माँग करता है और काव्यात्मक साहस की भी।

"अकनंदुन"

समद मीर की एक और कृति है "अकनंदुन" जिसकी रचना चौदह भागों में हुई है। "अकनंदुन" की लोककथा पर आधारित काव्य की रचना अनेक कवियों ने की है, किंतु समद मीर रचित "अकनंदुन" में रहस्य का वातावरण इतना गहन है कि पाठक एक रहस्यलोक में पहुँच जाता है। "अकनंदुन" के नाम से रची गयी सभी कृतियों में मूल कथा एक-सी है,

---

२७. सुप्रसिद्ध कश्मीरी संत कवयित्री लल्लेश्वरी के बारे में कहा जाता है कि उनकी सास उनकी थाली मे एक सिलबटा रख देती थी ताकि थोड़े-से चावल ढेर सारे दिखें।
२८. और २९. १९वीं शताब्दी के सुप्रसिद्ध कश्मीरी सूफ़ी-कवि।

किंतु कवियों के सोचने के अपने-अपने ढंग ने कथासूत्र को प्रभावित किया है। मूल आख्यान में मौखिक परंपरा से चला आया है। मिर्ज़ा अकमल बदख़्शी वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इस आख्यान को फ़ारसी भाषा में रूपांतरित किया। संभवतः इसी रूपांतर के माध्यम से यह आख्यान कश्मीरी में पहुंचा। मौखिक परंपरा को जाने दें तो इसे ही इस कथा का प्रथम लिखित साक्ष्य माना जा सकता है।

समद मीर ने अकनंदुन के बाप का नाम हरनाम और माँ का सोनमाल दिया है। अहद ज़रगर ने योगी को नारद कहा है, किंतु मीर के "अकनंदुन" में योगी को गुसाईं (साधु) के नाम से संबोधित किया गया है। मीर ने मूल कथा के उन्हीं वृत्तांतों और प्रसंगों को लिखा है जिनकी व्याख्या उन्होंने अपनी कविता में भी की है। मीर के "अकनंदुन" में गुसाईं शिव का रूप प्रतीत होता है। आठवें भाग के अंत में समद मीर स्पष्ट करते हैं :

रूप बदलते रहना तुम्हारा ही काम है
ऐ समद मीर, जो बाहर है, गुहा के अंदर भी वही है
आना-जाना तो लगा ही रहता है वहाँ
जय हो, आज हमारे आँगन में गुसाईं आये हैं

समद मीर के "अकनंदुन" का उद्देश्य है आत्मज्ञान की प्राप्ति और इस संदर्भ में कवि के व्यक्तिगत अनुभव के अनेक उदाहरण दृष्टिगोचर होते हैं। कृति की एक विशेषता यह है कि इसका आधा भाग मसनवी के रूप में रचित है और आधा गीतों के रूप में। कथा के वर्णन में हिंदू मिथकों का खुलकर प्रयोग किया गया है जिससे उस गहन रहस्यात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है जिसकी ओर हम शुरू में संकेत कर चुके हैं। मीर की अन्य रचनाओं की भांति "अकनंदुन" में भी अभिव्यक्ति का एक अलग ही ढंग है। "अकनंदुन" की रचना करके उन्होंने रहस्यों को व्यक्त किया है, किंतु इन रहस्यों का अर्थ खोजने वाला भी तो होना चाहिए।

मिर्ज़ा अकमल बदख़्शी (१६४५-१७१९) का कहना है कि "अकनंदुन" की कथा उनके समय भी काफ़ी लोकप्रिय थी। लोकगायक सूफ़ियों और संतों को सुनाने के लिये इस कथा को साज़ पर गाते थे और वे इसे सुनकर झूम उठते थे। वे इस मत का समर्थन करते हैं कि कथा का मूल स्रोत कश्मीर

ही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने 'अकनंदुन' के बारे में स्पष्ट कहा है, "एक कश्मीरी पुस्तक में एक कथा है जो साधकों का मार्गदर्शन करती है। ईश्वर की तलाश करने वाले इस कथा को सच्ची मानते हैं। सत्य का मार्ग स्वेच्छा और स्वीकृति का मार्ग है, और यह कथा साधक के प्रशिक्षण के लिये उपयुक्त है। जो कोई भी सत्य के मार्ग पर चलना चाहे उसे मेरी बात को और इस कथा को सच मानना चाहिये।"

मिर्ज़ा अकमल के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कश्मीरी भाषा में "अकनंदुन" की कथा १७वीं शताब्दी में निश्चय से लिखित रूप में विद्यमान थी। प्रो० गिरियारी लाल तिक्कू ने लिखा है कि "अकनंदुन" शब्द "एक आनंद" (एकत्व का आनंद) का कश्मीरी रूप है। उनके विचार से यह कथा जर्मन आख्यान साहित्य की "डर रीज़ उंड डास कींड" नाम की कथा से समानता रखती है। मेरे विचार से "अकनंदुन" सीधे "एकनंदन" शब्द का कश्मीरी रूप है।

ओ नये मास के चाँद !

मुझसे यों छिपो मत ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

दिन भर में करती रही तुम्हारा इंतज़ार
पर अब भी तुम्हारी नाराज़गी नहीं गयी ?
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

हवा-सी मैं आती तुम्हारे पास
और पहुँचाती तुम तक अपने सारे-शिकवे-शिकायतें
पी लेती पानी का एक घूंट
तुम्हारी नदिया पर
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

ओ मेरे प्रियतम, देखो तो कैसे क्रीड़ा कर रहा है
सुंदर हिरणों का झुंड
बाग़ में जाकर देखो
कैसे दिल में दाग़ लिये
खड़ा है गुले-लाला[1]
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

कैस जाल में फंसा कर छोड़ गये हो
मुझे सिमटी-सकुचायी

---

१. पॉपी जाति का एक लाल फूल

सोने की कुरेदनी-सी मैं तुम्हें
अपने कुरते के गले से लगाये रखती
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

मुझ मैदान की मिट्टी को
तुम कमाल पर पहुँचा कर आये हो, ओ कुंभकार
बना रहे हो मुझसे कितने ही पात्र
प्रेम की दूकान पर
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

भोली-भाली मैं
बीते ख़यालों में डूबी
जाने यह किधर निकल आयी हूँ
दौड़ी आयी हूँ तुम्हारी ही टेर सुनकर
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

निकल चला था समद मीर अपने घर से
रत्न की तलाश में
अब इस इंतज़ार में है
कि तुम्हारे द्वार पर जाने कैसा होगा स्वागत
ओ नये मास के चाँद
मुझसे यों छिपो मत !

नोट : इस विनिबंध में संकलित कविताएँ समद मीर की प्रामाणिक और अधिकृत रचनाएँ हैं। ये उस पांडुलिपि से ली गयी है जो कवि के सामने ही लिपिबद्ध करायी गयी थीं। इनका चयन और संपादन स्वयं कवि ने अपनी देखरेख में कराया था।

प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना दो क्षण !

जल गया आग में
सोनकली का तन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

अब तो बस तेरे दरस-परस से
अच्छा होगा व्रण
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !
मैं तट पर खिली कली हूँ
पहुँचूँगी मैं भला कहाँ ?
कोई भी मेरे पास
कभी तो आया नहीं यहाँ
दुलराऊँ कैसे छाती में
उसको जो है पाहन ?
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

घोड़ा उसका, सिरमौर उसी का
उसकी ही तो नाव
जो पहले पनपे—
पहले ही चल जाये जिसका दाँव
क्या देखे बिना
वहाँ पर भी होता है
आबंटन ?
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

ओ तू, तूने भी तो
कितनों का भटकाया है ध्यान
कितने हैं जिनका
पूरा हो पाया है यह अरमान–
खा-पीकर अपनी अंटी में भी
साथ ले सकें धन ?
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

करके दुलार
मैं कहूँ कि तू फिर एक बार आ जा
आकर मुझको अपना मुखड़ा
तू फिर से दिखला जा
मैं रही देखती अपलक
तुझको ही हर दिन
हर छन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

अंगूर लता यह
टेढ़ी-मेढ़ी चढ़ती ही जाये
उसका जो बल है
मगर कभी वह निकल नहीं पाये
कारीगर चाहे ठोंक-पीट कर
कर ले लाख जतन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

मच्छर निकला है हाथी से
लेने को टक्कर
पीछा करे शेर का लोमड़—
यह कैसा चक्कर !
और सियार कटार कमर में
रखकर पहुँचा वन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

दिल का तो रेहान[1] से ही
आराम बड़ा आये
पर बिच्छू-बूटी को देखो
कैसे इतराये
सोते और समंदर में है
कैसा समीकरण ?
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

मले नाक पर केसर
ज़रा अगर आ जाये छींक
उसको हो सकता क्या हासिल
उसका क्या है ठीक ?
अरखल[2] का जसा ही जो
समझे विशुद्ध चंदन
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

---

१. तुलसी की जाति का एक पादप।
२. एक पेड़ जिसे छूने से फफोले पड़ते हैं।

समद मीर का दाँव चला
जब परकीया की आँख–
लगी, लिया काला-सफ़ेद सब
उसने पूरा आँक
दाने-दाने का कर आया
पूरा विश्लेषण
प्रिय, आकर ज़रा ठहर जाना
दो क्षण !

बात

बात की बात में बात कहीं चुक न जाये
हम तो बस सहमते ही रहे

सौ तरह से तन की वासना को तृप्त करो
फिर भी वह दौड़-भाग करेगी ही
हम तो बस सहमते ही रहे

पत्थर में से निकला यह जो हीरा है
देख लो अच्छी तरह पहचानो
कहीं किसी संशय की छाया न रह पाये
अंधे ! क्या सोच रहे हो ?
अभी भी तुम्हारा गर्व नहीं गया ?
हम तो बस सहमते ही रहे

यौवन का कस्तूरा चहक रहा है
ऊंचाइयों पर अपने लिये जगह बनाता हुआ
हम तो बस सहमते ही रहे

वहाँ का कोई पता नहीं मिलता

सोचा पतिंगे ने
और पैग़ाम लाने वहाँ गया
पहुँचा तो कुछ कह ही नहीं पाया
हम तो बस सहमते ही रहे

दुनिया यह बिल्कुल है खेत जैसी
ज़रूरी है हर समय उसकी देखभाल
तभी कोई उलझन पैदा न होगी
"अंत में लपेट लेगा शून्य ही"—
आयत है कुरान की
हम तो बस सहमते ही रहे

कभी ले लेता है अपनी छाया तले
कभी वह पकड़ लेता है दामन
कभी-कभी रंक को पहनाता है ताज
कभी वह खाता है, कभी खिलाता है
(और के खाये का ऋण चुकाते हुए)
हम तो बस सहमते ही रहे

काबे के दरवाज़े पर झूठ खड़ा है पहरेदार-सा
अपनी पूजा आप कराता हुआ—
प्रति दिन, दसों दिशाओं में
फिर भी उसे कभी पूरा नहीं पड़ता
हम तो बस सहमते ही रहे

जो निश्छल-निर्भय हो उलीच सके समुद्र को
उससे अपना राज़ कहो समद मीर
ऊपर से नीचे तक
क्यों कर रहे हो यों शोर ?

नोट : यह गीत पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

चोर मेरे यौवन के !

छल किया तूने मुझसे
ओ चोर मेरे यौवन के !
पल भर के लिये यहाँ रुक जा
मत चला जा दूर छोड़कर मुझको
ओ चोर मेरे यौवन के !

दोष लगाया तूने मुझ सोन-चिरैया पर
मैं तो कपड़े फाड़कर निकलूँगी
करूँगी तुझसे सवाल-जवाब
भंग पिला कर रख दिया मुझ स्वर्ग की अप्सरा को
ओ चोर मेरे यौवन के !

सुन, तुझे हृदय में झुला रही हूँ अपने
लम्बी ज़बान वालों के लिये वहाँ कोई जगह नहीं
तू तो उजाला है भोर का
किरणें बिखेरता हुआ
ओ चोर मेरे यौवन के !

तुझे क्या याद दिलाऊँ
मेरी कानों की बालियों को तूने चूर-चूर कर दिया था ?
गले में डाल दिया था मेरे जाल-जंजाल ?
ओ चोर मेरे यौवन के !

प्यार के ओ भंवरे ! ले गया तू मेरा हृदय
और फिर ज़रा भी परवाह न की
नरगिस को तू कितना तड़पता हुआ छोड़ गया
ओ चोर मेरे यौवन के !

मेरे रहस्यों को अपने हृदय में ही रख

थोड़ी देरे के लिये आ जा
तेरी चेरी बन कर रहूँगी
बजाऊँगी खुशी से संतूर का साज़
ओ चोर मेरे यौवन के !

पढ़-पढ़कर भी मंज़ूर न हो जिसकी अरज़ी
ज़रूर उस पर अपने ही दुर्भाग्य की छाया है
पर सावधानी और अभ्यास कहीं गये हैं ?
ओ चोर मेरे यौवन के !

मेरे होंठ सूखे हैं और मैं बेबस हो गयी हूँ
पर प्रेम के वैद यहाँ कितने हैं ?
मेरे बैर से तूने मुझे दे दी यह प्रेम की ज़ंजीर
ओ चोर मेरे यौवन के !

ज़्यादा नाचने से ज़्यादा चक्कर आता है
इसीलिये तो चुप है समद मीर
सब न्याय-अन्याय की बात तुझे बतलाने को व्याकुल
ओ चोर मेरे यौवन के !

पल भर के लिये यहाँ रुक जा
ओ चोर मेरे यौवन के !

ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

चुन ले चमेली और मसवल[1] के फूल
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

जैसे अर्पित करते हैं जायफल को
ऐसे तू त्याग दे अपना गर्व
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

---

१. एक कश्मीरी फूल का नाम।

बस गयी हूँ नाम अगर इसका है बसना
सुनते ही सारी दुनिया उमड़ आयी इस बस्ती में
गिर गया मेरे हाथ से सब कुछ छूटकर
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

तेरे रूप की आग में जलते हैं (सब फूल)
मरते हैं, बहाते हैं आँखों से दरिया
रोते हैं अपनी बेकसी का रोना
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

मंडराता है तू श्वेत पुष्पों पर
और मैं कभी खुश होती हूँ, कभी खिन्न
ज़ंजीरों में जकड़ी मैं खड़ी हूँ हाथ बांधे
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

कौन-सा मलाल तू मन में छिपाये है
कर गया है तन तेरा क्षत-विक्षत अहेरी-सा
सीने में मेरे तेरे तीर की नोक है
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

गिन कर देख लिया है अच्छी तरह मैंने
मनों बेचकर मैंने सिर्फ़ कौड़ी पायी है
भरा खलिहान मेरा अब मुट्ठी भर शेष है
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

उतरता ही नहीं है यह प्रेम का ताप
तू ही लुक्मान है मेरा, तू ही अफ़लातून
पर बाट जोहते-जोहते मेरी जान मुँह को आयी है
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

नोट : यह गीत पहली बार इस विनिबंध में पूरे का पूरा दिया जा रहा है। 'कुलायत-ए-समद मीर' (समद मीर रचनावली) में इसके कुछ चुने हुए पद्यांश ही दिये गये हैं।

निकल पड़ती अकेली ही, मगर हूँ अनजान
तप रही हूँ मैं जैसे सूरज के समान
जल रही हूँ जैसे हो प्रेम की मशाल
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

सह रही हूँ अपने सुंदर शरीर वाले प्रेमी का छोह
रहस्यों में एक यह मेरा रहस्य है
कह दिया है समद मीर ने थोड़े में पूरा हाल
ओ भंवरे, वह तो नरगिस है !

दर्द की दवा

प्यार की आग ने मेरा जुही-सा तन जला डाला
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती
मेरे मासूम-से दिल पर रख दिये गये हैं जैसे अँगारे
मैं तो उसी की आस में बैठी थी
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती

दिल के खून की बनायी है मैंने तरकारी
तेल के बदले डाली है उसमें अपने आँसुओं की धार
प्याले भर-भर कर उसे पीने को दूँगी
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती

प्यार भरे कलेजे के अपने मैंने बना डाले हैं कबाब
मेरा सुकुमार तन घोर यंत्रणा में तड़प रहा है
अब आ जाये और खा ले ये नान और गोश्त
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती

नोट : यह गीत पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

वादे कर-कर के उसने मुझे कितना तड़पाया
क्या मैं इस तरह से दग़ा दिये जाने योग्य हूँ ?
कभी-कभी तो दिखा जाता अपने दरस
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती

वह मुझसे ख़फ़ा है, और लोगों ने मुझ पर पत्थर बरसाये
कोई हंसी-खेल नहीं – वह मेरा क़त्ल कर गया है
ऐ समद मीर कह दे उससे, शायद तेरी बात पर कान धरे
वह आता तो मेरे दर्द की दवा हो जाती

किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

सारी उम्र तुम्हारे ही पीछे-पीछे
चला आया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

कई-कई बार मैंने न कुछ पिया
न खाया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

मिट्टी और शहद
दोनों यहाँ बिकते हैं एक ही भाव
पर घोड़ों ने कब खाया माँस
शेरों को किसने घास खाते पाया ?

अपनी ही लाश को जलाकर[१]
जब मैं निकल आया बाहर
और अपनी असली जगह को देखा
तो वहाँ अंधा
आँख वालों की रखवाली करता नज़र आया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

---

१. अपने अहं को मिटाकर।

पहाड़ों को करके पार
दम भरता है सियार
पर कोई कितना ही उछले
तुम्हारे विचार तक कौन पहुँच पाया ?
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

वही मरा
जो भूला अपने आपको
उससे हमारा कुछ भी लेना-देना
क्या फिर रह जाता है बकाया ?
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

दोनों आँखें बंद कर
उलटा लटक गया चिमगादड़
अपने आपको उसने छिपाया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

कस्तूरों, फाख़्ताओं, कबूतरों ने
तोते की-सी (मीठी) बोली बोली
नन्हीं चिरैया ने उनका
फिर भी मज़ाक उड़ाया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

देखो तो इस समद मीर को
रूठ कर जा बैठा है नंबलहार में
उसका ज़री का परिधान
तार-तार होने को आया
किसी ने तुम्हें नहीं बताया ?

सत्गुरु का संवाद ('शास्त्री' गीत)

सत्गुरु का संवाद –

आकाश, पाताल छहों
दिशाओं में
चित्त तुरग को है अब
रखना सीमाओं में
सत्गुरु का संवाद –

कपट से तुम मुक्त करो
मन को
योग के अभ्यास से
निर्दोष रखो तन को
सच निकल आयेगी निश्चय
मुँह से कही हर बात
सत्गुरु का संवाद –

ज्ञान और अज्ञान
बस बाहर का खेला है
निष्काम कर्म
लाभ देता अकेला है
अपने को जान लो, उठाओ –
निर्मल आनंद तुम निर्बाध
सत्गुरु का संवाद –

इस लोक को तुम
संवारो

उस लोक को भी
सुधारो
देह के संस्कारों से अब तो
मुक्ति मिल जाये अवदात
सत्गुरु का संवाद –

मर्यादा पुरुष को
जाग्रत कर
सुषुप्ति में सुन लो
भीतर के तारों का झंकृत स्वर
चैतन्य ईश्वर का ही नाम है
बात है यह सत्य, निर्विवाद !
सत्गुरु का संवाद –

नारद का है यह
उपदेश
पारद का दमन हो
विशेष
वीतराग बन जाओ निर्द्वन्द्व
काम का विदग्ध हो उन्माद
सत्गुरु का संवाद –

लोभ ने सब हर लिया
आनंद
अखंड ब्रह्मांड से
विच्छिन्न कर मेरा संबंध
आ पहुँचा मेरे लिये तब
सत्य का आदेश अकस्मात्
सत्गुरु का संवाद –

भरेगा
मन रूपी राजा उड़ान
मोह के शरीर का
करूँ मैं बलिदान
सुन लो यह मेरा उपदेश तुम –
बन सकता है यह बुनियाद
सत्गुरु का संवाद –

आकाश, पाताल, छहों दिशाओं में
चित्त तुरग को
रखना है सीमाओं में
सत्गुरु का संवाद ।

इश्क़ में

इश्क़ में यह दिल मेरा होश गंवा बैठा है
भुला नहीं पाती हूँ उसको
संकट पर संकट चुपचाप सहे जाती हूँ
भुला नहीं पाती हूँ उसको

डंसते हैं सांप मुझे, देखो गली-गली–
खोजने मैं उसको चली हूँ
या जाकर सप्तर्षि तारों से पूछो
भुला नहीं पाती हूँ उसको

गूंगे-बहरे वहाँ इतराते चलते हैं
पंगु है फलांगते छतों को
अंधों को देती है छाया तक दिखलायी
भुला नहीं पाती हूँ उसको

दूर से ही अपनी वह झलक दिखा जाता है
चोर जो है मेरे यौवन का
ऐसे में मन मोर डर से भर जाता है
मेरे आँसुओं से तालाब भरे तेरे हैं
भुला नहीं पाती हूँ उसको

ओ रे मन मेरे तू थोड़ा तो भेद कर
अरखल और चंदन के पेड़ में
अदफ़र और अंबर की सुगंधियाँ क्या एक हैं ?
भुला नहीं पाती हूँ उसको

वन की हरियालियों में सांप छिपे बैठे हैं
करते हैं तेरे ही शिकवे
सोते पर नन्ही चिरैया आ जाती है
भुला नहीं पाती हूँ उसको

मोती और माणिक का रंग भले एक हो
संग मगर उनके अनेक हैं
तोते और नीलक्रश[१] पक्षी में मेल क्या
भुला नहीं पाती हूँ उसको

मेरे दिलदार, मेरे यार अब तो आ जा
दूँगी मैं जान तेरे वास्ते
तेरी ही आग में मै राख हुई जाती हूँ
भुला नहीं पाती हूँ उसको

पर्वतों की चोटियों पर फिरते कुलमार[२] हैं
बैठे शृगाल वहाँ घात में

---

१. कश्मीर में पाया जाने वाला एक छोटा-सा पक्षी।
२. सांप जिसके दंश से पूरे कुल का नाश हो जाता है।

निर्दोषों को मारें शेरों को हुक्म नहीं
भुला नहीं पाती हूँ उसको

सजा-सजाया देखो खड़ा है
घोड़ा यह नाज़ुक चाल का
उस पर मैं डालूँगी रेशम का कपड़ा
सुंदर-से फुंदनों वाला
भुला नहीं पाती हूँ उसको

जान कर अनजान यों मत बन मन मेरे
काफ़िला तो तेरा बड़ी दूर है
कैसे-कैसे यहाँ फंसे हैं जाल में
भुला नहीं पाती हूँ उसको

समद मीर इश्क़ की क्या भेंट लाये, दफ़्तर में–
जगहें सब भर दी गयी हैं
फिर भी जगह एक खाली है वहाँ पर
भुला नहीं पाती हूँ उसको

इश्क़ में यह दिल मेरा होश गंवा बैठा है
भुला नहीं पाती हूँ उसको ।

नोट : यह गीत पहली बार प्रकाशित हो रहा है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

कश्मीरी :

१. अमीन कामिल : सूफ़ी शायरी (भाग ३)

२. अमीन कामिल,
अख़्तर मुहीउद्दीन : सोन अदब १९५९

३. शफ़ी शौक़ : कोशिरि अदबुक तोरीख़

४. मोतीलाल साक़ी : कुलयात-ए-समद मीर

उर्दू :

१. शीराज़ा : मई १९६४

२. सरदार जाफ़री : कबीर बानी

अंग्रेजी :

१. बांके बिहारी : सूफ़ीज़ ऐंड मिस्टिक्स ऑफ़ इंडिया

२. डॉ. राधाकृष्णन : उपनिषद्ज़

३. फ़तेहुल्लाह मुज्तबा : आस्पेक्ट्स ऑफ़ हिंदू-मुस्लिम रिलेशनशिप्स

४. जे. स्पिन्सर ट्रिमिंघम : द सूफ़ी ऑर्डर्स इन इस्लाम

५. वुडरोफ़ : ए गारलैंड ऑफ़ लेटर्स

16 Drama/Skit/Play	12	1	3	-	1
17 Science Quiz	7	9	1	-	-
18 Science Exhibition	5	3	3	1	5
19 Elocution	12	3	-	1	1
20 Youth Parliament	15	-	-	1	1
21 World Aids Day	14	-	1	-	2

In was seen that in the activities like Population Education, Pulse Polio, tree plantation, music and science exhibition more than 15 students are sent by more than 18 government schools In other activities the number of participating children is very less As far as private schools are concerned 7 schools send more than 15 students for tree plantation, 6 schools send children for dance and 6 schools send children for drawing and painting competition In 5 schools more than 15 children take part in science exhibition and pulse polio programme

Percentage of Scores Obtained

Table No. 14 - Number of Government Schools (including KVs) according to Percentage of Scores Obtained

Scores	Number of Students					
	0	1-25	26-50	51-75	More than 75	Total
More than 80%	43	21	1	-	-	65
60 – 80%	14	43	4	1	3	65
40 – 60%	11	17	22	10	5	65
33 – 40%	13	36	12	3	1	65
Below 33%	17	27	10	3	8	65

Table No. 15 - Number of Private (includes Aided and Unaided) Schools according to Percentage of Scores Obtained

Scores	Number of Students					
	0	1-25	26-50	51-75	More than 75	Total
More than 80%	6	7	1	1	3	18
60 – 80%	2	8	3	2	3	18
40 – 60%	3	6	8	1	-	18
33 – 40%	6	9	1	1	1	18
Below 33%	8	8	1	-	1	18

The above tables indicate that in none of the government schools more than 50 students secured more than 80% marks in their class X examination In 4 private schools more than 50 students have been able to secure more than 80% marks

School Expectations from the Students

The schools were asked as to what their expectations were from the students in class X By and large it was seen that good results were expected by almost all the schools However, the schools also added some more expectations like development of good moral values and good conduct in the students Some private unaided schools expect to develop career consciousness among students so that they can lead a successful professional life One or two schools also talked about the holistic development of students along with the development of qualities like respect for teachers and elders Some private schools put premium on hard work by the students The following table shows the number of schools and their expectations

Table No. 16 - School Expectations from the Students

	Government	Private Aided	Private Unaided
Good Results & High Percentage	53	1	8
Development of Moral Values and Good Conduct	2	-	2
Holistic Development	3	-	5
Hard Work	-	1	1
Career Consciousness	-	-	3
No Response	10	-	1

Teacher Profile

In all 338 teachers from 83 schools participated in the present study There were 112 male teachers and 226 female teachers All these teachers were teaching classes IX and X in the government schools, private aided and private unaided schools The profile of these teachers is as given below

The following table shows the distribution of teachers in different types of schools

Table No. 17 Number of Teachers in Different Schools

	Government	Private Aided	Private Unaided	Total
Male	91	7	[illegible]	112
Female	164	18	[illegible]	226
Total	**255**	**25**	**58**	**338**

Caste/Category of Teachers

Table No. 18 Number of Teachers in Different Categories

	General	SC	ST	OBC	Total
Male	92	11	4	5	112
Female	208	14	3	1	226
Total	**300**	**25**	**7**	**6**	**338**
Percentage	**88.8**	**7.4**	**2.1**	**1.8**	**100.00**

The table shows that 88 8% teachers belong to general category and rest of the teachers are from Schedule Caste, Schedule Tribes and Other Backward Class categories

Subjectwise Distribution of Teachers

The following table shows the subjectwise distribution of sampled teachers

Table No. 19 Number of Teachers Teaching Different Subjects

Subject	Number of Teachers	Percentage
First Language	81	24 0
Second Language	62	18 3
Social Science	66	19 5
Science	64	18 9
Mathematics	65	19 2
Total	**338**	**100 00**

Educational Qualification of Teachers

The following table shows the number and percentage of male and female teachers according to their educational qualifications

Table No. 20 Educational Qualification of Teachers

Highest Educational Qualification	Government		Private Aided		Private Unaided		Total	Percentage
	Male	Female	Male	Female	Male	Female		
Graduate	21	37	-	5	4	3	70	20 7
Post Graduate	64	121	7	12	9	38	251	74 3
M Phil	1	2	-	1	1	1	6	1 8
Ph D	5	4	-	-	-	2	11	3 3
Total	**91**	**164**	**7**	**18**	**14**	**44**	**338**	**100 00**

The data reveals that majority of teachers i e 74% teachers hold post graduate degrees About 21% were graduates Only 3 3% had Ph D qualification

Professional Qualification of Teachers

Table No. 21 Professional Qualification of Teachers

Professional Qualification	Government		Private Aided		Private Unaided		Total	Percentage
	Male	Female	Male	Female	Male	Female		
B Ed	83	146	7	18	12	41	307	90 6
M Ed	8	16	-	-	2	3	29	8 6
No Response	-	2	-	-	-	-	2	0 6
Total	**91**	**164**	**7**	**18**	**14**	**44**	338	**100 00**

Distribution of sampled teachers on the basis of their professional qualification is given in the above table It is evident that a majority of the teachers were B Ed degree holders and very few had M Ed degree

Employment Status of Teachers

The table given below shows the distribution of sampled teachers on the basis of their employment status

Table No. 22 Employment Status of Teachers

Employment Status	Government		Private Aided		Private Unaided		Total	Percentage
	Male	Female	Male	Female	Male	Female		
Permanent	80	144	7	18	11	39	299	89 3
Temporary	10	18	-		2	3	33	9 9
Adhoc	-	2	-		-	-	2	0 6
Part Time	-	-	-	-	1	-	1	0 3
Total	**90**	**164**	**7**	**18**	**14**	42	335	**100 00**

It is evident that the majority of teachers teaching IX and X are holding permanent posts Only 10% teachers are temporary

Teachers Efforts for their Professional Development

The following table shows the number of teachers from different schools that have made efforts for their professional development

Table No. 23 Teachers Efforts for their Professional Development

	Government	Private Aided	Private Unaided	Total	Percentage
Paper submitted for Innovative Practices	15	3	5	23	6 8
Received an Award	6	3	1	10	3
Published an Article	34	2	13	19	11 5
Written a Book	11	1	3	15	4 4
Acted as a Resource Person in a Training Programme	18	-	11	29	8 6

Only a very small percentage of teachers tried for their professional development 49 teachers have published articles and 15 teachers have written books 29 teachers acted as resource persons in training programmes 23 teachers submitted papers for innovative practices and only 10 of them received an award also

Duties Performed Other Than Teaching

The teachers have to carry out a large number of duties other than teaching This is especially true for government teachers because they are sent on duties like election duties, census duties and pulse polio duties The following table shows the distribution of male and female teachers according to different kinds of duties performed

Table No. 24 Duties Performed Other Than Teaching

Duties Performed	Male	Female	Total	Percentage
Ministerial Work	26	19	45	13 31
Pulse Polio Duties	32	33	55	16 27
Election Duties	83	63	146	43 19
Census Duties	89	128	217	64 2
Tree Plantation Duties	61	70	131	38 75
Any Other	37	48	85	25 14

The table shows that maximum number of teachers i e 64% were engaged in election duties and 39% worked for tree plantation duties Apart from this they also carry out ministerial work in the school, Pulse Polio Abhiyan and are engaged in many other multifarious tasks

Availability of Teaching Aids

Various types of aids like teachers' guide, Dictionary, maps, globes, reference books, charts, science laboratory, Encyclopaedias were available to teachers in both government and private schools Encyclopaedias were available to more than 40% teachers

Development of Social Personal Qualities

The teachers were asked as to which social personal qualities they tried to develop among their students on priority basis It was seen that 216 teachers rated discipline as the number one quality Second priority was for developing sense of regularity and

punctuality that was rated as number two quality by 158 teachers Sense of responsibility with an endorsement of 146 teachers got the third place Truth and honesty was rated as fourth priority and respect for elders as fifth by a large number of teachers

Teachers Initiative to Develop Interests Among Students

The language teachers by and large take initiative in developing literary interests like reading, writing, debate etc About 17% science teachers said that they took initiative to develop scientific interests like making charts/models, preparing herbarium and visiting science museum etc It is the language teachers (30%) who seem to take initiative to develop other interests like drawing and painting, music/dance drama and even interests in physical activities like games, sports, gardening, yoga

Subscription to Newspapers and Magazines

A majority of teachers subscribe to daily newspapers Only a negligible percentage of teachers said that they did not subscribe to any newspaper Magazines are also subscribed by a large number of teachers

Organizational Support to Teachers

18 teachers out of 338 admitted that they never got any support from the head of the school 130 teachers pointed out that they never got any support from the Education Officer of the Zone Similarly from State Council of Educational Research and Training (SCERT) 143 teachers never got any support 16 science teachers out of 64 reported that they did not get any support from the Science Branch 97 teachers belonging to different subjects never received any support in their subject areas from the Central Board of Secondary Education (CBSE) However, a large number of teachers claimed that they got support from the above mentioned sources

Student Profile

Profile of sampled students has been discussed below Altogether 2501 students participated in the study of which 1992 belonged to the general category, 370 to the SC, 34 to ST and 105 to OBC categories

Occupation of Parents

Information regarding the occupation of students' parents according to the different school management has been presented in the following table

Table No. 25 Occupation of Parents

Occupation	Government	Private Aided	Private Unaided	Total	Percentage
Professionals	139	19	107	265	10 6
Administrators (Senior)	187	18	84	289	11 6
Businessmen & Traders	420	32	133	585	23 4
Agriculturist	53	-	2	55	2 2
Administrators (Junior)	204	16	31	251	10 0
Skilled/Semi Skilled Workers	297	27	18	342	13 7
Unskilled Workers	267	1	7	275	11 0
Others	629	25	22	376	15 0
Not Responded	48	7	8	63	2 5
Total	**1944**	**145**	**412**	**2501**	**100.00**

The table indicates that a large number of parents are businessmen and traders A very negligible percentage is engaged in agricultural occupation About 14% parents are skilled or semi skilled workers whereas 11% parents are unskilled workers

Educational Level of Father and Mother

The following tables present the educational level of the father and mother of the students

Table No. 26 Educational Level of Fathers

Educational Level	Government	Private Aided	Private Unaided	Total	Percentage
Not Literate	118	8	7	133	5 3
Primary	118	9	4	131	5 2
Upto Class VIII	248	19	6	273	10 9
Upto Class X	385	17	27	429	17 2
Upto Class XII	469	34	57	560	22 4
Graduation	393	33	145	571	22 8
Post Graduation	91	9	71	171	6 8
Professional Qualification	57	15	80	152	6 1
Not Responded	65	1	15	81	3 2
Total	**1944**	**145**	**412**	**2501**	**100.00**

Table No. 27 Educational Level of Mothers

Educational Level	Government	Private Aided	Private Unaided	Total	Percentage
Not Literate	478	20	17	515	20 6
Primary	247	14	8	269	10 8
Upto Class VIII	295	22	17	334	13 4
Upto Class X	339	17	46	402	16 1
Upto Class XII	271	30	59	360	14 4
Graduation	195	22	166	383	15 3
Post Graduation	34	13	58	105	4 2
Professional Qualification	18	3	30	51	2 0
Not Responded	67	4	11	82	3 3
Total	**1944**	**145**	**412**	**2501**	**100 00**

The tables indicate that 22 4% fathers have studied upto class XII and 22 8% have studied upto graduation Around 11% fathers are educated upto primary level and upto 17 2% are educated upto secondary level Only 13% have post graduation or professional qualifications

As far as the educational level of mothers is concerned the percentage of illiterate mothers is 20% Only 14 4% mothers have studied upto class XII and 15 3% upto graduation level In private unaided schools the number of mothers having post graduate or professional qualifications is much more than mothers of students studying in government and private aided schools

Academic Assistance to Students

The information collected from the students regarding academic assistance they were getting has been analysed and presented in the following table

Table No. 28 Academic Assistance to Students

	Government		Private Aided		Private Unaided	
	Number	Percentage	Number	Percentage	Number	Percentage
Father	684	35 18	52	35 86	211	51 21
Mother	459	23 6	52	35 86	193	16 84
Brother	605	31 12	36	24 82	191	17 08
Sister	472	24 27	39	26 89	110	26 69
Uncle/Aunt	129	6 63	18	12 14	72	17 47
Others	544	27 98	41	28 27	112	27 18

It can be seen from the above table that a larger number of students from private unaided schools get help from their parents and brothers as compared to the students

from government and aided schools 17 5% of these students even get help from their uncle/aunt Perhaps it is so because the students studying in public schools come from a better socio-economic background where the family members are educated In cases where perhaps parents are not well educated but are economically well off, the students get help from their relations

About 27-28% students in all types of schools get help from others, which includes tutors and coaching centres

Scholarships

Among the students who participated in the study some boys and girls had received scholarships in classes VI to VIII and IX and X The following table indicates the number of students receiving scholarships from different sources

Table No. 29 Number of Students Receiving Scholarships from Different Sources

Classes	Source	Boys	Girls	Total
VI to VIII	School	158	371	529
	State	37	74	111
	Any Other	39	46	85
IX & X	School	140	330	470
	State	45	84	129
	National Level	25	24	49
	Any Other	48	58	106

It can be seen from the table that the number of girls receiving scholarships is much higher than the boys But one interesting fact is that at the national level the proportion of boys getting scholarships is higher than the proportion of girls

Prizes in Co-Curricular Activities

The following table shows the number of students who received at least one prize in different co-curricular activities during their schooling from class I to X

Table No. 30 Number of Students Receiving One Prize in Different Co-Curricular Activities

Areas	Activity	Boys	Girls	Total
Literary	Debate	98	196	294
	Elocution	50	72	122
	Recitation	86	245	331
	Quiz	104	214	318
	Essay Writing	134	347	481
	Poem Writing	85	128	213
	Hand Writing	88	229	317
	Any Other	64	128	192

Artistic	Dance	73	281	351
	Drama	98	202	300
	Music	90	288	378
	Drawing & Painting	222	458	680
	Sculpture	26	39	65
	Any Other	19	38	57
Physical	Sports	123	253	376
	Games	112	210	322
	Athletics	72	72	144
	Yoga	59	129	188
	Any Other	30	56	86
Scientific	Model Making	155	316	471
	Science Exhibition	103	205	308
	Robotics	23	16	39
	Any Other	18	24	42

Level of Aspirations of Students

In the students questionnaire the students were asked to what they wanted to be after they completed their education The aspirations of boys and girls from different types of schools are depicted in the following table

Table No. 31 Level of Aspiration of Students

Occupation	Government		Private Aided		Private Unaided		Total
	Boys	Girls	Boys	Girls	Boys	Girls	
Doctor	61	126	1	9	18	16	261
Engineer	79	31	10	1	56	23	200
Teacher	115	741	10	16	2	16	900
Other Professional (Lawyer Scientist)	27	42	2	4	10	6	91
Accountant	67	153	15	9	22	25	291
Businessman	42	16	15	1	18	1	96
Administrative Officer (MBA IAS Government Job)	41	35	7	1	18	21	126
Defence Services	71	17	3	-	16	-	107
Police Officer	62	36	2	-	1	-	101
Artist (Acting, Fashion Designer, Interior Decorator)	4	55	-	5	2	11	77
Sportsman	13	1	2	-	3	-	19
Journalist	2	7	-	3	1	3	16
Air Hostess	-	37	-	3	-	2	12
Pilot	5	2	2	-	4	2	15
Computer Operator	1	11	-	-	-	1	13
Nurse	-	16	-	1	-	-	17
Others (Social Worker, Hotel Management, Leader Steno Tour Operator Researcher)	8	8	1	1	5	3	26
No Response	80	104	20	8	21	31	267

The table reveals that maximum number of students, both boys and girls from government schools want to be teachers In aided schools also a sizeable number of students want to be teachers A unique phenomena in government schools was that a number of boys and girls wanted to be police officers. This was almost absent in other schools Other professions that the girls from the government schools preferred were fashion designing/interior decoration/air hostess and nursing These were not preferred by the girls from other schools A large number of boys and girls from unaided schools wanted to be doctors or engineers with accountant in close pursuit 126 students from all the different schools also prefer white collar jobs and want to become bureaucrats or executives in private firms A very negligible number of students want to take up professions like pilot, sportsmen, hotel management, journalist, computer operator etc

Parent Profile

2501 students from different schools participated in the study but the parents questionnaire could be collected only from 2392 parents They were as follows –

Table No. 32 – Profile of Parents

Parents from	No.
Government Schools	1909
Private Aided Schools	123
Private Unaided School	360
Total	**2392**

The following table shows the occupational profile of the parents

Table No. 33 – Parent Occupation

Occupation	Number	Percentage
Professionals	235	9 8
Administrative (Senior)	270	11 3
Businessman & Traders	521	21 8
Agriculturists	60	2 5
Administrative (Junior)	250	10 5
Skilled and Semi Skilled Workers	319	13 3
Unskilled Workers	262	11 0
Others	358	15 0
No Response	117	4 9
Total	**2392**	**100.00**

The table indicates that a large number of parents belong to the business and traders community Around 10% parents are professionals, 11 3% are senior executives and 10 5% belong to Junior cadre of administration Delhi being largely an urban area a very low percentage of parents (only 2 5%) are engaged in agricultural occupation 4 9% parents have not provided this information

Number of Parents Attending Parent Teacher Association Meetings

Table No. 34 – Number of Parents Attending Parent Teacher Association Meetings

Parent Occupation	Frequency of Attending PTA Meetings			
	Rarely	Sometimes	Always	Total
Professionals	88	56	82	226
Administrative (Senior)	104	89	63	256
Businessmen & Traders	258	159	72	489
Agriculturists	34	20	2	56
Administrative (Junior)	124	65	33	222
Skilled and Semi Skilled Workers	177	122	6	305
Unskilled Workers	138	98	3	239
Others	196	127	10	333
Total	**1119**	**736**	**271**	**2126**
Percentage	**52.6**	**34.6**	**12.7**	**100.00**

It is evident from the table that about 47% parents attended the Parent Teacher Association Meetings sometimes or always A large number of parents did not or rarely attended these meetings

Parents Going to School on their Own

Table No. 35 – Parents Going to School on their Own to Know About their Child's Progress and the Management of the School

School Management	Yes	No	Total
Government	1394	515	1909
Private Aided	77	46	123
Private Unaided	192	168	360
Total	**1663**	**729**	**2392**
Percentage	**69.5**	**30.5**	**100.00**

According to the table 69 5% parents go to the schools on their own to talk to the teachers about their child's progress Out of the total parents, from government schools 73% and from private schools 56% parents go to the schools on their own There seems to be a discrepancy in the two responses as shown in the previous table and this table

Satisfaction with the Teaching-Learning Process of the School

Table no. 36 - Satisfaction with the Teaching-Learning Process of the School and Management of the School

School Management	Not Satisfied	Satisfied	Fully Satisfied	Total
Government	98	1033	502	1633
Private Aided	2	80	29	111
Private Unaided	9	234	108	351
Total	**109**	**1347**	**639**	**2095**
Percentage	**5.2**	**64.3**	**30 5**	**100.00**

Only 2095 parents responded to this item and it was seen that 1456 i e 95% parents are satisfied with the performance of the school Only 5 2% parents have registered their dissatisfaction Perhaps this kind of response is due to our social set up and mental attitude wherein the parents do not want to go against the school where their children study It may also be due to the fact that people are by and large happy and satisfied with the conditions in which they are living and their attitude is, "whatever is available is good"

Impact of School related Variables on Learning Achievement of Students

On the basis of the analysis of the school questionnaire nine variables, namely, physical facilities, rating of infrastructure facilities by the Principal, school management, evaluation practices at class X, guidance and counselling, school hours (average time in minutes), computer facilities, teachers, availability for different subjects and involvement of management were identified after regression analysis with the criterion variables, i e, mean achievement of students, overall pass percentage of schools and the average school achievement separately The following table shows their influence

Table 37

Regression and correlation coefficient of the predictors of school related variables with criterion variables

Sl No	Criterion / Variables	Mean Achievement of Students		Overall Pass Percentage		Average School Achievement	
		Reg. Coefficient	Correlation	Reg. Coefficient	Correlation	Reg. Coefficient	Correlation
1	Constant	14 573		46 584		0 172	
2	Physical Facilities	0 231	0 435	0 432	0 110	-	--
3	Rating of Infrastructure facilities by the Principal	-		-		4 753	0 465
4	School Management	5 425	0 484	-		6 768	0 395
5	Evaluation Practices at Class X	-		-		1 912	0 285
6	Guidance & Counselling Facilities	1 429	0 336	-		2 304	0 392
7	School Hours (Average Time in minutes)	0 092	0 388	-		-	
8	Computer Facilities	0 590	0 363	-		-	
9	Teachers Availability for different subjects	-3 043	-0 084	-		-	
10	Involvement of Management	-		6 096	0 318	2 456	0 315
	R^2	**0.624**		**0.237**		**0.241**	

The physical facilities, school management, guidance and counselling activities, school hours, computer facilities, availability of teachers for different subjects in school influence the learning achievement of students Among these physical facilities, school management, guidance and counselling facilities, school hours and computer facilities are positively associated with the dependent variable indicating that these factors help in enhancing learning Schools with better physical facilities, guidance and counselling facilities, longer working hours and computer facilities and privately managed schools have shown better results It has been seen that the Government schools are by and large low performing schools

A surprising factor that has come out in the analysis is that availability of subject teachers in the classroom is negatively associated with achievement level It indicates

that students take outside help to supplement their studies which may be from private tutors or coaching centers, etc

All the six predictors explain 62 4% of total variance of which the physical facilities contribute the highest, i e , 39 2%, 7 8% by school management, 6 4% by guidance and counselling, 3 8% by school hours and 2 7% by computer facilities as shown in the following table

Table 38
Percentage Variance explained by each Predictor on the Mean Achievement of Students

Predictors	Percentage Variance
Physical Facilities	39 2
School Management	7 8
Guidance and Counselling	6 4
School Hours	3 8
Computer Facilities	2 7
Availability of Teachers in Different Subjects	2 5
Total	**62.4**

The table reveals that availability of physical facilities like pucca building, separate staff room, sufficient number of classrooms, separate rooms for art, music work experience etc , laboratories, clean toilets, availability of workable black boards and seating arrangement with single or duel desks provide a conducive environment for learning This has emerged as the most important factor for effectiveness of a school Guidance and Counselling and Involvement of Management through financial support, organizing staff development programmes and giving scholarships to meritorious students in order to motivate others has also shown positive correlation with overall pass percentage and average achievement of school It was seen that out of 12 private schools 9 schools give scholarship to their bright student and organize staff development programmes The number of such government schools is only 17 out of 65 It was seen that the facility of trained counselor was available only in 13 government schools whereas in private unaided schools it was available in 8 out of 12

schools The counselling sessions which are availed of by more than 70% students in these schools show that this facility helps in enhancing learning

Schools hours also play an important role in improving learning The following table shows the average school time in minutes for different categories of schools

Table 39 Average School Time in Minutes

School	Time
Government	329 minutes
Private Aided	332 minutes
Private Unaided	350 minutes

According to the table only 20 minutes are more in the private unaided schools But this small variation in timings has positively contributed to achievement

While considering the average school achievement as dependent variable it was observed that evaluation practices at class X also influence the learning of students The schools which carry out monthly tests regularly achieve better than the schools where no such tests are held

Impact of Teacher Variables on Learning Achievement of Schools

Teacher variables like teachers' attitude towards students, duties performed by teachers other than teaching, professional development of teachers, school climate, teacher qualifications and their status and teaching strategies influence the learning achievement of students in the school The following table shows the influence of these variables on the three criterion variables

Table 40
Regression coefficient and correlation coefficients of the predictors of teacher related variables with criterion variables

Sl. No	Criterion / Variables	Mean Achievement of Students		Overall Pass Percentage		Average School Achievement	
		Reg. Coefficient	Correlation	Reg. Coefficient	Correlation	Reg. Coefficient	Correlation
1	Constant	22 00		48 246		22 209	
2	Teacher Attitude towards students	1 395	0 294	3 039	0 290	1 747	0 302
3	Duties performed by teachers other than teaching	-1 867	-0 279	-1 969	-0 152	-1 493	-0 181

4	Professional development of teachers	0 880	0 192	2 017	0 185	-	-
5	School Climate	-0 469	-0 143	-0 981	-0 131	-	-
6	Teacher qualification and status	1 349	0 078	-	-	-	-
7	Teaching strategies	-	-	-0 797	-0 030	-	-
	R^2	**0.216**		**0.158**		**0.124**	

The table reveals that teacher attitude towards students, professional development of teachers and teacher qualifications and status are positively associated with the criterion This indicates that high expectation of teachers from students, their own efforts to develop their qualifications and knowledge help the students in improving their learning achievement

It is also indicated by the analysis that the duties performed by teachers other than teaching and not so congenial climate of schools contribute negatively to the learning achievement which means these factors bring down the achievement of students The teachers in our school system have to take up a number of duties like ministerial work, duties during elections and census, duties for carrying out campaigns like pulse polio and tree plantation, etc Such duties hamper the teaching work in school and as a result the teaching process suffers

The organizational climate plays an important role in making a school effective The teachers, though have positively responded to the questions regarding congenial climate in school perhaps because of social norms, the analysis has shown that it has negatively contributed to learning This can be interpreted that most of the schools do not enjoy a very congenial climate and therefore the achievement level of students is low

The table also indicates that teaching strategies affect the overall pass percentage of schools The negative association of this variable indicates that the teachers do not follow appropriate teaching strategies which help in improving learning Schools where teachers prepare and plan their lessons, where home assignments are given to the students and where students are tested from time to time and their difficulties are solved, tend to have better results than the schools where these teaching strategies are

missing This finding is also corroborated by the analysis of school questionnaire wherein evaluation practices has emerged as one of the factors influencing achievement In this way process variables like teaching strategies and evaluation practices are important in making a school an effective school

The predictors explain 21 6% of total variance of the criterion – Mean Achievement of Students When we consider the overall pass percentage of the school as criterion the predictors explain 15 8% of variance As far as the average school achievement is concerned, the predictors explain 12 4% of the total variance

The teachers have positively replied regarding the leadership provided by the principals However, the analysis has not shown any significant relationship of leadership by the principal with the academic achievement of students It may be inferred that whatever leadership is being provided by the principals in schools is not helping in better performance of the students

An important variable that was included in the teacher questionnaire was the in-service teacher training This variable did not turn out to be significant enough in influencing learning achievement of students This indicates that the in-service training and the organizational support provided by institutions like SCERT and CBSE is not adequate and effective

Impact of Student Variable on Learning Achievement of Students

The analysis of student questionnaire shows that seventeen variables namely, socio-economic status, overall impressions of school, perception about teachers, number of siblings, teaching in school, helping parents at home, hours spent on studies in class X, scholarships won, reading habits, perception about school climate, perception about school, helping parents at work place, time spent on internet, guidance and counselling, school regularity and class activities influence the achievement of students in class X The following table shows the contribution of these factors in the achievement of students

Table 41

Regression and Correlation Coefficient of Predictors of Student Related Variables with the Criterion Variable, i.e.Percentage of Marks in Class X

Sl. No.	Variable	Regression Coefficient	Correlation
1	Constant	32 781	
2	Index of socio-economic status	0 366	0 483
3	Overall impression of school	-1 587	-0 322
4	Perception about teachers	1 003	0 151
5	Number of siblings	-1 918	-0 294
6	Teaching in school	0 536	0 165
7	Helping parents at home	-0 124	-0 213
8	Hours spent on studies in class X	7 598	0 132
9	Help in studies	-0 664	0 047
10	Scholarships won	1 077	0 052
11	Reading Habits	0 360	0 209
12	Perception about school climate	-0 544	-0 135
13	Perception about school	0 610	0 165
14	Helping parents at work place	-9 807	-0 163
15	Time spent on Internet	0 825	0 247
16	Guidance and counselling	-0 602	-0 111
17	School regularity	0 801	0 021
18	Classroom activities	-0 193	-0 023
	R^2	0.378	

The socio-economic status (SES) of the students, perception about teachers, teaching in schools, hours spent on studies, scholarships won, reading habits, perception about school, time spent on internet and school regularity contribute positively to the learning of students It indicates that these factors help in enhancing learning achievement

On the other hand factors like overall impression of the school, number of siblings, helping parents at home, perception about school climate, helping parents at work place, guidance and counselling in school and classroom activities negatively contribute to the performance of students

It may be observed that SES is universally accepted as a strong indicator of performance by students in school "Measure of socio-economic status (SES) such as parental education and occupation are related to most schooling outcomes" (Willms, 1992) Higher the SES, better is the achievement level Thus, effectiveness of a school many times depends on its inputs in terms of the students' SES Involvement of teachers with teaching, students' positive perception of teachers, hours spent in studies and regularity in school also contribute in enhancing learning achievement

On the other hand helping parents at home and at their work place interferes with learning Similarly it has come out from the analysis that number of siblings creates disturbance in studies of the secondary school students and this is negatively contributing to their achievement It seems that the students with low achievement have indicated their satisfaction with their school climate and with the classroom activities Their overall impression of the school is also good On the other hand high achievers have shown their dissatisfaction with their school and the classroom activities This finding is similar to the finding from the teacher questionnaire School climate has emerged as a negative factor in both the student and teacher questionnaires This indicates that though both teachers and students claim that the climate of the school is good, it is in fact not conducive to learning It seems that the classroom activities are neither adequate nor appropriate to contribute to learning

Impact of Parent Variables on Learning Achievement of Students

On the basis of the parent questionnaire four input variables, namely, parent occupation, parents' involvement in schooling, parents' satisfaction with teaching learning process in school and overall rating of the school given by parents were identified for regressing with the criterion variable, namely, the percentage of marks of students in class X The following table shows the significant factors influencing the learning achievement

Table 42

Regression and correlation coefficients of predictors of parent related variables with criterion variable, i.e. percentage of marks in class X

Sl. No.	Variables	Regression Coefficient	Correlation
1	Constant	32 136	----
2	Parents' Occupation	2 259	0 258
3	Parents' involvement in schooling	1 319	0 057
	R^2	0.090	

The table indicates that parents' occupation and parents' involvement in schooling influence the learning achievement The positive association of these two variables with the criterion indicates that parents', occupation and their active involvement in the schooling of their wards help the children to achieve better The predictors explain 9% of the total variance with the criterion

In the sample the parents belonging to occupations like professionals (doctor, engineer, teacher, librarian, scientist, author, accountant, artist), administrators (senior) like gazetted officers, defence services, business executives, administrative officers and businessmen and traders like proprietors of small and large business wholesalers, contractors and shopkeepers are 43% These are the parents who are worried about the learning outcomes of their children and therefore they involve themselves in the day-to-day schooling process

By and large parents are not satisfied with the teaching learning process carried out in schools as it has not emerged as a significant factor

Impact of Non-Scholastic Areas

Table 43

Regression and Correlation Coefficient of student related variables for Non Scholastic Areas with the Criterion variables

S. No.	Criterion / Variables	Mean Achievement of Students		Overall Pass Percentage		Average School Achievement	
		Regression Coefficient	Correlation	Regression	Correlation	Regression	Correlation
1	Constant	47.822	-	61.034	-	40.689	
2	Involvement of Students in Co-curricular Activities	0.015	0.429	-	-	-	
3	Sense of Responsibility	1.509	0.317	-	-	-	
4	Involvement of Students in Sports and Games	-	-	.050	0.282	.037	0.40
	R2	0.241		.282		0.164	

Non-scholastic areas like involvement of students in co-curricular activities, sense of responsibility and involvement of students in sports and games influence the learning achievement of students They are positively associated with the criterion This reveals that these variables help in enhancing the learning achievement of students

As far as the co-curricular activities are concerned, they comprised activities like debate, elocution, community singing, recitation, skits/plays, quiz, dance/drama, science exhibition, literacy club, art and music Since most of these activities are directly related to scholastic areas, students' involvement in these activities also helps in their learning attainment

Sense of responsibility was one of the social personal qualities which is found to be associated with the learning outcomes This quality has emerged out of fourteen social personal qualities perhaps because this is the only one which helps children in realizing the importance of studies in life and in shaping their future These two variables explain 24 1% of total variance

The third non-scholastic variable which has shown some impact on student learning is their involvement in sports and games This variable has shown positive association with the criteria overall pass percentage of the school and average school

achievement It seems that the sports and games are important in students life as they help them to relax from the studies during school hours It also provides relief from the stress of studies After the games and sports the students can come back to their studies with fresh mind

This variable explains 28 2% of total variance with overall pass percentage whereas with average school achievement it explains 16 4% variance

It was seen that when the schools were asked to rate any five social personal qualities that they try to develop on priority basis, discipline emerged at the top followed by regularity and punctuality and habits of cleanliness But these qualities showed weak and negative relationship with the learning achievement of students This means that the schools in Delhi do not do much about the development of these qualities though they claim to do so This might be one of the reasons of poor performance of the Government schools

Inference:

It could be inferred from the above analysis that there are a number of factors which influence effectiveness of secondary schools of Delhi Their presence or absence in the government school system causes the ineffectiveness of these schools The lack of appropriate infrastructural facilities lack of leadership from the principal less school hours absence of good evaluation practices and constant monitoring of student learning absence of organizational support from institutions like SCERT CBSE Directorate of Education Science Branch etc involvement of teachers in duties other than teaching absence of good teaching strategies and adequate and appropriate class activities coupled with the students poor socio-economic background and their parents' lack of interest in schooling result in poor performance of government school students in Class X Board examinations and in turn help in making these schools ineffective schools Given the fact that the intake of these schools is from low socio- economic background, these schools belie the trust of educationists that the school adds some extra value to the characteristics of its intake and brings out a finished product as a result of its inputs and processes Though the private schools have shown better performance in this analysis but at the same time it can be argued that their intake is also much better as far as the socio-economic status of students and their parents' occupational and literacy status are concerned

Chapter VII

Major Findings and Implications

Descriptive Analysis of Sample Characteristics

School Characteristics

1. Majority of the teachers in the secondary schools of Delhi were trained
2. The medium of instruction in Government Schools was mostly Hindi or both Hindi and English In Private schools it was largely English
3. In government schools no weightage is given to monthly/unit tests and students are not evaluated for co-scholastic areas In private unaided schools monthly/unit tests are given weightage along with other examinations Students are evaluated on co-scholastic aspects and grading in these aspects is provided in report cards
4. Library facilities were available in all the schools and a majority of the schools had trained librarians and the facility of issuing books
5. Computer facilities were available in all the private unaided schools. In a large number of government and private aided schools no computer facility was available
6. In majority of Government schools the students did not win any State level or national level scholarships In private schools only one school had bagged state level as well as national level scholarships
7. Different kinds or co-curricular activities are organized in schools but very few students participate in them
8. Private schools have longer teaching hours than government schools
9. Among the inter school competitions Population Education, Pulse Polio, Tree Plantation, Music and Science Exhibition are the competitions which are more popular in schools

10. In private schools the level of achievement of students was better than the Government schools

Teacher Characteristics

1. Majority of the teachers belonged to the general category
2. Majority of the Teachers were trained post graduate
3. Large number of teachers were employed as permanent teachers
4. Very small percentage of teachers had published articles or had written books
5. Teachers have to perform multifarious tasks apart from teaching
6. Different kinds of teaching aids relevant to their subject were available to teachers in both government and private schools
7. Discipline, regularity and punctuality and sense of responsibility are the qualities that most of the teachers claim to develop among students
8. Newspapers and magazine are subscribed by a large number of teachers
9. A large number of teachers did not get support from their Zonal Education Officer or SCERT

Student Characteristics

1. Most of the students belonged to middle and lower middle classes
2. The educational level of the students father was better than their mothers
3. Fathers were providing more academic assistance than others in the family
4. Very few students had won scholarships and prizes in different co-curricular activities

Parent Characteristics

1. Most of the parents belonged to businessmen and traders, administrative (junior), skilled and semi skilled workers class Only a small number were engaged in professional and administrative occupations
2. A large number of parents never or rarely attend PTA meetings
3. A large number of parents claimed to be satisfied with the schools of their children

Factors Influencing Learning Achievement of Students

School

1 Physical facilities were found to be the most important factor for effectiveness of a school Availability of good facilities provides a conducive environment for learning

2 School management effected the learning achievement Students in privately managed schools, achieved higher than the government schools

3 Longer school hours help in better learning

4 Computer facilities and guidance and counselling facilities also contributed to the achievement

5 Active involvement of school management by way of financial support, organizing staff development programmes and giving scholarships to meritorious students showed positive influence on achievement of the school

6 Evaluation practices at class X wherein monthly tests are regularly organized also helped in better learning of students

7 Availability of subject teachers in the classroom was found to be negatively associated with achievement level, indicating that the students took outside help to support their studies.

Teachers

1 Teacher's positive attitude towards students i e. their high expectations from the students motivated the students to learn better

2 Teacher's efforts to develop their qualifications and knowledge had a positive effect on students learning.

3 Teacher's qualifications and status were also found to be positively associated with learning achievement

4 Duties performed by teachers other than teaching hampered the learning of students

5 Organizational climate was found to affect learning It was seen that where the climate was not so congenial the students performed poorly

6 Teaching strategies like preparation of lessons, giving home assignments, frequent testing and solving difficulties helped the students to achieve better

Students

1 Socio economic status of the students was found to be an important input variable which effected learning

2 Helping parents at home and work place negatively affected the learning achievement

3 Number of siblings also hampered studies

4 Most students did not find the school climate very congenial

5 Hours spent on studies in Class X and reading habits of the students helped in achieving better

6 School regularity, active involvement of teachers in teaching and students positive perception of teachers contributed in enhancing learning achievement

7 Classroom activities were found to be inadequate in most of the schools

Parents

1 Parents occupation was found to effect learning positively The children of professionals, senior administrators and businessmen and traders achieved better than the children of other parents

2 Parents involvement in schooling influences the learning achievement

Impact of non-scholastic areas

1 Sense of responsibility among students helped in better learning

2 Involvement of students in co-curricular activities also helped in enhancing achievement level

3 Involvement of students in sports and games helped in increasing the average achievement, perhaps because sports and games help in relaxation

Thus the factors that influence the effectiveness of secondary schools of Delhi in nut-shell are as follows as far as the input and process variables are concerned

Input Variables

School

- Infrastructure facilities
- Management of the
- Long school hours
- Computer facilities
- Guidance and Counselling
- Involvement of management in schooling processes

Teacher

- Teacher's positive attitude and high expectations from students
- Teacher qualifications and status
- Teacher's efforts for their professional development
- Organizational Climate
- Duties performed by teacher other than teaching

Students

- Socio-economic status of students
- Helping parents at home
- Number of siblings
- School regularity

responsibility

perception about teachers

occupation

involvement in schooling

g strategies

on practices

om activities

pent by students on studies

's involvement in co-curricular activities

's involvement in sports and games

f the study have significant implications for improving the secondary
n The implications are discussed in different segments for the purpose
It is evident that these interventions should be school based and
in order to make the school more effective

is the head of the school and incharge of all administration The
vided by the principal facilitates schooling process and sets the tone of
was observed that where the leadership was strong the schools were
er Therefore, the principal should cooperate with teachers, provide
idemic matters, encourage and support the teachers to apply innovative
ing He/she should be democratic in his/her approach and discuss
with the staff and try to solve their problems He/she should also
classroom teaching periodically and make sure that the classes do not
t a teacher

The principal should also feel concerned for the students' progress in school and express his/her expectations to both the teachers and students from time to time in order to motivate them

Teachers

- It has emerged from the study that involvement of teachers with teaching and with the learning of students help in better achievement Therefore, the teachers should feel more involved with the teaching and learning process

- Teaching strategies like preparing and planning the lesson before hand, asking the students to come prepared for the next lesson, giving homework and checking it regularly, making sure that all children understand what they teach and solving the difficulties help in improving learning in the classroom Testing students from time to time, diagnosing their weaknesses and providing remedial instructions is very important for improving learning achievement of students

- Appreciating students from time to time and stimulating the development of personal social qualities like sense of responsibility, school regularity, developing reading habits contribute a lot in their learning

Administrators

- Good infrastructure facilities have resulted in better learning by the students

- Administrators should try to plan and provide better physical facilities in the schools of Delhi The facilities should be well maintained as it was seen that the poorly maintained schools did not show good results

- Close monitoring of the working of schools is required in order to keep the schools, principals and teachers active and alert

- Academic support from the organizations like SCERT and CBSE and from the Directorate of Education should be strengthened

Limitations of the Study

1 Due to the time constraint data had to be collected from Class X students so that their marks of Class X Board Examination could be taken up as criterian The ideal situation would have been to collect the data from the present class X students, and collect their marks after the Board examinations in July, 2004 But that would have delayed the study by one year

2 Failed students could not be contacted as they had dropped out of the school on their own full will in some schools and some schools did not allow the failures to attend classes

3 Girls' schools figured more in the sample than the boys' schools perhaps because the boys' schools were in the afternoon shift and the girls' schools were in the morning shift So inadvertently when the researchers reached a school in the morning, they took the data from the girls' schools

Chapter – VIII

Suggestions

1 Secondary school reforms should shift the emphasis to the principals and their ability to provide leadership both academically and administratively Training in educational administration may be provided to all the principals

2 During the academic session, teachers should not be engaged in multifarious out of school activities like election duties, pulse polio duties and census duties etc Their main job is teaching and they should be allowed to pursue it with full concentration and commitment

3 A minimum level of physical facilities should be provided for every government and government-aided school These should include –

- Complete classrooms with single or duel desks for students, lights and fans
- Sufficient number of clean toilets for students and staff
- Computer facilities for students.
- Playground and other sports equipment

4 A well designed policy for evaluating students in both scholastic and co-scholastic areas should be worked out by the Government of Delhi and should be implemented in schools

5 The school hours for government schools should be increased at least by half an hour This may be utilized in solving the problems of students and giving more learning inputs The extra period may also be used for providing remediation to weak students

6 Adequate and meaningful classroom activities and appropriate teaching strategies should be employed by the teachers while teaching different subjects in order to improve the learning of students

7 Efforts should be made to inculcate a sense of responsibility in the students They should be motivated to put in extra time for studies

8 Academic support from organizations like SCERT and the Directorate of Education should be strengthened for the professional development of teachers At the same time the working of the schools be supervised and monitored rigorously at regular intervals

9 Facilities of more sports and games and co-curricular activities should be provided in schools and more and more students should be involved in these activities

References

Arora, G L , Ranjan, S (1984) "School Effectiveness A Study" SCERT, New Delhi

Brookover, W Beady, C, Flood, P Schweitzer, J & Wisenbaker, J (1979) School Social Systems and Student Achievement Schools Can Make a Difference, New York Praeger

Caldwell, B (1995) 'The Provision of Education and the Allocation of Resources', in Evers, C and Chapman, J (Eds) Educational Administration An Australian Perspective, Sydney Allen and Unwin

Caldwell, B and Misko, J (1983) The Report of the Effective Resource Allocations in Schools Project, Hobart Centre for Education, University of Tasmania

Caldwell, B and Spinks, J (1986) Policy Making and Planning for School Effectiveness Hobart Department of Education

Caldwell, B and Spinks, J (1988) The Self Managing School, Lewes, Sussex Falmer Press

Caldwell, B and Spinks, J (1992) Leading the Self Managing School, Lewes, Sussex Falmer Press

Caldwell, B J and Hayward, D K (1998) The Future of Schools Lessons from the Reform of Public Publication, London Falmer Press

Carasco, J F, J C Munene, D H Kasente, Mathew Odada (1996) Factors Influencing Effectiveness in Primary Schools, A Baseline Study, Ugand National Board, Kampala

Coleman, J S , Campbell, E Hobson, C Mc Partland J Mood, A, Weinfield, F & York, R (1966) Equality of Educational Opportunity, Washington US Government Printing Office

Creemers, Bert, P M (1995) Educational Effectiveness for Different Students Groups, Paper presented in the International Seminar on School Effectiveness and Learning Achievement at Primary Stage, NCERT, New Delhi

Edmonds, R (1979) Effective Schools for the Urban Poor, Educational Leadership 37, (1) 15-27

Education Committee (1996) Consultation Paper The Stages of Schooling in Core Funding, Melbourne Directorate of School Education

Halpin, A W (1966) Theory and Research in Administration, Mac Millan Company, New York

Hyde N and Werner, T (1984) The Context for School Improvement in Western Australian Primary Schools, Paris OECD/CERI Report for the International School Improvement Project

Lakshminarayana, U, Shinde, A S N R , Lalitha, P R (2000) "Motivation and Classroom Practices as Indicators of School Effectiveness" in Studies on Research in School Effectiveness at Primary Stage International Perspective NCERT, New Delhi

McGaw, B , Piper, J , Banks, D and Evans, B (1992) Making Schools More Effective, Hawthorn, Victoria Australian Council for Educational Research

Mellor, W and Chapman, J (1984) Organisational Effectiveness in Schools' Educational Administration Review, 2, pp 25-36

Mortimore, P (1991) The Nature and Findings of School Effectiveness Research in the Primary Sector in S Riddell & Brown (Eds) School Effectiveness Research Its Message fro School Improvement, London HMSO

Mortimore, P , Sammons P , Stoll, L , Lewis D , & Ecob, R (1988) School Matters The Junior Years Wells Open books

Nair, P V (2000)"A Comparative Study of Classroom Climate in DPEP and Non-DPEP Schools of Kerala" in studies on Research in School Effectiveness at Primary Stage International Perspective NCERT, New Delhi

Rao, K G (1999) "A Study of the Relationship Between Community Participation and School Effectiveness" in Studies on Learning Organisation, Community Participation and School Effectiveness at Primary Stage, International Perspective NCERT, New Delhi

Rath, K B (1996) Effect of Schooling Process on Learning Outcome, Regional Institute of Education, Ajmer (Xeroxed)

Reynolds, D & Creemers, B (1990) School Effectiveness and School Improvement A Mission Statement, School Effectiveness & School Improvement, 1, (1) 1-3

Reynolds, D (1976) The Delinquent School in P Woods (Ed) The Process of Schooling, London Routledge & Kegan Paul

Reynolds, D (1982) The Search of Effective Schools, School Organization, 2, (3) 215-237

Rutter, M Maughan, B, Mortimore, P & Ouston, J (1979) Fifteen Thousand Hours Secondary Schools and their Effect on Children, London Open Books

Rutter, M Maughan, B, Mortimore, P & Ouston, J (1979) Fifteen Thousand Hours Secondary Schools and their Effects on Children, London Open Books

Saxena, R R , Satvir Singh, J K Gupta, (1996), School Effectiveness and Learner's Achievement at the Primary Stage, A Baseline Beneficiary Study in 43 DPEP Districts, NCERT, Vikas Publishing House, New Delhi

Scheerens, J (1992) Effective Schooling Research, Theory and Practice, London Cassell

Shukla, S , Garg, V P , Jain, V K , Rajput, S , Arora, O P , (1994) Attainments of Primary School Children in Various States NCERT, New Delhi

Singh A , Jain, V K , Gautam, S K S , Kumar, S (2004), Learning Attainment at the End of Class V , NCERT, New Delhi

Srivastava, A B L (2000), Internal Efficiency of Primary Education in Phase I DPEP Districts, in Studies on Researches in School Effectiveness at Primary Stage - International Perspective, NCERT, New Delhi, 2000

Teddlie, C & Stringfield, S (1993) Schools Makes a Difference Lessons Learnt from a 10 year Study of School Effects, New York Teachers College Press

Townsend, T (1998) 'Resource Allocation,' in Townsend T (Eds) Primary School in Changing Times The Australian Experience, London and New York Routledge

Van de Grift, W (1990) Educational Leadership and Academic Achievement in Secondary Education, School Effectiveness and School Improvement, 1,1, pp 26-40

Van de Grift, W and Houtveen, T (1991) 'Principals and School Improvement', School Effectiveness and School Improvement, 2,1, pp 53-70

Veenman, S , Lem, P , Roelofs, E , & Nijssen, F (1992) Effective Instruction and Adequate Classroom Management Amsterdam Swets & Zeitlinger

Vermeulen, C J (1987) Educational Effectiveness in Seventeen Educational Priority Schools in Rotterdam

Werf, M P C Vander, Nitert, E M , & Reezigt, G J (1994) Effective and Less Effective Primary Schools for Immigrant Students Groningen GION

Werf M P C Vander (1995) The Educational Priority Policy in the Netherlands Content, Implementation and Outcomes Den Haag SVO

Willms, J D (1992) Monitoring School Performance A Guide for Educators, The Falmer Press, London

APPENDICES

Appendix I

List of Sampled Schools Including Private Aided and Private Unaided Schools

istrict – Central & East

1. Kendriya Vidyalaya, AGCR Colony, Karkardooma
2. Chowgule Public School, Karol Bagh
3. Mother Teresa Public School, Preet Vihar
4. Government Boys Senior Secondary School, Rani Jhansi Road
5. Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School, Rouse Avenue
6. Government Girls Senior Secondary School No 1, Pahar Ganj
7. Swami Dayanand Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Old Rajinder Nagar
8. Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School No 1, Shakarpur
9. Government Girls Senior Secondary School No 2, Bhola Nath Nagar, Shahadra
10. Government Girls Senior Secondary School, Kailash Nagar
11. Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, No 1, Shakarpur
12. Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Dallupura
13. DAV Senior Secondary School No 1, Gandhi Nagar

istrict – North

14. Kendriya Vidyalaya, Gole Market
15. Kala Niketan Senior Secondary Bal Vidyalaya, Shahadra
16. St Angels School, Rohini
17. Government Girls Senior Secondary School No 1, Shakti Nagar
18. Government Girls Senior Secondary School No 2, Shakti Nagar
19. Government Boys Senior Secondary School No 2, Yamuna Vihar
20. Government Boys Senior Secondary School, Gokalpur Village
21. Sarojini Naidu Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Gokalpuri

22 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Mansarovar Park, Shahadra

23 Government Girls Senior Secondary School No 2, Yamuna Vihar

24 Government Boys Senior Secondary School, Pandara Road

25 Government Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Tikri Kalan

26 Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School, Shalimar Bagh

27 Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Shalimar Bagh

28 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, GTB Nagar

29 Government Boys Senior Secondary School, Jaunti

30 RP Government Boys Senior Secondary School, Rithala

31 Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Kanjhanwal

32 Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Sector – 7, Rohini

33 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Keshav Puram

34 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, O-Block, Mangolpuri

35 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, H-Block, Mangolpuri

36 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, C-Block, Sultanpuri

37 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, H-Block, Sultanpuri

38 Shaheed Captain Sanjeev Dahiya Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Sector – 9, Rohini

39 BN Rastogi Girls Senior Secondary School, Chandni Chowk

District – South & South West

40 Kendriya Vidyalaya, NTPC, Badarpur

41 Kendriya Vidyalaya, Pushp Vihar

42 Rao Manohar Singh Memorial Senior Secondary Public School, Najafgarh

43 Gyan Sagar Public School, Palam

44 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, New Friends Colony

45 Government Boys Senior Secondary School, Tughlakabad

46 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Jangpura

47 Government Co-Ed Senior Secondary School, Lajpat Nagar

48 Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School, INA Colony

49 Dr KBRH Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School, Noor Nagar, Okhla

50 Government Girls Senior Secondary School, Dr Ambedkar Nagar

51 Government Girls Senior Secondary School, Chattarpur

52 Navjeevan Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, STC/MMTC Colony, Begumpur

53 Government Girls Senior Secondary School, Noor Nagar Okhla

54 Bachan Prashad Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Deoli

55 Government Girls Senior Secondary School, Laxmi Bai Nagar

56 Government Boys Senior Secondary School, Chhawla

57 Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Pandwala Kalan

58 Government Boys Senior Secondary School, Ujwa

59 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School No 1, Sagarpur

60 Government Boys Senior Secondary School, Khaira

61. Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Najafgarh

62 Government Girls Senior Secondary School, Bijwasan Bharthal

63 Government Girls Senior Secondary School No. 3, Najafgarh

64 DAV Senior Secondary School, Jangpura

65. SS Khalsa Senior Secondary School, Lajpat Nagar

66 Red Roses Public School, Saket

67 Ramjas School, RK Puram

68 St Mary's School, Safdarjung Enclave

69 DPS RK Puram

District –West

70 Kendriya Vidyalaya, Tagore Garden

71 Hans Raj Model School, Punjabi Bagh

72 Government Boys Senior Secondary School No 1, Madipur

73 Government Boys Senior Secondary School, Ranjit Nagar

74 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School, Hari Nagar

75 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School No 1, Chand Nagar

76 Government Girls Senior Secondary School No 1, Subhash Nagar

77 Government Sarvodaya Girls Senior Secondary School No 2, Madipur

78 Government Boys Senior Secondary School, Nangloi

79 Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, New Multan Nagar

80 Government Sarvodaya Co-Ed Senior Secondary School, Paschim Vihar

81 Government Sarvodaya Boys Senior Secondary School, Vikas Puri

82 Kerala School, Vikas Puri

83 Adarsh Public School, Vikas Puri

List of Private Unaided Schools

1. Delhi Public School, R K Puram
2. Ramjas School, R K Puram
3. St Mary's Schools, Safdarjung Enclave
4. Red Roses Public School, Saket
5. Adarsh Public School, Vikaspuri
6. Hansraj Model School, Punjabi Bagh
7. Gyan Sagar Public School, Palam Colony
8. Rao Mohar Singh Memorial Sr Secondary School, Najafgarh
9. St Angels' School, Rohini
10. Kala Niketan Sr Secondary Bal Vidyalaya, Durgapur Extension
11. Mother Teresa Public School, Preet Vihar
12. Chegule Public School, Karol Bagh

List of Private Aided Schools

1. D A V Sr Secondary School, Nehru Gali, Gandhi Nagar
2. B N. Rastogi Girls Sr Sec , Bhagirath Palace, Chandni Chowk
3. D A V Sr Secondary School, Jangpura, Bhogal
4. S S Khalsa Sr Secondary School, Lajpat Nagar
5. Kerala School, M-Block, Vikaspuri

QUESTIONNAIRES

Department of Educational Measurement and Evaluation
National Council of Educational Research and Training

School Information Questionnaire

Instructions:

Two types of brackets, small ( ) big [ ] and box(es) ☐ are given against the questions in the questionnaire Follow the instructions, which are given below

- In case of small brackets ( ) you have to select one code written inside the bracket which is most applicable in your case, and ***write its number in the box given against the question***
- In case of big brackets [ ], choose the code written in the bracket applicable to you and ***put a cross mark on the code within the bracket***
- In case of box(es) ☐ , one has to write the code as explained above or provide the information asked in the question Write single digit in one box If the boxes are more than your requirement, start filling them from unit place (fill right side box(es) first and put zeroes in the remaining blank box(es))

Code ☐☐☐

(To be filled by NCERT)

1 Name of the School ________________________

2 Postal Address ________________________

____

____

3 (a) Area in which the school is located

Rural (1)
Urban (2) ☐

(b) If the school is in urban area, is it located in slum area?

Yes (1)
No (2) ☐

4 Category of School

Secondary (1)
Higher Secondary (2) ☐

5 Management of School

Government	(1)	☐
Local body	(2)	
Private aided	(3)	
Private unaided	(4)	

6 Type of School

Boys	(1)	☐
Girls	(2)	
Co-educational	(3)	

7 Classes taught in the School

From class ☐☐ to class ☐☐☐

8 Total no of Children in the School from Class VI to XII ☐☐☐☐

9 (a) No of Children in Class IX

1 Boys ☐☐☐

2 Girls ☐☐☐

(b) No of children in Class X

i) Boys ☐☐

ii) Girls ☐☐

10 (a) Total No of Sections in the school from Classes VI to XII ☐☐

(b) How many sections are there for Class IX? ☐☐

(c) How many sections are there for Class X? ☐☐

11 No of shifts in the School ☐

12 Duration of school day

		Hours	Minutes
i)	Summer	☐	☐☐
ii)	Winter	☐	☐☐

13 Medium of Instruction ☐

- Hindi (1)
- English (2)
- Both Hindi & English (3)
- Urdu (4)

Physical Facilities:

14 What is the major portion of the school building like ☐

- (i) Pucca (3)
- (ii) Partly Pucca (2)
- (iii) Tent (1)

15 (a) Is there a separate room for the staff? ☐

- Yes (1)
- No (2)

(b) Number of classrooms ☐☐

(c) Number of rooms used for

1 Laboratories ☐☐

2 Games ☐☐

3 Music ☐☐

4 Work experience room ☐☐

5 Audio Visual room ☐☐

6 Arts and Crafts room (drawing room) ☐☐

7 Computer room

8 Home Science

9 Language Lab

10 Maths Lab

16 (a) Does the school have laboratory facilities for teaching science at the secondary stage?

Yes (1)
No (2)

(b) If yes, is it adequate?

Yes (1)
No (2)

17 Is drinking water available to students within school premises?

Yes (1)

No (2)

18 Does the school have toilets?

Yes (1)

No (2)

19 How many of the following work in the school?

		Most	Some	Few
(i)	Fans	[3]	[2]	[1]
(ii)	Bulbs/Tubes	[3]	[2]	[1]

20 What is the status of play-ground facility in school?

No Facility (1)
Shared with other school (2)
Exclusively for school (3)

21 Do the classrooms have blackboards in usable condition?

Most of them (3)
Some (2)
Few (1)

☐

22 What kind of seating arrangement is available for students?

1	Single desks	Yes [1]	No [2]
2	Duel desks	Yes [1]	No [2]
3	Benches for more than two students	Yes [1]	No [2]
4	Durry/Tat patty	Yes [1]	No [2]

23 What is your assessment regarding the following

		Poor	Satisfactory	Good	Very Good
i	Staff room for the school teachers	[1]	[2]	[3]	[4]
ii	Maintenance of the school building	[1]	[2]	[3]	[4]
iii	Facilities available for different work experience activities	[1]	[2]	[3]	[4]
iv	Arrangement of drinking water	[1]	[2]	[3]	[4]
v	Arrangement of toilets for boys	[1]	[2]	[3]	[4]
vi	Arrangement of toilets for girls	[1]	[2]	[3]	[4]
vii	Arrangement of toilets for teachers	[1]	[2]	[3]	[4]
viii	Electric installations in the Schools				
	a Fans	[1]	[2]	[3]	[4]
	b bulbs/ tube lights	[1]	[2]	[3]	[4]
ix	General Science Lab	[1]	[2]	[3]	[4]
x	School Library	[1]	[2]	[3]	[4]

Academic Facilities

24 Are teachers available for the following subjects in Class X?

(i)	First Language	Yes [1]	No [2]
(ii)	Second Language	Yes [1]	No [2]
(iii)	Social Sciences	Yes [1]	No [2]
(iv)	Science	Yes [1]	No [2]
(v)	Mathematics	Yes [1]	No [2]

25 For how long did you appoint part-time teachers in the following subjects last year for Class X?

		More than 6 months	3-6 months	Less than 3 months
(i)	First Language	[3]	[2]	[1]
(ii)	Second Language	[3]	[2]	[1]
(iii)	Social Sciences	[3]	[2]	[1]
(iv)	Science	[3]	[2]	[1]
(v)	Mathematics	[3]	[2]	[1]

26 No of teachers for secondary classes i e IX & X?

1 Male [ ][ ]

2 Female [ ][ ]

27 Number of teachers teaching classes IX & X?

(i) Trained graduate [ ][ ]

(ii) Trained post-graduate [ ][ ]

(iii) Untrained graduate [ ][ ]

(iv) Untrained Postgraduate [ ][ ]

28 Number of secondary teachers who have attended refresher/ training course (of not less than [ ][ ]

29 No of trained teachers exclusively for

(i) Physical Education ☐

(ii) Yoga ☐

(iii) Art Education ☐

(iv) Music ☐

(v) Work Experience ☐

30 (a) Does the school have a full time trained librarian?

Yes (1)
No (2) ☐

(b) Do the secondary students have the facility of getting the books issued?

Yes (1)
No (2) ☐

(c) What kind of books does the library have?

(i)	Text books	Yes [1]	No [2]
(ii)	Reference books	Yes [1]	No [2]
(iii)	General books	Yes [1]	No [2]
(iv)	Encyclopaedias	Yes [1]	No [2]
(v)	Magazines	Yes [1]	No [2]

31 Does the school make provision for library period in the school time table? Yes [1] No [2]

32 What percentage of secondary students get the books issued?

(i)	More than 70%	(3)
(ii)	40% to 70%	(2)
(iii)	Less than 40%	(1)

☐

33 (a) Does the school provide educational/ vocational guidance and counselling to students?

Yes (1)
No (2)

(b) If yes, does the school have a trained counsellor?

Yes (1)
No (2)

(c) What percentage of secondary students avail of counselling service?

(i) More than 70% (3)
(ii) 40% to 70% (2)
(iii) Less than 40% (1)

34 (a) Does the school provide computer literacy at the

1 Upper Primary Stage Yes [1] No [2]
2 Secondary Stage Yes [1] No [2]

(b) If yes, how many computers does the school have?

(c) How many children normally work at one computer at a time?

(d) What percentage of students use computers?

(i) 70% and above (3)
(ii) 40% - 70% (2)
(iii) Less than 40% (1)

(e) What kind of teachers provide computer literacy?

(i) Qualified computer trained teachers (full time regular)/contractual teachers (3)
(ii) Subject teachers trained in computers (2)
(iii) No teachers (1)

Development of Co-scholastic attributes

35 What percentage of students perform in the celebration/organization of the following days?

(i) Independence Day

(ii) Republic Day

(iii) Sports Day

(iv) Gandhi Jayanti

(v) Annual Day

(vi) Any other (Please mention)

36 Which of the following activities are organized by the school and what perentage of students participate?

(i) Debate

(ii) Elocution

(iii) Community Singing

(iv) Recitation

(v) Skits/plays

(vi) Quiz Competition

(vii) Dance/drama

(viii) Science Exhibition

(ix) Art Classes

(x) Music Classes

(xi) Literary Club [ ][ ]

(xii) Any other
(please specify) [ ][ ]

37 What do you do to motivate students to participate in various activities?

i	Certificate is awarded	Yes [1]	No [2]
ii	Prizes are given	Yes [1]	No [2]
iii	Participation is recorded in the report card	Yes [1]	No [2]

38 Which sports and games are organized by the school and what percentage of students participate?

(i) Cricket [ ][ ]

(ii) Football [ ][ ]

(iii) Hockey [ ][ ]

(iv) Badminton [ ][ ]

(v) Table Tennis [ ][ ]

(vi) Volley Ball [ ][ ]

(vii) Basket Ball [ ][ ]

(viii) Hand Ball [ ][ ]

(ix) Swimming [ ][ ]

(x) Racing [ ][ ]

(xi) Kho-Kho [ ][ ]

(xii) Athletics [ ][ ]

(xiii) Judo [ ][ ]

(xiv) Any other (pl specify) [ ][ ]

39 In which inter-school competitions did the school participate? (Pl mention the no of students sent and the prizes won)

	Name of the Event	No. of Students Sent	Prizes Won
1	Population Education	______	______
2	Pulse Polio	______	______
3	Earth Day	______	______
4	World Food Day	______	______
5	World Habitat Day	______	______
6	Tree Plantation	______	______
7	Human Rights Day	______	______
8	UN Day	______	______
9	Literacy Day	______	______
10	Hindi Divas	______	______
11	Debate	______	______
12	Music	______	______
13	Dance	______	______
14	Drawing & Painting	______	______
15	Community Singing	______	______
16	Drama/Skit/Play	______	______
17	Science Quiz	______	______
18	Science Exhibition	______	______
19	Elocution	______	______
20	Youth Parliament	______	______
21	World AIDS Day	______	______

Scholarships and Academic Achievement

40 (a) Does the school reward academic achievement of students? Yes [1] No [2]

(b) How do you do it?

(i) Prizes for Ist, IInd, IIIrd Yes [1] No [2]

(ii) Scholarship for the top achievers Yes [1] No [2]

(iii) Any other form of appreciation (Please Specify)

(a) Certificate Yes [1] No [2]

(b) Cash Incentive Yes [1] No [2]

(c) Fees Waiver Yes [1] No [2]

(d) Scholar badge Yes [1] No [2]

41 (a) How many state level scholarships did the school bag last year?

(i) at the end of Class V - Junior Open Merit [ ][ ]

(ii) at the end of Class VIII - Senior Open Merit [ ][ ]

(iii) at the end of Class IX - JSTS [ ][ ]

(iv) at the end of Class X - NTS [ ][ ]

(b) How many students were selected for Indira Puruskar (meant for only Govt Schools)

Class X [ ][ ]

Class XI [ ][ ]

42 How many national scholarships did the school bag at Class X level?

(i) National Talent Scholarship [ ][ ]

(ii) Kishore Vaigyanic Protsahan Yojna [ ][ ]

(iii) Mathematics Olympiad [ ][ ]

[ ][ ]

(iv) Science Olympiad

(v) Any Other (Please specify)

43 How many students got the following scores in the Class X examination in 2003?

(i) More than 80%

(ii) 60%-80%

(iii) 40%-60%

(iv) 33%-40%

(v) Below 33%

44 Pass percentage in each subject

1st Language

2nd Language

Mathematics

Science

Social Science

45 Over all pass percentage

Evaluation Practices:

46 How many terms are there in a session?

47 (a) How many class/unit/monthly tests do you conduct in one session at upper primary stage?

(b) Which of the following examinations/tests are conducted in the school in a session (Please tick the relevant ones and mention the **weightage** given to them at upper primary stage write 00 for no weightage)

(i) Monthly Tests/Unit Tests [ ][ ]

(ii) Quarterly [ ][ ]

(iii) Half yearly [ ][ ]

(iv) Annually [ ][ ]

48 Normally how many tests in a subject do you conduct in one session in class IX?

Class Tests [ ][ ]

Unit Tests [ ][ ]

Monthly Tests [ ][ ]

49 Do you get the question papers for annual examination from the Delhi Directorate for

a Class IX annual examination
Yes (1)
No (2) [ ]

b Pre board Class X
Yes (1)
No (2) [ ]

50 What different tests and examinations does the school conduct for Class X before the public examination?
(Please tick the applicable)

(i)	Monthly	Yes [1]	No [2]
(ii)	Quarterly	Yes [1]	No [2]
(iii)	Half yearly	Yes [1]	No [2]
(iv)	Pre board	Yes [1]	No [2]

51 Which of the following social personal qualities are developed on priority basis in your school? Give any five in order of priority Write Nos from 1 to 5, one being the top priority

(i) Discipline

(ii) Regularity and Punctuality

(iii) Habits of cleanliness

(iv) Sense of Responsibility

(v) Initiative

(vi) Cooperation

(vii) Civic Sense

(viii) Industriousness

(ix) Spirit of Social Service

(x) Patriotism

(xi) Respect for elders

(xii) Truth and honesty

(xiii) Love and non-violence

(xiv) Equality

52 (a) Are these qualities evaluated Yes [1] No [2]

(b) Do you show them in the report card?

Yes (1)
No (2)

53 Which of the following values are developed on priority basis in your school? Give any three in order of priority Write Nos 1 to 3, one being the top priority

i) Truth

ii) Righteous Conduct

iii) Peace

iv) Love

v) Non-violence

54 Do you evaluate the development of values?

Yes (1)
No (2)

55 Do you show it in the report card?

Yes (1)
No (2)

Diagnosis and Remediation

56 (a) Do you use the classroom tests for diagnosing the weakness of students? Yes [1] No [2]

(b) How do you provide remedial instruction?

		Very Often	Occasionally	Rarely
(i)	Solve the difficulties of individual student separately	[3]	[2]	[1]
(ii)	Discuss in the class common problems	[3]	[2]	[1]
(iii)	Organize extra classes for weak students	[3]	[2]	[1]
(iv)	Report to the parents	[3]	[2]	[1]
(v)	Any other (please specify)	[3]	[2]	[1]

57 What does the school expect from students in Class X?

____

____

____

____

58 (a) Do you express your expectations to

Teachers	Yes [1]	No [2]
Students	Yes [1]	No [2]

(b) What action do you take to realize your expectations?

		Very Often	Occasionally	Rarely
(i)	Hold Staff Meeting	[3]	[2]	[1]
(ii)	Ask the teachers to take extra classes	[3]	[2]	[1]
(iii)	Invite guest teachers to teach certain topics	[3]	[2]	[1]
(iv)	Organize short refresher programmes for teachers	[3]	[2]	[1]
(v)	Take review meeting of the teachers	[3]	[2]	[1]
(vi)	Periodical meetings to review the progress of students	[3]	[2]	[1]
(vii)	Motivate the students in assembly	[3]	[2]	[1]
(viii)	Visit each section of Class X and inspire the children to do their best	[3]	[2]	[1]
(ix)	Invite parents for a parent teacher meeting	[3]	[2]	[1]

(x) Any other (please specify)

1 ____________________

2 ____________________

3 ____________________

Community Participation

59 Do you get community participation in the educational process in your school? Yes [1] No [2]

If yes, in what way?

(i)	In the absence of teachers, community maintain volunteers to teach	Yes [1]	No [2]
(ii)	The community helps in keeping the school premises and surroundings clean and green	Yes [1]	No [2]
(iii)	The PTA meets regularly and offer suggestions for improving	Yes [1]	No [2]

(iv)	Community provides facilities in the school	Yes [1]	No [2]
(v)	Does the community help in health check-up of children	Yes [1]	No [2]
(vi)	Does the PTA mobilize additional resources for whatever school needs	Yes [1]	No [2]
(vii)	Any other (Please specify)	Yes [1]	No [2]

60 Do you get support from School Management Committee/Vidyalaya Kalyan Samiti? Yes [1] No [2]

If yes, in what matters?

- Financial support for school Yes [1] No [2]
- Organizing staff development programmes Yes [1] No [2]
- Giving scholarships to meritorious students Yes [1] No [2]
- Any other

61 How do you rate your school in terms of infrastructure?

Excellent	Very Good	Good	Average	Poor
[5]	[4]	[3]	[2]	[1]

Department of Educational Measurement and Evaluation
National Council of Educational Research and Training

Teacher Questionnaire

Instructions:

Two types of brackets, small ( ), big [ ] and box(es) ☐ are given against the questions in the questionnaire. Follow the instructions, which are given below

- In case of small brackets ( ), you have to select one code written inside the bracket, which is most applicable in your case, and ***write its number in the box given against the question***

- In case of big brackets [ ], choose the code written in the bracket applicable to you and ***put a cross mark on the code within the bracket***

- In case of box(es) ☐, one has to write the code as explained above or provide the information asked in the question. Write single digit in one box. If the boxes are more than your requirement, start filling them from unit place (fill right side box(es) first and put zeroes in the remaining blank box(es))

Code

1. Name of the School ______________________ ☐☐☐ (To be filled by NCERT)

2. Name of the teacher (optional)______________________ ☐☐ (To be filled by NCERT)

3. Gender

    Male (1)
    Female (2) ☐

4. Category

    General (1)
    SC (2)
    ST (3)
    OBC (4) ☐

5. Which subject do you teach at Class X?

1st Language (specify)_____	(1)	☐
2nd Language (specify)_____	(2)	
Social Science	(3)	
Science	(4)	
Maths	(5)	

6. Your Highest Educational Qualification

Graduate	(1)	☐
Post Graduate	(2)	
M Phil	(3)	
Ph D	(4)	

7. Your Professional Qualification

B Ed	(1)	☐
M Ed	(2)	

8. Employment Status

Permanent	(1)	☐
Temporary	(2)	
Adhoc	(3)	
Part-time	(4)	

9. Number of in-service training programmes attended during last 3 years (Write only the number) ☐☐

10. What other duties do you perform besides teaching?

(i)	Ministerial Work	Yes [1]	No [2]
(ii)	Pulse polio duties	Yes [1]	No [2]
(iii)	Census duties	Yes [1]	No [2]
(iv)	Election duties	Yes [1]	No [2]
(v)	Tree plantation duties	Yes [1]	No [2]
(vi)	Any other ---------- (please specify)	Yes [1]	No [2]

11 (a) Have you ever submitted a paper in the competition for innovative practices Yes [1] No [2]

(b) If yes, did you get an award Yes [1] No [2]

12 (a) Have you published articles in

i	Educational Journals	Yes [1]	No [2]
ii	Magazines	Yes [1]	No [2]
iii	Newspapers	Yes [1]	No [2]

(b) If yes, give number [ ][ ]

13 Have you written a book in your subject? Yes [1] No [2]

14 Have you ever acted as a resource person in any training programme? Yes [1] No [2]

15 Availability of instructional facilities in your school for your subject

	Relevance (Write 1 if relevant) (Write 2 if not relevant)	**Availability** (Write 1 if available) (Write 2 if not available)
Teacher's Guide	[ ]	[ ]
Dictionary	[ ]	[ ]
Books other than text books	[ ]	[ ]
Encyclopedias	[ ]	[ ]
Maps	[ ]	[ ]
Globes	[ ]	[ ]
Charts	[ ]	[ ]
Science Laboratory	[ ]	[ ]
Any other (Pl specify)		
1 ______________	[ ]	[ ]
2 ______________	[ ]	[ ]

16. **Please give your feelings about the following statements**

16.1 ***Leadership***

		Always	Sometimes	Rarely
1	The principal has a lot of new ideas about the functioning of the school	[3]	[2]	[1]
2	He discusses his ideas with the staff	[3]	[2]	[1]
3	He asks for their participation in the implementation of his ideas	[3]	[2]	[1]
*4	He forces the teachers to do as he says	[3]	[2]	[1]
5	The principal encourages the teachers to attend in-service programmes	[3]	[2]	[1]
*6	He works without a plan	[3]	[2]	[1]
7	He lets the staff members know what is expected of them	[3]	[2]	[1]
8	He maintains definite standards of performance	[3]	[2]	[1]
9	He is friendly and accessible	[3]	[2]	[1]
10	He makes staff members feel at ease when talking with them	[3]	[2]	[1]
*11	He keeps to himself	[3]	[2]	[1]
12	He finds time to listen to staff members	[3]	[2]	[1]
13	He gets staff approval on important matters before going ahead	[3]	[2]	[1]
14	He looks out for the personal welfare of individual staff member .	[3]	[2]	[1]
*15	He is slow to accept new ideas	[3]	[2]	[1]

16	The principal involves the teachers in decision making	[3]	[2]	[1]
*17	The principal favours some teachers more than others	[3]	[2]	[1]
*18	The teachers are reluctant to discuss things with the principal	[3]	[2]	[1]
19	The teachers are not afraid of the principal	[3]	[2]	[1]
20	The principal supervises classroom teaching periodically	[3]	[2]	[1]
*21	A number of classes remain without a teacher during the day	[3]	[2]	[1]

17. *Organisational Climate*

17.1 Congenial Climate

		Strongly Agree	Agree	Disagree
1	The teachers in this school are quiet friendly to each other	[3]	[2]	[1]
2	Teachers share their problems with each other	[3]	[2]	[1]
3	Teachers are jovial in the staff room	[3]	[2]	[1]
4	Teachers share their responsibilities with each other, willingly	[3]	[2]	[1]
5	Teachers share their knowledge, information and materials willingly	[3]	[2]	[1]
6	Teachers work together for preparing question papers, report cards etc	[3]	[2]	[1]

17.2	**Morale of Teachers**	Strongly Agree	Agree	Disagree
1	Teachers have confidence about their utility	[3]	[2]	[1]
2	Teachers are always enthusiastic about their work	[3]	[2]	[1]
3	In faculty meetings there is a feeling of "Let's get things done"	[3]	[2]	[1]
*4	Teachers think that teaching is a burden	[3]	[2]	[1]
5	Teachers are ready to accept challenges and new responsibilities	[3]	[2]	[1]
6	Teachers have a feeling that they are capable of improving students' performance	[3]	[2]	[1]

18. ***Teachers Perception and Attitude towards Students***

		Strongly Agree	Agree	Disagree
*1	We do not expect much from our students regarding their academic performance	[3]	[2]	[1]
2	We do not expect much from our students in co-curricular activities	[3]	[2]	[1]
3	The children have little motivation to study	[3]	[2]	[1]
*4	The children in my school cannot be motivated to study	[3]	[2]	[1]
*5	Children are not taught well in lower classes	[3]	[2]	[1]
6	The children in this school can get very good marks if we teachers work hard with them	[3]	[2]	[1]

19. ***Teaching Strategies***

*1	I do not have to study beforehand to teach Class IX and X	[3] Strongly Agree	[2] Agree	[1] Disagree
2	I plan out my day and teach accordingly	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
3	I tell the children before hand which lesson I would teach next day and ask them to come prepared	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
4	I give homework to children and check it regularly	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
5	I keep limited content for one period and try to teach it	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
6	I make sure that all children understand what I teach	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
7	I test their understanding from time to time	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
8	I encourage children to ask questions	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
9	I try to solve their difficulties	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
10	I appreciate the children who do well in studies	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
11	I take those children to task whose performance is not upto the mark	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
12	I interact with the parents of students about their studies.	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
13	I call the parents when a student creates problems	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do
14	I give class tests/unit tests	[3] I always do	[2] I sometimes do	[1] I rarely do

15. I diagnose the weaknesses of students on the basis of tests/ observation — [3] I always do | [2] I sometimes do | [1] I rarely do

16. I provide remedial instruction to low achievers — [3] I always do | [2] I sometimes do | [1] I rarely do

20. Development of Co-scholastic Areas

Which of the following social personal qualities are developed on priority basis in your school?

Give any five in order of priority. Write Nos. from 1 to 5, one being the top priority.

20.1 Social Personal Qualities

(i) Discipline [ ]

(ii) Regularity and punctuality [ ]

(iii) Habits of cleanliness [ ]

(iv) Sense of responsibility [ ]

(v) Initiative [ ]

(vi) Cooperation [ ]

(vii) Civic sense [ ]

(viii) Industriousness [ ]

(ix) Spirit of Social Service [ ]

(x) Patriotism [ ]

(xi) Respect for elders [ ]

(xii) Truth and Honesty [ ]

(xiii) Love and Non-violence [ ]

(xiv) Equality [ ]

20.2. Interests

Which of the following interests do you try to develop among students?

(i) Literary interests like

(a)	reading, writing	Yes [1]	No [2]
(b)	debate etc	Yes [1]	No [2]

(ii) Artistic interests like

(a)	drawing and painting	Yes [1]	No [2]
(b)	music, dance	Yes [1]	No [2]
(c)	drama	Yes [1]	No [2]

(iii) Scientific interests like

(a)	making charts, models	Yes [1]	No [2]
(b)	keeping herbarium, acquarium etc	Yes [1]	No [2]
(c)	visiting science museum	Yes [1]	No [2]

(iv) Physical activities like

(a)	games, sports	Yes [1]	No [2]
(b)	gardening	Yes [1]	No [2]
(c)	yoga	Yes [1]	No [2]

21 I try to develop these interests among children by –

		Always	Sometimes	Rarely
1	talking to them from time to time to motivate them	[3]	[2]	[1]
2	persuading them to participate	[3]	[2]	[1]
3	giving them information about various competitions or activities	[3]	[2]	[1]
4	guiding them to find materials for literary activities	[3]	[2]	[1]

5	giving them points for preparation for literary activities	[3]	[2]	[1]
6	organizing different games and sports	[3]	[2]	[1]
7	organising cultural activities	[3]	[2]	[1]
8	organizing various competitions	[3]	[2]	[1]
9	guiding them for preparing for scientific activities	[3]	[2]	[1]

22. ***Professional Development of Teacher***

		Always	Sometimes	Rarely
1	I look forward to attending in-service programmes/refresher courses in my subject area	[3]	[2]	[1]
2	I visit the library to update my knowledge	[3]	[2]	[1]
3	I ask the students to visit the library	[3]	[2]	[1]
4	I use internet to download information for my subject	[3]	[2]	[1]

5 I subscribe to

1	Newspaper	Yes [1]	No [2]
2	Educational Journals	Yes [1]	No [2]
3	Magazines of General Interest	Yes [1]	No [2]

23 Please indicate how much help you get from the following in your professional development
(Use the following code written in the bracket)

Always (3) Sometimes (2) Never (1)

		Code
1	Head of the School	[ ]
2	Other teachers of the school	[ ]
3	Education Officer of the Zone	[ ]
4	SCERT	[ ]
5	Science Branch	[ ]
6	IASE Jamia	[ ]
7	IASE Delhi University	[ ]
8	CBSE	[ ]
9	Any other ----------- (please specify)	[ ]

Department of Educational Measurement and Evaluation
National Council of Educational Research and Training

Student Questionnaire

Instructions:

Two types of brackets, small ( ) big [ ] and box(es) ☐ are given against the questions in the questionnaire Follow the instructions, which are given below

- In case of small brackets ( ), you have to select one code written inside the bracket which is most applicable in your case, and ***write its number in the box given against the question.***

- In case of big brackets [ ], choose the code written in the bracket applicable to you and ***put a cross mark on the code within the bracket***

- In case of box(es) ☐ , one has to write the code as explained above or provide the information asked in the question Write single digit in one box If the boxes are more than your requirement, start filling them from unit place (fill right side box(es) first and put zeroes in the remaining blank box(es))

Code

1	Name of the School	____________________	☐☐☐ (To be filled by NCERT)
2	Name of the Student	____________________	☐☐ (To be filled by NCERT)
3	Residential Address	____________________ ____________________	
4	Boy or girl	Boy (1) Girl (2)	☐
5	In Class X were you in the same school or other school?	Same School (1) Other School (2)	☐
6 (a)	Father/mother/guardian's name	____________________	
(b)	What is your father/mother/guardian's occupation (see the list given at the end and select the relevant code from it)		☐

7 To which category do you belong?

General (1)
SC (2)
ST (3)
OBC (4)

[ ]

8 Which language do you speak at home?

Hindi	Yes [1]	No [2]
English	Yes [1]	No [2]
Punjabi	Yes [1]	No [2]
Any Other (Specify)	Yes [1]	No [2]

____

Home Background, Socio-Economic Status

9 Education of your parents
(Write the code of highest qualification of your parents which are given below)

Father/Guardian [ ]

Mother [ ]

Qualification	**Code**
Not Literate	(1)
Primary	(2)
Up to Class VIII	(3)
Up to Class X	(4)
Up to Class XII	(5)
Upto B A /B Sc / B Com	(6)
Upto M A /M Sc / M Com	(7)
Engineering, Medicine and any other professional qualification	(8)

10 Monthly Income of the Family [ ]

(Write the code of income group to which you belong)

Income Group	Code
Below Rs 5,000/-	(1)
Rs 5001/- to 10,000/-	(2)
Rs 10,001/- to 15,000/-	(3)
Rs 15001/- to 25,000/-	(4)
Rs 25,001/- to 50,000/-	(5)
More than Rs 50,000/-	(6)

11 How many brothers and sisters do you have? [ ]
(write the code in the box)

No. of brothers and sisters	Code
None	(1)
1-2	(2)
3-4	(3)
More than four	(4)

12 Do you have the following at home?

1	Fixed-line telephone	Yes [1]	No [2]
2	Cell Phone	Yes [1]	No [2]
3	Car	Yes [1]	No [2]
4	Scooter/Motorcycle	Yes [1]	No [2]
5	Cycle	Yes [1]	No [2]

13 How many rooms are there in your house? [ ][ ]

14 Do you have a separate room for yourself where you can study? [ ]

Yes (1)
No (2)

15 Did you get help in studies from your family members in Class X? [ ]

Always (3)
Sometime (2)
Rarely (1)

16 Did anyone in the house help you with your studies in Class X? If yes, who?

(i)	Father	Yes [1]	No [2]
(ii)	Mother	Yes [1]	No [2]
(iii)	Brother (s)	Yes [1]	No [2]
(iv)	Sister (s)	Yes [1]	No [2]
(v)	Uncle	Yes [1]	No [2]
(vi)	Aunty	Yes [1]	No [2]
(vii)	Any other	Yes [1]	No [2]

17 Did you attend coaching classes in Class X

i)	First language	Yes [1]	No [2]
ii)	Second language	Yes [1]	No [2]
iii)	Social Science	Yes [1]	No [2]
iv)	Science	Yes [1]	No [2]
v)	Mathematics	Yes [1]	No [2]

18 Do you use reference books like dictionaries, books from library, question bank etc

		Always	**Sometimes**	**Rarely**
i)	Language	[3]	[2]	[1]
ii)	Social Science	[3]	[2]	[1]
iii)	Science	[3]	[2]	[1]
iv)	Mathematics	[3]	[2]	[1]

19 Do you help your parents

i) at home, if yes for how many hours? (a) Per day [ ][ ]

(b) Per week [ ][ ]

ii) at their work place, If yes, for how many hours ? (a) Per day [ ][ ]

(b) Per week [ ][ ]

20 Do you come to school regularly ?

Yes, Everyday	(3)	
Sometimes, I take leave	(2)	[ ]
I have to be absent on many days	(1)	

21 Do you get a newspaper in your home?

Not at all	(1)	☐
Weekly	(2)	
Daily	(3)	

22 Do you get some magazines in your home?

Not at all	(1)	☐
Weekly	(2)	
Monthly	(3)	

23 Do you have books in your home apart from your text books?

I have no other books in my house	(1)	
Less than 20 books	(2)	☐
20-50 books	(3)	
50-100 books	(4)	
More than 100 books	(5)	

24 Do you read books other than your text books?

No	(1)	☐
Some	(2)	
Many	(3)	

25 Apart from Sunday, how long do you watch TV everyday?

Not at all	(1)	☐
30 minutes – one hour	(2)	
1-2 hours	(3)	
More than 2 hours	(4)	

26 How long do you spend on Computer/internet?

Not at all	(1)
30 minutes – one hour	(2)
1-2 hours	(3)
More than 2 hours	(4)

27 Upto what level do you want to continue of your education

1 BA/B Sc

2 MA/M Sc

3 Any other ----------
(Please specify)

28 What do you want to be after completing your education?

____

____

29 What was your result in Class X Give marks in the following subjects
(In Hindi Medium Schools Hindi is the first language
In English Medium Schools English is the first Language
Confirm from the teachers)

(i) First Language ______ _ _ _

(ii) Second Language ________ _

(iii) Social Sciences

(iv) Science

(v) Mathematics

(vi) Aggregate (Marks) of all subjects

(vii) Total percentage

30 Apart from school how many hours did you study in Class X?

(i) Daily [ ][ ]

(ii) Weekly [ ][ ]

31 Did you get any scholarship in Classes IX & X?

(i)	From School	Yes [1]	No [2]
(ii)	From State	Yes [1]	No [2]
(iii)	From National Level	Yes [1]	No [2]
(iv)	Any other ________ (Please mention)	Yes [1]	No [2]

32 Have you got any scholarship in Classes VI to VIII?

(i)	From School	Yes [1]	No [2]
(ii)	From State	Yes [1]	No [2]
(iii)	From National Level	Yes [1]	No [2]
(iv)	Any other ________ (Please mention)	Yes [1]	No [2]

33 Have you won any prizes in *(Please tick in or within the relevant box)*

	Classes I-V	**VI-VIII**	**IX-X**	**Total No. of ticks**
(i) Literary Activities				
a Debate	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
b Elocution	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
c Recitation	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
d Quiz	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
e Essay Writing	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
f Poem Writing	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
g Hand Writing	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
h Any other ________	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]

ii) Artistic Activities

a	Dance	☐	☐	☐	☐
b	Drama	☐	☐	☐	☐
c	Music	☐	☐	☐	☐
d	Painting	☐	☐	☐	☐
e	Drawing	☐	☐	☐	☐
f	Sculpture (Clay-Modelling)	☐	☐	☐	☐
g	Any other (i) ______________	☐	☐	☐	☐
	(ii) ______________	☐	☐	☐	☐

(iii) Physical Activities

a	Sports	☐	☐	☐	☐
b	Games	☐	☐	☐	☐
c	Athletics	☐	☐	☐	☐
d	Yoga	☐	☐	☐	☐
e	Any other (i) ______________	☐	☐	☐	☐
	(ii) ______________	☐	☐	☐	☐

(iv) Scientific Activities

a	Model making	☐	☐	☐	☐
b	Science Exhibition	☐	☐	☐	☐
c	Robotics	☐	☐	☐	☐
d	Any other (i) ______________	☐	☐	☐	☐
	(ii) ______________	☐	☐	☐	☐

34	Where did you learn the activity in which you have won the prizes?	Exclusively Outside school	Partly in school Partly outside	Exclusively in school
(i)	**Literary Activities**			
a	Debate	[1]	[2]	[3]
b	Elocution	[1]	[2]	[3]
c	Recitation	[1]	[2]	[3]
d	Quiz	[1]	[2]	[3]
e	Essay Writing	[1]	[2]	[3]
f	Poem Writing	[1]	[2]	[3]
g	Hand Writing	[1]	[2]	[3]
h	Any other	[1]	[2]	[3]
(ii)	**Artistic Activities**			
a	Dance	[1]	[2]	[3]
b	Drama	[1]	[2]	[3]
c	Music	[1]	[2]	[3]
d	Painting	[1]	[2]	[3]
e	Drawing	[1]	[2]	[3]
f	Sculpture (Clay-Modelling)	[1]	[2]	[3]
g	Any other	[1]	[2]	[3]
(iii)	**Physical Activities**			
a	Sports	[1]	[2]	[3]
b	Games	[1]	[2]	[3]
c	Athletics	[1]	[2]	[3]
d	Yoga	[1]	[2]	[3]
e	Any other	[1]	[2]	[3]
(iv)	**Scientific Activities**			
a	Model making	[1]	[2]	[3]
b	Science Exhibition	[1]	[2]	[3]
c	Robotics	[1]	[2]	[3]
d	Any other	[1]	[2]	[3]

35 Did you receive Counseling (personal and Educational) in the school in Class X?

Yes [1]

36 How many times did the school organize sessions for educational guidance when you were in Class X?

Never	(1)	☐
1-2	(2)	
More than 2	(3)	

37 What percentage of time did your teachers of following subject teach you in the class?

		80%-100% times	60%-80% times	Less than 60% times
i	First Language	[3]	[2]	[1]
ii	Second Language	[3]	[2]	[1]
iii	Social Science	[3]	[2]	[1]
iv	Science	[3]	[2]	[1]
v	Mathematics	[3]	[2]	[1]

38 (a) Which subject did you like the best in Classes IX and X?

First Language ____________	(1)	☐
Second Language__________	(2)	
Social Science	(3)	
Science	(4)	
Mathematics	(5)	

(b) Why did you like it?

	Yes	No
▪ The teacher was good	[1]	[2]
▪ The teacher taught very well	[1]	[2]
▪ I am very much interested in it	[1]	[2]
▪ Encouragement for the parents	[1]	[2]
▪ Any other	[1]	[2]

39(A) **Perception About School**		**To a great extent**	**To some extent**	**Not at all**
1	You feel proud to introduce yourself As a member of this school?	[3]	[2]	[1]
2	Do you think the school is an important part of your life?	[3]	[2]	[1]
3	Do you get books to read from the library?	[3]	[2]	[1]
4	Do you get the opportunity to use the labs?	[3]	[2]	[1]
5	Do you feel happy about in general about your school?	[3]	[2]	[1]
6	Do you think that school is helpful for your future development?	[3]	[2]	[1]
*7	Do you feel that the school is too strict?	[3]	[2]	[1]

(B) **Perception About Teachers**		**Most of the Time**	**Sometimes**	**Not at all**
1	Do you understand what teachers teach in the classroom?	[3]	[2]	[1]
*2	Do you fear your teachers?	[3]	[2]	[1]
*3	Are you discouraged to ask questions in the classroom?	[3]	[2]	[1]
4	Do the teachers have sympathetic feelings for you?	[3]	[2]	[1]
5	Do your teachers help you when you have problems in studies?	[3]	[2]	[1]
*6	Do you discuss your personal problems with your teachers?	[3]	[2]	[1]

(C) **Perception About School Climate**		**Strongly Agree**	**Agree**	**Disagree**
1	Students get along with teachers quite well	[3]	[2]	[1]
2	Discipline is good in school	[3]	[2]	[1]
3	Teacher talk to each other nicely	[3]	[2]	[1]
4	The Principal is good to the teachers	[3]	[2]	[1]

*5	Students often disrupt the class	[3]	[2]	[1]
6	Students are afraid of the principal	[3]	[2]	[1]

(D) Classroom Activities		**Always**	**Sometimes**	**Never**
1	Did the teachers cover the syllabus for Class X?	[3]	[2]	[1]
2	Did the teacher get the revision done?	[3]	[2]	[1]
3	Do the teachers give assignments?	[3]	[2]	[1]
4	Did the teachers take extra classes?	[3]	[2]	[1]
5	Do the teachers correct the home assignment?	[3]	[2]	[1]
6	Do the teachers correct class work?	[3]	[2]	[1]
7	Do the teachers discuss the mistakes made by the students in tests or assignments?	[3]	[2]	[1]

40. Over all Impression

How would you rate your school? ☐

Excellent [5] Very Good [4] Good [3] Average [2] Poor [1]

41 Which grade did you get in Class X final in the following areas? Write the code of the grade A,B,CD or E (as given below) in the box given against each

Grade	Code
A	5
B	4
C	3
D	2
E	1

(i) Personal and Social Qualities

Regularity ☐

Punctuality ☐

Discipline ☐

Cleanliness

(ii) **Literary Activities**

a Debate

b Elocution

c Recitation

d Quiz

e Essay Writing

f Poem Writing

g Hand Writing

h Any other ______

(iii) **Artistic Activities**

a Dance

b Drama

c Music

d Painting

e Drawing

f Sculpture (Clay-Modelling)

g Any other (i) ________

(ii) ________

(iv) **Physical Activities**

a Sports

b Games

c Athletics

d Yoga

c Any other (i) ________

(ii) ________

(v) **Scientific Activities**

a Model making

b Science Exhibition

c Robotics

d Any other (i) ________

(ii) ________

List of Occupations

Code No.	Occupation
Professionals	Doctor, Engineer, Teacher, Librarian, Scientist, Author, Accountant, Artist
Administrators (Senior)	Gazetted Officer, Defence Services Officer, Business Executive, Police Officer, Administrative Officer
Businessmen and Traders	Proprietor of small and large Business Houses, Wholesaler, Contractor, Shopkeeper
Agriculturists	Small and Big Farmer
Administrators (Junior)	Salesman, Clerk, Typist, Steno-Typist, Cashier, Conductor, Insurance Agent, Compounder, Nurse, Surveyor
Skilled and semi-skilled workers	Mechanic, Driver, Mason, Plumber, Photographer, Painter, Craftsman, Telephone/Machine Operator, Shoemaker, Potter, Blacksmith, Carpenter, Weaver, Tailor, Dyer
Unskilled Workers	Labourer, Watchman, Gardener, Vendor
Others	Persons unemployed or engaged in any other work

Department of Educational Measurement and Evaluation
National Council of Educational Research and Training

Parent Questionnaire

Instructions:

Big bracket(s) [ ] and box(es) ☐ are given against the questions in the questionnaire. Follow the instructions, which are given below

- In case of big bracket(s) [ ], choose the code written in the bracket applicable to you and ***put a cross mark on the code within the bracket***
- In case of box(es) ☐, one has to provide the information asked in the question. Write single digit in one box. If the boxes are more than your requirement, start filling them from unit place (fill right side box(es) first and put zeroes in the remaining blank box(es))

Code

1 Name of the School ____________________ ☐☐☐ (To be filled by NCERT)

2 Name of the Student ____________________ ☐☐ (To be filled by NCERT)

3 Name of the Father/Mother/Guardian____________________

4 Occupation (see the list given at the end and select the relevant code from it) ☐

*5 Do you receive the report card of your child in time? Yes [1] No [2]

*6 Does your child's school invite you for Parent-Teacher Meeting? Yes [1] No [2]

7 How often do you attend the Parent Teacher Association (PTA) meeting? Always [3] Sometimes [2] Rarely [1]

*8 Do the teachers tell you about the performance of your child in different subjects? Yes [1] No [2]

*9 Do the teachers tell about your child's habits and other personality traits? Yes [1] No [2]

10 Have you ever gone to school on your own to talk to the teachers about your child? Yes [1] No [2]

*11 Are you invited in the school functions? Yes [1] No [2]

12 (a) How far are you satisfied with the overall teaching and learning activities provided in the school?

Fully Satisfied	Satisfied	Not Satisfied
[3]	[2]	[1]

(b) How far do you agree with following? statements?

	Strongly Agree	**Agree**	**Disagree**
(i) Teaching in the school is good	[3]	[2]	[1]
(ii) Teachers are regular and punctual	[3]	[2]	[1]
(iii) Teachers motivate children to perform better in studies	[3]	[2]	[1]
(iv) Children are encouraged to participate in various activities	[3]	[2]	[1]
(v) Children are punished unnecessarily	[3]	[2]	[1]
(vi) Home work is not given	[3]	[2]	[1]
(vii) Home work and Class work are not checked properly	[3]	[2]	[1]
(viii) Cleanliness in school is not upto the mark	[3]	[2]	[1]
(ix) Principal is very strict with children	[3]	[2]	[1]
(x) Principal is not easily accessible	[3]	[2]	[1]
(xi) Principal is kind and considerate	[3]	[2]	[1]
(xii) Teachers are considerate and sympathetic	[3]	[2]	[1]
(xiii) Teachers' work very hard with students	[3]	[2]	[1]
(xiv) Teachers take extra classes	[3]	[2]	[1]
(xv) Teachers compel the students for private tuition	[3]	[2]	[1]
(xvi) The school inculcates moral values among children	[3]	[2]	[1]

13 How would you rate the school of your child?

Excellent	Very Good	Good	Average	Poor
[5]	[4]	[3]	[2]	[1]

List of Occupations

	Code No.	Occupation
1	Professionals	Doctor, Engineer, Teacher, Librarian, Scientist, Author, Accountant Artist
2	Administrators (Senior)	Gazetted Officer, Defence Services Officer Business Executive, Police Officer Administrative Officer
3	Businessmen and Traders	Proprietor of small and large Business Houses, Wholesaler, Contractor, Shopkeeper
4	Agriculturists	Small and Big Farmer
5	Administrators (Junior)	Salesman, Clerk, Typist, Steno-Typist Cashier, Conductor, Insurance Agent Compounder, Nurse, Surveyor
6	Skilled and semi-skilled workers	Mechanic, Driver, Mason, Plumber Photographer, Painter, Craftsman, Telephone/Machine Operator, Shoemaker, Potter, Blacksmith, Carpenter, Weaver, Tailor, Dyer
7	Unskilled Workers	Labourer, Watchman, Gardener, Vendor
8	Others	Persons unemployed or engaged in any other work